एक कहानी कई रंग–**8–1** ः

सूअर राजा जैसी कहानियॉ–1

संकलन और अनुवाद

सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Sooar Raja Jaisi Kahaniyan-1 (Pig King Like Stories-1)
Cover Page picture : Pig
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

सूअर राजा जैसी कहानियाँ–1.. 7

1 सूअर राजा 9

2 शापित सूअर.. 26

3 राजा किन.. 53

4 राजकुमार सूअर.. 68

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने “देश विदेश की लोक कथाऐं” सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियाँ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं। तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है “एक कहानी कई रंग”।

कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में ये कहानियाँ कुछ इसी तरह की कहानियाँ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियाँ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि वैसी सारी कहान्यिाँ हम यहाँ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि वैसी कहानियाँ हम एक जगह इकट्ठा कर दें। इस सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकों की सूची इस पुस्तक के अन्त में दी हुई है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

सूअर राजा जैसी कहानियॉ–1

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियॉ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं। इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम सात पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। इस पुस्तक में कुछ ऐसी कहानियॉ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह दूसरा उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये काम करने वाले को कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।[1]

इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब जैसी कहानियॉ" दी गयीं हैं। इसमें बहुत छोटे बच्चे की करामातों की कथाऐं हैं।[2] इस सीरीज़ की चौथी पुस्तक "छह हंस" जैसी कुछ कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की, साधारणतया सबसे छोटी बहिन, होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियॉ बहिन भाई के प्यार की कहानियॉ हैं।[3]

इस सीरीज़ की पॉचवीं पुस्तक कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जो "तीन सन्तरे" कहानी जैसी हैं।[4] इसी सीरीज़ की छठी पुस्तक में "सफेद राजकुमारी और सात बौने"[5] वाली कहानी जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी हैं। यह कहानी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है। इस सीरीज़ की सातवीं पुस्तक में "सोती हुई सुन्दरी" जैसी कहानियॉ हैं।[6]

इस सीरीज़ की आठवीं पुस्तक "सूअर राजा"[7] में सूअर राजा जैसी कुछ कहानियॉ दी जा रही है। इन कहानियों में राजकुमार शाप के कारण एक जानवर बन जाते हैं और वे उन शापों से तभी आजाद होते हैं जब कोई उनसे शादी करता है। ऐसी कई कहानियॉ हैं। आसानी के लिये इन कहानियों को अभी तीन भागों में बॉटा गया है।

---

1 "One Story Many Colors-1" – "Cat and Rat Like Stories"
2 "One Story Many Colors-3" – "Tom Thumb Like Stories"
3 "One Story Many Colors-4" – "Six Swans Like Stories"
4 "One Story Many Colors-5" – "Three Oranges Like Stories"
5 "One Story Many Colors-6" – " Snow White and the Seven Dwarves Like Stories"
6 "One Story Many Colors-7" – "Sleeping Beauty Like Stories"
7 "One Story Many Colors-8-1" – like "The Pig King-1"

इसके पहले भाग में वे कहानियाँ हैं जिनमें शाप के कारण राजकुमार सूअर बन गये हैं। इसके दूसरे भाग में वे कहानियाँ है जिनमें शाप के कारण राजकुमार या फिर कोई साधारण आदमी सूअर के अलावा कोई दूसरा जानवर बन गया है। इसके तीसरे भाग में वे शेष कहानियाँ हैं जिनमें "कोई" जानवर के अलावा "कुछ और" बन गया है।

तो लो पढ़ो ऐसी कुछ कहानियों का यह पहला संग्रह यहाँ हिन्दी में। इन सब कहानियों में राजकुमार सूअर बन जाते हैं। आशा है कि तुम लोगों को इस सीरीज़ में प्रकाशित की गयी दूसरी पुस्तकों की तरह यह पुस्तक भी बहुत पसन्द आयेगी। इसका दूसरा संग्रह भी हम जल्दी ही प्रकाशित करने जा रहे हैं। उसमें हम वैसी कहानियाँ प्रकाशित करेंगे जिनमें लोग सूअर के अलावा दूसरे जानवर बन गये हैं।

1 सूअर राजा[8]

“सूअर राजा” यूरोप महाद्वीप के इटली देश की एक बहुत ही लोकप्रिय और बहुत ही मशहूर कहानी है। सबसे पहले यह कहानी **1550** में इटली के जिओवानी फ्रान्सैस्को ने अपनी पुस्तक “फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला” में लिखा था। तो लो पढ़ो अब यह लोकप्रिय और मशहूर कहानी यहाँ हिन्दी में।

ओ सुन्दर स्त्रियों अगर इन्सान भगवान को अपने आपको एक जंगली जानवर के बदले एक आदमी के रूप में पैदा होने के लिये हजारों साल तक भी धन्यवाद दे तो वह धन्यवाद उसके लिये बहुत कम है।

इसको साबित करने के लिये एक कहानी दिमाग में आती है जिसमें एक आदमी एक सूअर की तरह पैदा हुआ पर बाद में वह एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बन गया। पर जब तक उसने अपने लोगों पर राज किया तब तक वह सूअर राजा के नाम से ही जाना जाता रहा।

---

[8] The Pig King – a folktale from Italy, Europe. A literary Italian fairy tale written by Giovanni Francesco Straparola in his The Facetious Nights of Straparola (1550). Taken from the Web Site : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=37&tale=1039 under the title : Galeotto, King of Anglia.

This book was the first European book of fairy tales, of two volumes containing 75 stories. it would influence later fairy-tale authors like Charles Perrault and Jacob and Wilhelm Grimm. The 74 original tales are told over 13 nights, five tales are told each night except the eighth night (six tales) and the thirteenth night (thirteen tales). All tales have been told by women.

एक बार की बात है कि ऐंगलिया में गैलिओटो[9] नाम का एक राजा राज करता था। भगवान की दया से वह बहुत अमीर था और उसके पास बहुत सारा खजाना था।

उसकी पत्नी का नाम अरसीलिया[10] था। अरसीलिया हंगरी के राजा मैथियास[11] की बेटी थी और अपने समय की सबसे सुन्दर और गुणवान स्त्री थी।

गैलिओटो खुद भी बहुत अक्लमन्द राजा था और उसके राज्य में किसी को उससे किसी तरह की कोई शिकायत नहीं थी।

हालाँकि उनकी शादी को कई साल हो गये थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था इसलिये दोनों पति पत्नी बहुत दुखी रहते थे।

एक दिन रानी अरसीलिया बागीचे में फूल चुनने गयी कि अचानक वहाँ उसको थकान लगने लगी। उसने वहाँ एक ऐसी जगह देखी जहाँ हरी हरी घास उगी हुई थी। वह वहाँ जा कर बैठ गयी। कुछ तो थके होने की वजह से और कुछ चिड़ियों की मीठी आवाज सुन कर वह वहाँ लेट गयी और सो गयी।

इत्तफाक की बात कि उसी समय जब वह वहाँ सो रही थी वहाँ से तीन परियाँ गुजरीं। यों तो वे आदमियों की जाति को बेकार समझती थीं पर जब उन्होंने वहाँ सोती हुई रानी को देखा तो वे रुक गयीं और उसकी सुन्दरता को देखने लगीं।

---

[9] The King of Anglia – his name was Galeotto

[10] Ersilia – name of the queen of the King Galeotto. She was the daughter of the King of Hungary

[11] Matthias – the King of Hungary (a country in Europe)

फिर तीनों मिल कर सोचने लगीं कि वे कैसे उसकी रक्षा कर सकती हैं और कैसे उसके ऊपर जादू डाल सकती हैं।

जब उन्होंने आपस में एक दूसरे से सलाह कर ली तो एक परी बोली कि वह उसको यह वरदान देती है कि उसको कोई नुकसान न पहुँचा सके। इसके अलावा अगली बार जब यह राजा से मिले तो इसके एक ऐसा बेटा हो जिसकी सुन्दरता का दुनियाँ भर में कोई सानी न हो।

दूसरी परी बोली — "मैं इसको यह ताकत देती हूँ कि इसे कोई नाराज न कर सके। और इसके जो बेटा हो उसके अन्दर इस दुनियाँ के सब तरह के गुण हों।"

और तीसरी परी ने उसको यह वरदान दिया कि "वह सब स्त्रियों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द हो। पर इसके जो बेटा होगा वह एक सूअर की खाल के साथ पैदा होगा। उसके सारे ढंग सूअर जैसे होंगे और वह उस शक्ल में तब तक रहेगा जब तक वह तीन लड़कियों से शादी नहीं कर लेगा।"

इतना कह कर वे तीनों परियाँ वहाँ से चली गयीं। उनके जाने के बाद रानी की आँख खुल गयी। वह वहाँ से उठी और अपने चुने हुए फूल ले कर महल चली गयी।

कुछ समय बाद उस रानी को बच्चे की आशा हो गयी और जब बच्चे के जन्म का समय आया तो वह बच्चा तो किसी आदमी की शक्ल का नहीं बल्कि एक सूअर की शक्ल का ही था।

जब राजा और रानी ने यह सुना तो वे दोनों बहुत दुखी हुए। राजा ने सोचा कि उसकी रानी तो कितनी अच्छी और अक्लमन्द थी सो वह उस सूअर को समुद्र में फिंकवा दे ताकि वह एक सूअर को जन्म देने की शरमिन्दगी से बच जाये पर फिर उसने सोचा कि यह बच्चा रानी का अपना भी तो था तो उसको जैसा भी वह है वैसा ही रहने दिया जाये।

सो उसने उसको बड़े दुख और दया के साथ उठाया और निश्चय किया कि वह उसको एक आदमी की तरह से पालेगा एक जंगली जानवर की तरह से नहीं। इस तरह से वह सूअर राज घराने में एक राजकुमार की तरह से बहुत अच्छी देखभाल में पलने बढ़ने लगा।

अक्सर उसको रानी के पास लाया जाता और उसकी छोटी सी थूथनी और छोटे छोटे पंजों को रानी गोद में दे दिया जाता। रानी अपने माँ जैसे प्यार में डूब कर उसके सख्त बालों वाले शरीर को प्यार से सहलाती, उसको गले लगाती और उसको ऐसे चूमती जैसे वह कोई सूअर न हो कर आदमी हो।

वह सूअर भी उसकी गोद में आ कर अपनी छोटी छोटी पूँछ हिलाता जैसे वह उसके प्यार को पहचान रहा हो और उसको उसका जवाब दे रहा हो कि मैं भी तुमको प्यार करता हूँ।

दिन गुजरने लगे। धीरे धीरे उस सूअर ने बात करना सीख लिया। वह अब बाहर शहर में भी घूमने लगा पर जब भी उसको

कहीं मिट्टी या कीचड़ दिखायी दे जाती तो वह उसमें लोटने से बाज़ नहीं आता था और फिर जब वह घर लौटता तो सारा कीचड़ से भरा रहता।

आ कर वह प्यार में अपने पिता और माता यानी राजा और रानी के कपड़ों से लिपट जाता और उनके सारे सुन्दर कपड़े खराब कर देता। पर क्योंकि वह उनका अपना बेटा था इसलिये वे यह सब सहते रहते थे।

एक दिन वह बाहर से कीचड़ और गन्दगी में लोट कर घर आया तो अपनी माँ की कीमती पोशाक पर आ कर लेट गया और गुर्राती हुई सी आवाज में अपनी माँ से बोला — "माँ मुझे शादी करनी है।"

माँ बोली — "बेवकूफी की बातें मत करो। ऐसी कौन सी लड़की है जो तुमसे शादी करेगी। और फिर ज़रा यह तो सोचो कि कौन कुलीन या नाइट[12] अपनी बेटी को तुम जैसे गन्दे जानवर को देगा।"

पर वह सूअर उसके पीछे ही पड़ा रहा कि उसको किसी तरह की भी एक पत्नी चाहिये। अब रानी को यही समझ में नहीं आ रहा था कि वह इस मामले को कैसे निपटाये तो उसने राजा से सलाह ली कि ऐसी मुसीबत में वह क्या करे।

[12] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity.

राजा ने कहा — “हमारा बेटा शादी करना चाहता है पर हम ऐसी लड़की कहाँ से लायें जो उसको अपना पति स्वीकार कर ले।”

वह सूअर अब रोज अपनी माँ के पास आता और यही कहता — “माँ मुझे शादी करनी है। मैं तुम्हें शान्ति से नहीं रहने दूँगा जब तक तुम मेरी शादी उस लड़की से नहीं करा दोगी जिसे मैंने आज देखा है। वह मुझे बहुत अच्छी लगती है।”

अब हुआ यह कि यह लड़की जिसको राजकुमार सूअर ने देखा था एक गरीब स्त्री की बेटी थी। इस गरीब स्त्री के तीन बेटियाँ थीं और तीनों एक से एक सुन्दर थीं।

सो रानी ने इस गरीब स्त्री और उसकी सबसे बड़ी बेटी को बुलाया और उस स्त्री से कहा — “ओ गरीब स्त्री, तुम तो बहुत गरीब हो और तुम्हारे ऊपर बच्चों का बोझ भी है। अगर जो मैं तुमसे कहती हूँ वह तुम मान लो तो तुम अमीर हो सकती हो।

जैसा कि तुमको मालूम है कि मेरे एक बेटा है जो सूअर की शक्ल में है। मैं उसकी शादी तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी से करना चाहती हूँ।

तुम उसके बारे में यह न सोचो कि तुम अपनी बेटी की शादी किससे कर रही हो बल्कि तुम हमारे यानी राजा और रानी के बारे में सोचो कि तुम उसकी शादी हमारे बेटे से कर रही हो। और हाँ यह याद रखना कि हमारे मरने के बाद हमारा सारा राज्य तुम्हारी बेटी को ही मिलेगा।”

बेटी ने जब रानी की बात सुनी तो वह तो बहुत परेशान हो गयी और शरम से लाल पड़ गयी। वह बोली कि वह किसी भी हाल में रानी की बात नहीं मानेगी। पर उसकी माँ ने जब उसको ज़ोर दे कर समझाया तो फिर उसको मानना ही पड़ा।

एक दिन वह सूअर जब रोज की तरह कीचड़ में लिपटा घर आया तो उसकी माँ ने कहा — "बेटे हमने तुम्हारे लिये तुम्हारी पसन्द की बहू ढूँढ ली है।"

यह कह कर उसने उस लड़की को बुलवाया जो इस समय अपनी शाही पोशाक में सजी बैठी थी और उसे अपने सूअर बेटे को दे दिया। जब उसने उस प्यारी सी सुन्दर सी लड़की को देखा तो वह बहुत खुश हुआ।

वह बदबूदार और कीचड़ में लिपटा हुआ सूअर उस लड़की के चारों तरफ चक्कर काटने लगा। उसने उससे अपनी खुशी और प्यार जताने के लिये उसकी पोशाक पर अपने पंजे भी रखे पर जब लड़की ने देखा कि उसने तो उसकी पोशाक ही गन्दी कर दी तो उसने उसको धक्का दे दिया।

इस पर वह सूअर बोला — "तुमने मुझे धक्का क्यों दिया? क्या ये कपड़े तुम्हारे लिये मैंने खुद ने नहीं बनवाये हैं?"

तो वह लड़की बोली — "नहीं। न तो तुमने और न ही तुम्हारे राज्य के किसी और आदमी ने ऐसा किया।"

और जब रात को सोने का समय आया तो वह लड़की ने सोचा — "मैं इस गन्दे बदबूदार जंगली जानवर से बचने के लिये क्या करूँ। मैं ऐसा करती हूँ कि आज की रात जब वह पहली बार सोने के लिये यहाँ आयेगा तो मैं उसको मार दूँगी।"

सूअर राजकुमार वहीं पास में ही था उसने उसकी यह बात सुन ली पर वह कुछ बोला नहीं। रात को वे दोनों अपने कमरे में चले गये और जा कर अपने बिस्तर पर लेट गये।

अब वह सूअर तो बहुत गन्दा और बदबूदार हो रहा था सो उसकी इस गन्दगी से उसका बिस्तर भी गन्दा हो गया। उसने अपनी पत्नी के कपड़े भी गन्दे कर दिये थे।

बस उस सूअर ने अपनी पत्नी की छाती में अपने तेज़ पंजों से इतना मारा कि वह वहीं मर गयी।

अगली सुबह रानी जब अपनी बहू को देखने के लिये उसके कमरे में गयी तो वह तो यह देख कर बहुत दुखी हो गयी कि उसके बेटे ने तो उसकी बहू को मार डाला है और वह खुद गायब है।

और जब वह शहर से घूम कर वापस घर आया तो रानी ने उससे पूछा कि यह सब क्या हुआ तो उसने बताया कि उसने अपनी पत्नी के साथ वैसा ही किया जैसा कि वह उसके साथ करना चाहती थी।

कुछ दिन बाद फिर उस सूअर ने उसकी छोटी बहिन से शादी करने की इच्छा प्रगट की तो रानी अबकी बार उसकी कोई बात नहीं

सुनना चाहती थी पर वह भी उससे शादी के लिये जिद करता रहा और साथ में उसने अपनी माँ को धमकी भी दी कि अगर उसने उसकी शादी उस दूसरी वाली लड़की से नहीं की तो वह सब कुछ नष्ट कर देगा।

मजबूरन रानी फिर से राजा के पास गयी और उसने फिर से उसको अपनी परेशानी बतायी तो राजा बोला इससे पहले कि वह शहर में कुछ इधर उधर की शरारत करे अच्छा है अगर उसको मरवा दिया जाये।

पर रानी उसको अपने बेटे की तरह से प्यार करती थी और उसकी इन हरकतों के बावजूद उसको अपने से अलग नहीं करना चाहती थी।

सो उसने फिर उस स्त्री को उसकी दूसरी बेटी के साथ महल में बुलवाया और उससे बहुत देर तक बात की। उसने उससे प्रार्थना की कि वह अपनी दूसरी बेटी की शादी उसके बेटे से कर दे।

काफी हील हुज्जत के बाद वह लड़की उस सूअर को अपना पति मानने पर राजी हो गयी। पर उसकी किस्मत भी उसकी बड़ी बहिन से कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं थी क्योंकि दुलहे ने उसको भी उसी रात उसी तरह से मार डाला था जैसे उसने अपनी पहली दुलहिन को मार डाला था और फिर महल से भाग गया था।

जब वह लौट कर घर आया तो फिर से गन्दगी और कीचड़ में लिपटा हुआ था और उसमें से बहुत बदबू आ रही थी। कोई उसके पास तक नहीं जा पा रहा था।

राजा और रानी ने उसको उसके इस तरह के काम के लिये बहुत डाँटा पर उसने उनको फिर यही बताया कि अगर वह उसको नहीं मारता तो वह उसको मार देती।

जैसे पहले हुआ था कुछ दिन बाद सूअर ने अपनी माँ से तीसरी बार शादी की इच्छा प्रगट की कि अबकी बार वह उस स्त्री की तीसरी और सबसे छोटी बेटी से शादी करना चाहता है।

उसकी यह बेटी उसकी दोनों बड़ी बेटियों से ज़्यादा सुन्दर थी।

जब सूअर की माँ ने उससे शादी की बात करने से इनकार कर दिया तो सूअर ने और भी ज़्यादा जिद की कि वह उससे जरूर शादी करेगा। और अगर रानी ने उसकी शादी का इन्तजाम उससे नहीं किया तो वह रानी को भी मार डालेगा।

रानी ने जब उसकी यह बेशरम और गन्दी धमकी सुनी तो उसका तो दिल ही टूट गया और दिमाग ही खराब हो गया पर वह बेचारी क्या करती।

वह इस बात को ले कर बहुत परेशान थी कि उसका बेटा शादी तो करना चाहता था पर वह उन सबको मार देता था जिनसे वह शादी करता था। इस वजह से वह किस मुँह से उस स्त्री से उसकी तीसरी बेटी के लिये बात करे।

पर फिर रानी को उस स्त्री को उसकी तीसरी बेटी से शादी की बात करने के लिये बुलाना ही पड़ा।

उस स्त्री की इस तीसरी बेटी का नाम था मल्डीना[13]। रानी ने उससे बड़े प्यार से कहा — "बेटी मल्डीना, अगर तुम मेरे बेटे को अपना पति स्वीकार कर लोगी तो मैं बहुत खुश होऊँगी।

तुम उसकी तरफ मत देखो कि तुम एक सूअर से शादी कर रही हो बल्कि हमारी यानी हम राजा और रानी की तरफ देखो कि तुम हमारे बेटे से शादी कर रही हो।

फिर अगर तुम थोड़ा धीरज और अक्ल से काम लोगी तो तुम दुनियाँ की सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत लड़की होगी।"

यह सुन कर मल्डीना ने एक मुस्कुराहट के साथ रानी से कहा कि रानी ने जो कुछ भी उससे कहा वह उस बात को बिल्कुल मानती थी। बड़ी नम्रता से उसने उसको अपनी बहू बनाने के लिये धन्यवाद दिया।

क्योंकि उसको पता था कि दुनियाँ में उसके लिये कहीं कुछ नहीं था इसलिये उसके पास और कोई चारा भी नहीं था। यह तो उसकी खुशकिस्मती थी कि वह इतने अमीर राजा की बहू बन कर इस घर में आ रही थी।

रानी ने जब उसके इतने सुन्दर और मन को अच्छे लगने वाले शब्द सुने तो खुशी के मारे उसकी आँखों में आँसू आ गये। पर वह

[13] Meldina – name of the third and the youngest daughter of the poor woman

हमेशा ही उसके लिये डरती रही कि कहीं उस बेचारी का भी वही हाल न हो जो उसकी दोनों बड़ी बहिनों का हुआ था।

दुलहिन को शाही कपड़े और जवाहरात पहना कर सजाया गया और उसको उसके कमरे में ले जाया गया। वह वहाँ अपने पति का इन्तजार कर रही थी कि सूअर राजकुमार वहाँ रोज से भी ज़्यादा गन्दा हो कर आया तो मल्डीना ने अपनी कीमती पोशाक उसके लेटने के लिये बिछा दी और उसको वहाँ उस पर लेटने के लिये कहा।

रानी ने उससे उसको दूर भगाने के लिये कहा भी पर वह लड़की इस बात के लिये नहीं मानी।

उसने रानी से कहा — "माँ तीन अक्लमन्दी की बातें कही जाती हैं। पहली तो यह कि उस चीज़ को ढूँढने में समय बरबाद करना बेवकूफी है जो मिल नहीं सकती हो।

दूसरी यह कि हमको सुनी सुनायी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिये सिवाय उन बातों के जिनमें कुछ सार हो। तीसरी यह है कि जब भी तुम्हारे पास कोई बहुत ही कीमती चीज़ आ जाये तो उसकी इज़्ज़त करो और उसको सँभाल कर रखो।"

जब लड़की यह कह चुकी तो सूअर राजकुमार ने जो अभी पूरी तरह से जाग रहा था और उसने यह सब सुन लिया था उसको उसके चेहरे पर, गरदन पर, कन्धों पर अपनी जीभ से खूब चूमा।

लड़की ने भी उसके इस सहलाने का जवाब दिया। उसने भी उसको प्यार से सहलाया जिससे उस सूअर राजकुमार के मन में भी उसके लिये प्यार जाग गया।

जब रात हुई और सोने का समय आया तो दुलहिन अपने बिस्तर पर गयी और अपने बदसूरत पति का इन्तजार करने लगी।

जैसे ही वह अन्दर आया तो उसने अपनी ओढ़ने वाली चादर उठा कर उसको अपने पास आ कर लेटने के लिये कहा। जब वह बिस्तर पर आ गया तो उसने उसका सिर तकिये पर रखा और उसको चादर ओढ़ा दी। फिर उसने कमरे के परदे लगा दिये ताकि उसको ठंड न लगे।

सुबह को जब सूअर उठा तो वह हरे घास के मैदानों की तरफ भाग गया जैसे कि वह रोज जाया करता था। उसके जाने के बाद रानी राजकुमारी के कमरे में यह सोच कर आयी कि शायद उस लड़की बेचारी का भी वही हाल हुआ होगा जो उसकी दोनों बड़ी बहिनों का हुआ था।

पर वहाँ आ कर तो उसने देखा कि वह तो कीचड़ में सनी हुई बिस्तर में लेटी हुई थी और वह बहुत ही खुश और सन्तुष्ट दिखायी दे रही थी तो उसने भगवान को उसकी इस कृपा के लिये लाख लाख धन्यवाद दिया कि उसके बेटे को उसकी पसन्द की पत्नी मिल गयी थी और साथ में उसकी यह बहू भी ज़िन्दा थी।

एक दिन राजकुमार सूअर अपनी पत्नी से अच्छी अच्छी बातें कर रहा था कि उसने उससे कहा — "मेरी प्यारी मल्डीना अगर मुझे यह विश्वास हो जाये कि तुम मेरा एक भेद छिपा कर रख सकती हो तो मैं तुमको अपना एक भेद बताना चाहता हूँ जिसको मैंने बरसों से अपने दिल में छिपा कर रखा हुआ है।

मैंने देखा कि तुम बहुत समझदार और अक्लमन्द हो। तुम मुझे सच्चे दिल से प्यार करती हो इसलिये मेरी यह इच्छा है कि मैं वह भेद तुम्हें बता दूँ।"

मल्डीना बोली — "तुम अपना वह भेद मुझे बिना किसी हिचक के बता सकते हो और मैं वायदा करती हूँ कि बिना तुम्हारी इजाज़त के मैं उसे किसी को भी नहीं बताऊँगी।"

सो उसके ऊपर विश्वास कर के सूअर ने अपने शरीर को हिला कर उस पर से वह गन्दी बदबूदार सूअर की खाल उतार दी और उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान के रूप में खड़ा हो गया। वह सारी रात उसने अपने उसी रूप में अपनी पत्नी के साथ गुजारी।

पर उसने उस लड़की को फिर से सावधान रहने के लिये कहा कि वह यह भेद जो उसने अभी अभी देखा था वह किसी को न बताये क्योंकि इस बदकिस्मती से बाहर आने का अभी समय नहीं आया था। सो जब सुबह हुई तो उसने अपनी सूअर वाली खाल फिर से पहन ली और बाहर भाग गया।

अब यह तो तुम लोग खुद ही सोच सकते हो कि वह लड़की तो यह सब देख कर कितनी खुश हो गयी होगी कि उसका पति तो एक गन्दे बदबूदार सूअर की बजाय एक सुन्दर राजकुमार निकला।

कुछ दिन बाद उसको बच्चे की आशा हो गयी और समय आने पर उसने एक बहुत ही सुन्दर बेटे को जन्म दिया। वह यह देख कर बहुत खुश हुई कि उसका वह बेटा आदमी की शक्ल में था न कि जानवर की शक्ल में।

आखिर मल्डीना अपने पति के इस भेद का बोझ बहुत दिनों तक नहीं उठा सकी।

एक दिन वह रानी के पास गयी और बोली — "ओ रानी जी जब मैंने पहले पहल आपके बेटे से शादी की थी तो मैंने सोचा था कि मैं एक जंगली जानवर से शादी कर रही हूँ।

पर अब मुझे पता चला कि आपने तो मुझे पति के रूप में दुनियाँ का सबसे सुन्दर, सबसे लायक और सबसे शानदार राजकुमार दिया है।

आपको यह पता होना चाहिये कि जब भी वह मेरे कमरे में आता है और मेरे पास लेटता है वह अपनी गन्दी सूअर की खाल उतार कर जमीन पर फेंक देता है और एक बहुत सुन्दर नौजवान में बदल जाता है। जब तक कोई यह आश्चर्य अपनी आँखों से न देख ले इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता।"

जब रानी ने यह सुना तो उसको लगा कि उसकी बहू शायद उससे मजाक कर रही होगी पर जब मल्डीना ने उससे यह बात कई बार कही और कहा कि वह सच कह रही थी तब रानी ने उससे पूछा कि वह इस बात को कैसे देख सकती थी।

मल्डीना बोली — "आप आज रात को मेरे कमरे में उस समय में आयें जब हम लोग रात को सोने वाले होंगे। मैं अपने कमरे का दरवाजा खुला रखूँगी। जब यह सब आप अपनी आँखों से देखेंगी तभी आपको पता चलेगा कि मैं सच कह रही हूँ।"

सो उसी रात को जब सब लोग सोने चले गये और जब रानी का अपने बेटे को देखने का समय आया तो रानी ने लैम्प जलाये और राजा को साथ ले कर अपने बेटे के कमरे में पहुँची।

जब उसने कमरे में झाँक कर देखा तो देखा तो देखा कि उसके बेटे की खाल कमरे में नीचे एक कोने में फर्श पर पड़ी है।

वह फिर बिस्तर के पास पहुँची तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बहुत सुन्दर नौजवान उसकी बहू के साथ लेटा हुआ है। जब उन्होंने यह देखा तो वे दोनों ही बहुत खुश हुए।

इससे पहले कि कोई उस कमरे में से बाहर निकलता राजा ने हुक्म दिया कि उसके बेटे की सूअर वाली खाल के टुकड़े टुकड़े कर दिये जायें।

राजा गैलिओटो ने जब अपना इतना सुन्दर बेटा और पोता देखा तो उसने अपनी शाही पोशाक और अपना ताज उतारा और

उनको अपने बेटे के देने के लिये आगे बढ़ा और फिर उसने अपने बेटे का राजतिलक कर दिया।

उसके बाद वह सूअर राजा "राजा सूअर" के नाम से मशहूर हुआ।

इस तरह उस नौजवान राजा ने अपनी जनता पर राज करना शुरू किया और अपनी पत्नी मल्डीना के साथ खुशी खुशी बहुत समय तक ज़िन्दा रहा।

2 शापित सूअर[14]

“सूअर राजा” जैसी कहानियों के इस संग्रह की यह दूसरी कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के रोमेनिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके तीन बेटियाँ थीं। एक बार ऐसा हुआ कि राजा को लड़ाई पर जाना पड़ा तो उसने अपनी तीनों बेटियों को बुला कर कहा — “बेटियों मुझे लड़ाई पर जाना पड़ रहा है। हमारा दुश्मन बहुत बड़ी सेना ले कर हमारे ऊपर हमला करने आ रहा है।

मुझे तुम लोगों को यहाँ अकेले छोड़ते हुए बड़ा दुख हो रहा है पर मेरे पास और कोई चारा नहीं है। मेरे जाने के बाद तुम लोग अपना खयाल रखना और अच्छी बच्चियाँ बन कर रहना और घर की ठीक से देखभाल करना।

तुम लोग बागीचे में घूम सकती हो और महल में कहीं भी आ जा सकती हो सिवाय एक कमरे के जो पीछे की तरफ दाँये हाथ को

[14] The Enchanted Pig – a folktale from Romania, Europe. Taken from the Web Site : https://en.wikipedia.org/wiki/The_Enchanted_Pig
Andrew Lang has included it in his “Red Fairy Book” as “The Search for the Lost Husband”. Others of this type include The Black Bull of Norroway, The Brown Bear of Norway, The Daughter of the Skies, East of the Sun and West of the Moon, The King of Love, The Tale of the Hoodie, Master Semolina, The Sprig of Rosemary, The Enchanted Snake, and White-Bear-King-Valemon.

कोने में है। बस तुम लोग उसमें मत जाना क्योंकि उसमें जाने से तुमको नुकसान पहुँच सकता है।

यह सुन कर वे लड़कियाँ बोलीं — "पिता जी, आप शान्ति से जाइये। हमने कभी आपके हुक्म को नहीं टाला। आप विश्वास रखें कि हम इस बार भी आपका हुक्म नहीं टालेंगे। भगवान करे आप वहाँ से जीत कर लौटें।"

जब राजा के जाने की सारी तैयारी हो गयी तो राजा ने उनको महल के सारे कमरों की चाभियाँ थमाते हुए एक बार फिर से उनको याद दिलाया कि उसने उनसे क्या कहा था।

उसकी बेटियों ने आँखों में आँसू भर कर उसके हाथ चूमे और उसकी अमीर होने की शुभकामना की। उसने सब चाभियाँ अपनी बड़ी बेटी को दीं और लड़ाई पर चला गया।

अपने पिता के जाने के बाद लड़कियों को बहुत बुरा लगा और वे कुछ दुखी हो गयीं। उनको समझ ही नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। सो समय बिताने के लिये उन्होंने कुछ देर काम करने की सोची। कुछ देर बागीचे में घूमने की सोची।

जब तक वे ये सब करती रहीं सब कुछ ठीक चलता रहा पर यह खुशी का समय बहुत दिनों तक नहीं चला। रोज उनकी उत्सुकता बढ़ती ही गयी कि पिता जी ने उनको वह कमरा न खोलने के लिये क्यों कहा था।

और अब तुम देखोगे कि उसका नतीजा क्या निकला।

एक दिन सबसे बड़ी राजकुमारी ने कहा — "बहिनों, इतने दिनों तक हम लोग सिलाई करते रहे, कातते रहे, पढ़ते रहे। हम लोगों को अकेले रहते रहते भी कई दिन हो गये।

बागीचे का कोई कोना हमने नहीं छोड़ा जहाँ हम नहीं गये हों। महल का भी कोई कमरा हमने नहीं छोड़ा जो हमने न देखा हो। उनमें रखा हुआ हमने सारा सुन्दर और कीमती फर्नीचर भी देख लिया तो अब हम उस कमरे में क्यों न चलें जिसको पिता जी ने हमको देखने से मना किया है।

सबसे छोटी बहिन बोली — "मैं तो सोच भी नहीं सकती कि पिता जी का हुक्म तुम कैसे टाल सकती हो। जब उन्होंने हमसे उस कमरे में जाने से मना किया था तो वह जानते थे कि वह क्या कह रहे हैं। और उसको कहने की उनके पास कोई ठीक वजह भी रही होगी। हमको वहाँ नहीं जाना चाहये।"

दूसरी बहिन बोली — "मुझे यकीन है कि अगर हम उस कमरे में चले भी जायेंगे तो हमारे सिर पर कोई आसमान नहीं गिर जायेगा। और मुझे यह भी यकीन है कि ड्रैगन[15] और दूसरी तरह के राक्षस जो हमको खा सकते हैं वे भी उस कमरे

[15] A dragon is a legendary creature, typically with serpentine or reptilian traits, that features in the myths of many cultures. There are two distinct cultural traditions of dragons: the European dragon, derived from European folk traditions and ultimately related to Greek and Middle Eastern mythologies, and the Chinese dragon, with counterparts in Japan, namely the Japanese dragon, Korea and other East Asian countries. See one of its picture above.

में नहीं होंगे। इसके अलावा हम उस कमरे में गये भी हैं यह पिता जी को कैसे पता चलेगा।"

जब वे सब इस तरह से बातें कर रही थीं और एक दूसरे को उस कमरे में जाने के लिये उकसा रही थीं तो उन्होंने देखा कि वे तो उस कमरे तक पहुँच ही गयी थीं।

बड़ी बहिन ने दरवाजे में चाभी लगायी और दरवाजा खुल गया। तीनों लड़कियाँ उस कमरे में घुसीं तो तुम क्या सोचते हो कि उन्होंने वहाँ क्या देखा होगा?

वह कमरा तो करीब करीब सारा का सारा खाली पड़ा था। उस कमरे में तो कोई सजावट भी नहीं थी। वहाँ बीच में केवल एक बड़ी सी मेज रखी थी जिसके ऊपर एक बहुत सुन्दर कपड़ा बिछा हुआ था और उस कपड़े पर एक किताब खुली पड़ी थी।

तीनों राजकुमारियाँ यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थीं कि उस किताब में क्या लिखा था, खास कर के सबसे बड़ी वाली राजकुमारी। उसने उसमें पढ़ा कि सबसे बड़ी वाली राजकुमारी पूर्व दिशा के एक राजकुमार से शादी करेगी।

उसके बाद दूसरी राजकुमारी आगे बढ़ी और उसने उस किताब का पन्ना पलटा तो उसने पढ़ा कि दूसरी राजकुमारी पश्चिम दिशा के एक राजकुमार से शादी करेगी।

यह पढ़ कर दोनों राजकुमारियाँ तो बहुत खुश हो गयीं और हँस हँस कर एक दूसरे को छेड़ने लगीं पर सबसे छोटी राजकुमारी

उस किताब के पास नहीं जाना चाहती थी और न वह किताब ही आगे खोलना चाहती थी।

पर उसकी बड़ी बहिनों ने उसको चैन से नहीं बैठने दिया। चाहे उसकी इच्छा थी या नहीं उन्होंने उसको मजबूर किया कि वह उस किताब का अगला पन्ना पलटे। डर से कॉपते हुए उसने उस किताब का अगला पन्ना पलटा।

उसमें लिखा था "इस राजा की तीसरी लड़की उत्तर के एक सूअर से शादी करेगी।"

अगर इस समय उसके सिर पर बिजली भी गिर जाती तो शायद वह इतना न डरती जितना कि वह इस बात को पढ़ कर डर गयी कि वह एक सूअर से शादी करेगी।

वह तो बस यह सब सोच सोच कर ही मरने वाली हो रही थी कि उसकी शादी एक सूअर से होगी। अगर उसकी बहिनों ने उसे पकड़ न लिया होता तो वह तो शायद नीचे ही गिर पड़ती और उसका सिर फट गया होता।

जब वह कुछ होश में आयी तो वह तो वाकई डर के मारे गिर ही पड़ी। उसकी बहिनों ने उसे समझाया — "ऐसी बेकार की बातों पर तुम कैसे विश्वास कर सकती हो? क्या कभी ऐसा भी हुआ है कि किसी राजा की बेटी की शादी किसी सूअर से हुई हो?"

उसकी दूसरी बहिन ने कहा — "तुम कैसी बच्चों जैसी बात कर रही हो? अगर कोई सूअर तुमसे शादी करने की इच्छा भी प्रगट करे

तो क्या हमारे पिता जी के पास इतने भी सिपाही नहीं हैं कि वह तुम्हारी उस सूअर से रक्षा कर सकें?"

सबसे छोटी राजकुमारी को अपनी बहिनों के शब्दों से कुछ तसल्ली तो मिली और उसने उनके कहने पर विश्वास तो कर लिया पर फिर भी उसका दिल भारी ही रहा।

वह अब केवल उस किताब के बारे में ही सोचती रहती जिसमें उसकी बहिनों के लिये तो अच्छी किस्मत लिखी थी पर उसके लिये एक ऐसी चीज़ लिखी थी जिसे कभी किसी ने सुना भी नहीं था।

इसके अलावा उसके मन पर एक बोझ यह भी था कि उसने अपने पिता का कहा नहीं माना था। इसके बाद से ही वह कुछ बीमार सी रहने लगी और कुछ ही दिन में वह इतनी बीमार हो गयी कि उसको पहचानना मुश्किल हो गया।

पहले उसकी रंगत गुलाबी हुआ करती थी, वह खुश रहा करती थी पर अब वह पीली पड़ गयी थी और कोई चीज़ उसको खुश नहीं कर पाती थी।

अब वह बागीचे में अपनी बहिनों के साथ खेलने भी नहीं जाती थी, वहाँ अब वह अपने बालों में लगाने के लिये फूल चुनने भी नहीं जाती थी और जब उसकी बहिनें कातने और सिलाई के लिये बैठती थीं तो वह उनके साथ गाती भी नहीं थी।

इस बीच लड़ाई खत्म हो गयी और राजा जीत कर लड़ाई से वापस आ गया। वहाँ वह अपनी बेटियों के बारे में ही सोचता रहता

था। जब वह घर वापस आया तो सारे लोग मंजीरे और ढोल ले ले कर उसकी अगवानी के लिये गये और उसकी जीत की खुशी मनायी।

घर आ कर उसने सबसे पहला काम यह किया कि उसने भगवान को धन्यवाद दिया कि उसने उसको उसके उस दुश्मन पर जीतने का मौका दिया जिसने उसके खिलाफ सिर उठाया था।

उसके बाद ही वह महल में घुसा तो उसकी तीनों बेटियाँ उससे मिलने आयीं। वह उन तीनों को ठीक ठाक देख कर बहुत खुश हुआ क्योंकि उसकी सबसे छोटी बेटी ने अपनी भरसक कोशिश की थी कि वह उसके सामने दुखी दिखायी न दे।

पर बहुत जल्दी ही उसने अपनी सबसे छोटी बेटी को दुखी और कमजोर देखा तो उसे लगा कि कोई गरम लोहा उसकी आत्मा को छू गया है। उसको पता चल गया कि उसके पीछे उन लोगों ने उसका कहा नहीं माना।

उसको पूरा विश्वास था कि वह ठीक सोच रहा था पर फिर भी पक्का करने के लिये कि वह ठीक सोच रहा था उसने अपनी बेटियों को बुलाया और उनसे कुछ सवाल पूछे और उनसे सच बताने के लिये कहा।

उन्होंने उसको बाकी सब तो सच सच बता दिया पर यह नहीं बताया कि उन दोनों को किस चीज़ ने वह कमरा खोलने के लिये

उकसाया था। राजा तो यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसकी बेटियाँ भी बेचारी डर के मारे मरी जैसी हो रही थीं।

जब वह अपने दुख से थोड़ा सा निकला तो उसने अपनी बेटियों को तसल्ली तो दी पर उसने विचार किया कि जो कुछ होना था वह तो हो चुका और उसके हजारों शब्द भी उस दशा को बाल बराबर भी नहीं बदल सकते थे।

इसलिये बाद में उसने सोचा कि वह उनके हालात को जितनी अच्छी तरह से सिलटा सकेगा उतनी अच्छी तरह से सिलटायेगा। कुछ दिन बाद सभी यह घटना भूल गये।

अब जैसा उस किताब में लिखा हुआ था वैसा ही हुआ। एक दिन पूर्व दिशा के राज्य से एक राजकुमार आया और उसने राजा से उसकी सबसे बड़ी बेटी का हाथ माँगा। राजा ने खुशी खुशी अपनी सबसे बड़ी बेटी की शादी उस राजकुमार से कर दी।

शादी की बहुत ही शानदार दावत हुई और तीन दिन तक खुशियाँ मनाने के बाद दोनों रीति रिवाज के साथ राजकुमार के देश चले गये।

ऐसा ही राजा की दूसरी बेटी के साथ हुआ। एक दिन पश्चिम दिशा से एक राजकुमार आया और राजा की दूसरी बेटी से शादी कर के उसको अपने देश ले गया।

सबसे छोटी राजकुमारी ने देखा कि यह तो ठीक वैसा ही हो रहा था जैसा कि उस किताब में लिखा था। यह देख कर वह बहुत

दुखी हुई। उसका खाना पीना छूट गया। अब उसका अच्छे कपड़े पहनने को मन नहीं करता था। वह अब बाहर घूमने भी नहीं जाती थी।

उसने कह दिया कि बजाय इसके कि उसके ऊपर सारी दुनियाँ हँसे वह मर जाना पसन्द करेगी। पर राजा उसको यह सब पागलपन नहीं करने दे रहा था। वह हमेशा ही उसको कई तरह से तसल्ली देता रहता था।

समय बीतता रहा और लो एक दिन उत्तर दिशा से एक सूअर राजा के पास आया और सीधा राजा के पास जा कर बोला — "राजा की जय हो। भगवान आपको बहुत धनवान बनाये और सूरज की तरह आपका यश बढ़ाये।"

राजा बोला — "आओ मेरे दोस्त तुम्हारा स्वागत है पर तुम यहाँ किसलिये आये हो?"

सूअर बोला — "मैं आपकी बेटी से शादी करने के इरादे से आया हूँ।"

राजा एक सूअर को इतना अच्छा बोलते सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। उसको तुरन्त ही यह अहसास हुआ कि इस सूअर में जरूर कुछ अजीब बात है जो यह इतना अच्छा बोल रहा है। यह कोई साधारण सूअर नहीं हो सकता।

वह सूअर के विचारों को आसानी से दूसरी तरफ मोड़ सकता था क्योंकि वह एक सूअर से अपनी बेटी की शादी करना नहीं

चाहता था पर जब उसने सुना कि उसके शहर की सारी गलियॉ सूअरों से भरी हुई थीं तो उसके लिये अब इसके सिवा कोई और चारा नहीं बचा था कि वह उसको अपनी बेटी दे देता।

वह सूअर भी केवल वायदों से मानने वाला नहीं था। उसने जिद की कि उसकी शादी एक हफ्ते के अन्दर अन्दर हो जानी चाहिये। वह वहॉ से तब तक नहीं जायेगा जब तक राजा अपना शाही वायदा पूरा नहीं करेगा।

यह देख कर राजा ने अपनी बेटी को बुलाया और उसको सलाह दी कि उसको अपनी किस्मत को स्वीकार कर लेना चाहिये। क्योंकि इस हालत में अब कुछ और नहीं किया जा सकता था।

वह बोला — "मेरी बच्ची, इस सूअर की बोली और सारा बरताव दूसरे सूअरों से बिल्कुल अलग लगता है। मुझे लगता है कि यह हमेशा से ही सूअर नहीं था बल्कि ऐसा लगता है कि इसके ऊपर किसी का शाप या जादू काम कर रहा है सो इसकी बात मान लो और जैसा यह कहे वैसा ही करो। भगवान जल्दी ही तुम्हें इससे छुटकारा दिलायेगा।

राजकुमारी बोली — "पिता जी अगर आप ऐसा ही चाहते हैं तो ऐसा ही होगा।"

शादी का दिन पास आ रहा था। उन दोनों की शादी हो गयी और वे एक शाही गाड़ी में बैठ कर सूअर के देश चले गये।

रास्ते में एक बहुत बड़ी दलदल पड़ी तो सूअर ने गाड़ी रोकने के लिये कहा। गाड़ी रुकने पर वह गाड़ी से उतरा और उस कीचड़ में जा कर इतना लोटा कि वह सिर से ले कर पैर तक उसमें सन गया।

यह कर के वह गाड़ी में लौट आया और अपनी पत्नी से बोला कि वह उसको चूमे। अब वह लड़की बेचारी क्या करती। उसको अपने पिता के शब्द याद आये तो उनको सोचते हुए उसने अपना रूमाल निकाला, सूअर की थूथनी को धीरे से पोंछा और उसे चूम लिया।

सूअर के रहने की जगह एक घने जंगल में थी। जब तक वे लोग वहाँ पहुँचे अँधेरा हो गया था। क्योंकि चलते चलते वे बहुत थक गये थे सो कुछ देर के लिये वे बैठ गये। फिर उन्होंने रात का खाना खाया और आराम करने के लिये लेट गये।

बीच रात में राजकुमारी ने देखा कि वह सूअर तो एक आदमी बन गया था। यह देख कर उसको अपने पिता की बात याद आयी। उसको याद कर के उसको बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ बल्कि उसकी हिम्मत और बढ़ गयी। उसने निश्चय कर लिया कि वह इन्तजार करेगी और देखेगी कि आगे क्या होता है।

उसने देखा कि वह सूअर तो हर रात आदमी बन जाता था और हर सुबह उसके जागने से पहले पहले ही फिर से सूअर में बदल जाता था। ऐसा हर रात होता रहा।

राजकुमारी की समझ में तो कुछ नहीं आ रहा था। पर इतना उसको साफ साफ लगा कि उसका पति वाकई किसी शाप या जादू के असर में था। वह उससे इतना अच्छा बरताव करता था कि उसने तो उसका दिल ही जीत लिया था। अब वह भी उसको प्यार करने लगी थी।

एक दिन वह अकेली बैठी हुई थी कि एक बूढ़ी जादूगरनी[16] उसके पास से गुजरी। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गयी क्योंकि बहुत दिनों बाद उसने कोई आदमी देखा था। उसने उसको पुकारा और उससे कुछ बात करने को कहा। और बहुत सारी बात करने के बीच में उसने राजकुमारी को बताया कि वह जादू की बहुत सारी कलाऐं जानती थी।

इसके अलावा वह भविष्य भी बता सकती थी और उसको दवाऐं और पत्तियों आदि से इलाज के इस्तेमाल भी आते थे।

राजकुमारी बोली कि वह ज़िन्दगी भर उसकी कृतज्ञ रहेगी अगर वह उसको यह बता देगी उसके पति को क्या हुआ है। वह क्यों तो रात में आदमी बन जाता है और क्यों दिन में सूअर बन जाता है।

जादूगरनी बोली — "मैं तुमसे यह कहने ही वाली थी कि मैं कितनी अच्छी किस्मत बताने वाली हूँ। तुम्हारा पति किसी के जादू

[16] Translated for the word "Witch".

के असर में है। अगर तुम चाहो तो मैं तुमको इस जादू को तोड़ने वाली एक दवा दे सकती हूँ।"

राजकुमारी बोली — "अगर तुम मुझे वह दवा दे दोगी तो जो तुम चाहोगी मैं वह तुमको दे दूंगी।"

तब उस जादूगरनी ने उसको एक धागा देते हुए कहा — "मेरी बच्ची लो यह धागा लो पर यह बात तुम उसको बताना नहीं क्योंकि अगर उसे इसका पता चल गया तो इसका असर खत्म हो जायेगा।

रात को जब वह सो जाये तो तुम बिल्कुल बिना आवाज किये उठना और यह धागा उसके बॉये पैर में जितनी कस कर बॉध सको बॉध देना। तुम सुबह को देखोगी कि वह फिर सूअर में नहीं बदल पायेगा और आदमी ही बना रहेगा।

और हॉ इसके लिये मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिये। मुझे यह जान कर ही मेरा इनाम मिल जायेगा कि तुम खुश हो। तुम यह सब जो सह रही हो यह जान कर मेरा दिल रोता है। अगर यह सब मैं पहले जान पाती तो मैं तुम्हारी सहायता के लिये पहले ही आ जाती।"

इतना कह कर वह बूढ़ी जादूगरनी वहॉ से चली गयी।

जादूगरनी के जाने के बाद राजकुमारी ने उस धागे को सॅभाल कर छिपा कर रख लिया।

रात को राजकुमारी चुपचाप धीरे से उठी और उसने वह धागा अपने पति के बॉये पैर में कस कर बॉध दिया। पर जब वह धागे

की गॉठ कस रही थी तो खट से वह धागा टूट गया क्योंकि वह धागा सड़ा हुआ था और कमजोर था।

इतने में उसका पति जाग गया और बोला — "ओ नाखुश लड़की यह तूने क्या किया? तीन दिन के बाद तो मेरा यह जादू अपने आप ही खत्म हो गया होता। और अब मुझे पता नहीं कि मैं इस बदनसीब शक्ल में कब तक रहूँगा।

अब मुझे तुझे छोड़ना पड़ेगा और अब तू भी मुझको तब तक नहीं देख पायेगी जब तक तू तीन जोड़ी लोहे के जूते न तोड़ लेगी और एक लोहे के डंडे की नोक को चौरस न कर लेगी।" यह कह कर वह वहॉ से गायब हो गया।

जब राजकुमारी वहॉ अकेली रह गयी तो वह रोने लगी। वह इतना रोयी कि उसको देख कर दया आती थी। पर उसको लगा कि उसके रोने से तो कुछ बनता बिगड़ता नहीं था सो उसने अपनी किस्मत की बात मानने का ही फैसला किया। अब वह उसको जहॉ ले जाये।

वह उठी और एक शहर की तरफ चल दी। तुरन्त ही उसने तीन लोहे के जूतों को बनाने का हुक्म दिया। जैसे ही वे जूते बन गये उसने वे जूते लिये और एक लोहे का डंडा लिया और उनको ले कर अपने पति को ढूँढने चल दी।

वह चलती रही और चलती रही। उसने नौ सागर और नौ द्वीप पार किये। जंगल पार किये जिनमें बहुत मोटे मोटे पेड़ लगे हुए थे। कई बार वह पेड़ों की शाखों में अटक कर गिरी।

पेड़ों की डालियाँ उसके चेहरे पर आ आ कर लग रही थीं। झाड़ियों से उसके हाथ छिले जा रहे थे पर वह पीछे मुड़ कर देखे बिना बस चलती रही और चलती ही रही।

आखिर चलते चलते वह थक गयी और दुखी सी वह एक मकान के पास आ पहुँची। तुम क्या सोचते हो कि यह मकान किसका था और कौन रहता था यहाँ?

यह मकान चाँद रानी का था और यहाँ चाँद रानी रहती थी। उसने इस मकान का दरवाजा खटखटाया तो चाँद रानी की माँ ने दरवाजा खोला।

उसने उससे उसमें अन्दर आने की प्रार्थना की ताकि वह कुछ देर के लिये वहाँ आराम कर सके।

चाँद रानी की माँ ने उसकी बुरी हालत देखी तो उसको उसके ऊपर दया आ गयी। वह उसको अन्दर ले गयी और उसकी सेवा कर के उसको ठीक किया।

जब राजकुमारी चाँद रानी के घर में रह रही थी तो उसने एक बच्चे को जन्म दिया।

एक दिन चाँद रानी की माँ ने राजकुमारी से पूछा — "ओ दुनियाँ की जीव, तुम यहाँ चाँद के घर में आ ही कैसे पायीं?"

तब उस राजकुमारी ने उसको अपनी सारी कहानी बतायी और कहा कि वह हमेशा ही भगवान की कृतज्ञ रहेगी कि वह उसको यहाँ ले कर आया और वह उसकी यानी चाँद रानी की माँ की भी कृतज्ञ रहेगी कि उसने उसके और उसके बच्चे पर दया दिखायी। उसने उनको मरने के लिये नहीं छोड़ दिया।

वह फिर बोली — "अब मैं आपसे एक आखिरी सहायता और माँगती हूँ। क्या आपकी बेटी चाँद रानी मुझे यह बता सकती हैं कि मेरा पति कहाँ है?"

चाँद रानी की माँ ने कहा — "बेटी, मेरी बेटी चाँद तुमको यह तो नहीं बता सकती कि तुम्हारा पति कहाँ है पर हाँ तुम यहाँ से और आगे सूरज के घर तक जा सकती हो। शायद सूरज तुमको यह बता सके कि तुम्हारा पति कहाँ है।"

फिर उसने उसको खाने के लिये एक भुना हुआ मुर्गा दिया और कहा कि मुर्गा खाने के बाद वह उसकी सारी हड्डियाँ सँभाल कर रखे उसकी कोई हड्डी खोये नहीं क्योंकि वे हड्डियाँ बाद में उसके काम आ सकती हैं।

राजकुमारी ने उसको उसकी मेहमानदारी और उसकी सहायता के लिये एक बार फिर से धन्यवाद दिया, वहाँ अपने एक जोड़ी लोहे के जूते फेंके जो टूट गये थे, दूसरे जोड़ी जूते पहने, मुर्गा खा कर उसकी हड्डियों को एक पोटली में बाँधा और वहाँ से आगे चल दी।

सूने रेतीले रेगिस्तानों से गुजरती हुई वह आगे चलती चली जा रही थी। वहाँ की सड़कें ऐसी थीं कि अगर वह दो कदम आगे चलती थी तो एक कदम पीछे की तरफ गिर जाती थी। पर फिर भी उसने किसी तरह से वे रेगिस्तान पार किये।

फिर उसने पत्थरों से भरे एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर और एक चोटी से दूसरी चोटी पर कूद कूद कर पहाड़ी रास्ता पार किया। कभी कभी वह वहाँ पर आराम भी कर लेती थी पर वह फिर आगे चल देती थी।

इससे उसके घुटने कोहनियाँ और पैर सभी बहुत घायल से हो गये थे और उनसे खून बहने लगा था। उसको दलदल भी पार करनी पड़ीं। कहीं कहीं वह कूद नहीं सकती थी तो उसको घुटनों के बल चल कर आगे जाना पड़ता था। इसमें उसको अपने डंडे का भी सहारा लेना पड़ता था।

किसी तरह चलते चलते वह सूरज के घर आयी। वहाँ आ कर उसने सूरज के घर का दरवाजा खटखटाया और आराम के लिये जगह माँगी।

सूरज की माँ ने उसके लिये दरवाजा खोला तो दुनियाँ के उस छोर से आये हुए एक आदमी को देख कर वह भी बहुत आश्चर्यचकित रह गयी। और जब उसने उसकी कहानी सुनी और उसकी हालत देखी तो वह दया से रो पड़ी।

उसने उससे वायदा किया कि वह अपने बेटे से जरूर पूछेगी कि वह उसके पति का पता जानता है कि नहीं।

उसने उसको अन्दर बुलाया और उसको घर के नीचे वाले कमरे[17] में छिपा दिया है ताकि सूरज जब भी घर वापस आये तो उसको कुछ पता न चले कि वहाँ कोई अजनबी था क्योंकि जब भी सूरज घर वापस लौटता है तो वह बहुत बुरे मूड में होता है।

अगले दिन राजकुमारी को कुछ ऐसा लगा कि जैसे उसके साथ कुछ खराब होने वाला है क्योंकि सूरज को पता चल गया था कि कोई दूसरी दुनियाँ से आ कर उसके घर में ठहरा हुआ है। पर उसकी माँ ने उसको मीठे मीठे शब्दों से यह कह कर शान्त कर दिया था कि ऐसा कुछ नहीं था।

जिस तरीके से राजकुमारी को वहाँ रखा गया उससे राजकुमारी को कुछ तसल्ली मिली। फिर भी उसने सूरज की माँ से पूछा — "माँ जी ऐसा कैसे हो सकता है कि सूरज किसी से गुस्सा हो सके। वह तो कितना सुन्दर है और दुनियाँ में रहने वालों के लिये कितना दयावान है।

सूरज की माँ ने जवाब दिया — "बेटी ऐसा इसलिये होता है कि सुबह को जब वह स्वर्ग के दरवाजे पर खड़ा होता है तो बहुत खुश होता है और दुनियाँ को देख कर मुस्कुराता है।

[17] Translated for the word "Cellar"

पर सारे दिन दुनियाँ को देखते देखते वह कुछ नाराज सा हो जाता है क्योंकि वह सारे दिन लोगों को बुरे बुरे काम करते हुए देखता है जिससे उसका दिल कचोट उठता है।

इससे शाम को जब वह घर वापस लौटता है तो बहुत दुखी और नाराज होता है क्योंकि उस समय वह मौत के दरवाजे पर खड़ा होता है। यही उसका रोज का रास्ता है। वहाँ से फिर वह घर आ जाता है।"

तभी उसने राजकुमारी को बताया कि उसने अपने बेटे से उसके पति के बारे में पूछा था पर उसे उसके पति के बारे में कुछ नहीं पता। सो अब उसकी एक ही उम्मीद थी कि वह हवा के घर जाये और वहाँ जा कर उससे अपने पति का पता पूछे।

इससे पहले कि वह हवा के पास जाती सूरज की माँ ने भी उसको खाने के लिये एक भुना हुआ मुर्गा दिया और उससे कहा कि उसको खाने के बाद वह उसकी हड्डियाँ बहुत सँभाल कर रखे। बाद में वे उसके काम आ सकती थीं।

राजकुमारी ने मुर्गा खा लिया और उसकी हड्डियाँ सँभाल कर एक पोटली में बाँध लीं।

यहाँ उसने अपने दूसरे जोड़ी जूते फेंके जो काफी फट गये थे, तीसरे जोड़ी जूते पहने, अपने बच्चे को अपनी बाँहों में उठाया, अपना डंडा उठाया और मुर्गे की हड्डियों वाली दोनों पोटलियाँ ले कर वह हवा के घर की तरफ चल दी।

इस रास्ते में उसको पहले रास्तों के मुकाबले में और ज़्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

क्योंकि चलते चलते वह एक ऐसे पहाड़ पर आयी जिस पर नुकीले पत्थर पड़े थे और उसमें से आग की लपटें निकल रही थी। इसके अलावा उसने एक ऐसा जंगल भी पार किया जहाँ से पहले कभी कोई आदमी कभी नहीं गुजरा था।

इस रास्ते पर उसको बरफ से ढके हुए मैदान और बरफ के पहाड़ भी पार करने पड़े। वह तो बेचारी इन सब मुश्किलों से मर सी गयी थी।

पर वह बहादुरी से चलती रही और आखिर एक पहाड़ के एक तरफ बनी एक बहुत बड़ी गुफा में आ गयी। हवा इसी गुफा में रहता था। यहाँ आ कर राजकुमारी ने हवा की गुफा का दरवाजा खटखटाया और रहने के लिये जगह माँगी।

यहाँ भी हवा की माँ ने उसके लिये दरवाजा खोला और उस पर दया कर के उसको अन्दर बुलाया ताकि वह कुछ देर आराम कर सके। यहाँ भी उसको छिपा कर रखा गया ताकि हवा को उसके वहाँ होने का पता न चल सके।

राजकुमारी ने उसको भी अपनी कहानी सुनायी तो हवा की माँ को हवा से पता चला कि उसका पति एक घने जंगल में रहता है। और वह जंगल इतना घना था कि उसे कुल्हाड़ी से काटना नामुमकिन था।

यहाँ हवा ने पेड़ों के तने काट कर और उनको आपस में बेलों से बाँध कर एक तरह का घर बना रखा था और वह यहाँ आदमियों से दूर उसी घर में अकेला रहता था।

यहाँ भी हवा की माँ ने खाने के लिये उसको एक भुना मुर्गा दिया और यह कह कर उसको आकाश गंगा की तरफ आगे भेज दिया कि वह उस मुर्गे को खाने के बाद उसकी हर हड्डी को सँभाल कर रखे क्योंकि बाद में वे उसके काम आ सकती हैं।

आकाश गंगा के उस पार ही उसकी वह जगह थी जहाँ उसका पति रहता था।

आँखों में आँसू भर कर उसने हवा की माँ को उसकी मेहमानदारी और उस अच्छी खबर के लिये धन्यवाद दिया। उसकी अपने पति से मिलने की इच्छा इतनी ज़्यादा थी कि वह वहाँ से बिना कहीं रुके आगे अपनी यात्रा पर चल दी।

आगे चल कर उसके तीसरे जोड़ी जूते भी टूट गये थे। उसने उनको फेंक दिया और अब वह नंगे पैर ही आकाशगंगा की तरफ चल दी।

अब उसको न तो दलदल परेशान कर रही थी और न काँटे ही उसके पैरों को घायल कर रहे थे। न पत्थर ही उसके पैरों में चुभ रहे थे।

आखीर में वह एक जंगल के किनारे हरे घास के मैदान में आ पहुँची। वहाँ उसने हरी मुलायम घास और बहुत सारे फूल खिले देखे तो उनको देख कर उसकी तबियत खुश हो गयी।

वह वहाँ थोड़ी देर के लिये सुस्ताने के लिये बैठ गयी। वहाँ बहुत सारी चिड़ियाँ आपस में बात कर रही थीं। उनको आपस में बात करते देख कर उसको अपने पति की याद आने लगी।

सो उसने फिर से अपने बच्चे को अपनी बाँहों में उठाया और हड्डियों की पोटलियाँ अपने कन्धे पर डालीं और जंगल की तरफ चल दी।

वह तीन दिन तीन रात उस जंगल में चलती रही पर वहाँ उसको कुछ नहीं मिला। अब उसका डंडा भी उसके लिये बेकार हो गया था। क्योंकि अब तक इस्तेमाल होते होते वह बिल्कुल ही चौरस हो गया था।

वह नाउम्मीद हो कर अपनी कोशिशें छोड़ने ही वाली थी कि उसने एक आखिरी कोशिश और की और उसे घने पेड़ों के बीच में एक घर दिखायी दिया। उसको लगा कि हवा की माँ ने उससे शायद इसी घर का जिक्र किया था।

इस घर में कोई खिड़की नहीं थी और इसका दरवाजा भी इसकी छत में था। इसके दरवाजे तक पहुँचने के लिये उसने सीढ़ियों की खोज में उसने उस घर के चारों तरफ चक्कर काटा पर उसको कहीं कोई सीढ़ी दिखायी नहीं दी।

अब वह क्या करे? वह उस घर के अन्दर कैसे जाये?

वह सोचती रही सोचती रही। उसने दरवाजे तक चढ़ने की कोशिश भी की पर सब बेकार। वह वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकी। तभी अचानक उसे उन मुर्गों की हड्डियों का ख्याल आया जिनको वह रास्ते भर ढोती चली आ रही थी।

उसने सोचा कि अगर उनका कोई ठीक इस्तेमाल नहीं होता तो चाँद सूरज और हवा की माँऐं उसको उनको सँभाल कर रखने के लिये क्यों कहतीं। हो सकता है कि वे यहाँ मेरे किसी काम आ जायें। सो उसने उन हड्डियों को पोटली में से निकाला और उनको एक के बराबर एक रख कर जोड़ना शुरू किया।

उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे तो एक दूसरे से बहुत मजबूती से चिपक गयीं। वह उनको इसी तरह से जोड़ती रही जब तक कि घर की ऊँचाई के नाप के दो डंडे नहीं बन गये।

उसने इन दोनों डंडों को एक एक गज की दूरी पर खड़ा कर दिया और फिर सीढ़ी बनाने के लिये उनके बीच में और हड्डियाँ लगानी शुरू कीं। वे भी सब मजबूती से चिपकती चली जा रही थीं।

जैसे ही एक सीढ़ी बन जाती वह उस पर चढ़ जाती फिर वह दूसरी सीढ़ी बनाती। फिर उस पर चढ़ कर वह तीसरी सीढ़ी बनाती।

ऐसा करते करते वह ऊपर तक पहुँच गयी पर सबसे ऊपर की सीढ़ी बनाने के लिये उसके पास अब कोई हड्डी नहीं बची थी। और बिना उस आखिरी सीढ़ी के वह उस घर पर चढ़ नहीं सकती थी। इसलिये बिना उस आखिरी डंडे के वह सीढ़ी बेकार थी। उसको लगा कि शायद कोई हड्डी उससे कहीं खो गयी थी।

कि अचानक उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने अपने हाथ की छोटी उँगली काट कर उस आखिरी एक हड्डी की जगह लगा दी। लो वह उंगली तो वहाँ वैसे ही चिपक गयी जैसे वे हड्डियाँ चिपक गयी थीं।

अब सीढ़ी पूरी हो गयी थी सो वह बच्चे को अपनी गोद में लिये हुए उस घर में घुसी। उसने देखा कि उस घर में सब सामान बड़े सलीके से रखा हुआ था।

उसने पहले खाना खाया फिर बच्चे को एक पालने में सुलाया जो वही फर्श पर रखा हुआ था फिर वह भी कुछ देर के लिये आराम करने के लिये वहीं बैठ गयी।

जब उसका सूअर पति घर वापस आया तो जो कुछ उसने देखा उसको देख कर तो वह चौंक गया। पहले तो उसको अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ और वह उस हड्डी की सीढ़ी की तरफ और उसके ऊपर की तरफ लगी उंगली की तरफ ही देखता रहा।

फिर उसको लगा कि कहीं उसके ऊपर कोई नया जादू न डाल रहा हो। इससे वह डर गया और इस डर की वजह से वह घर से बाहर भाग जाने ही वाला था कि...

कि तभी उसको एक और विचार आया और वह एक फाख्ता में बदल गया ताकि उसके ऊपर कोई और जादू काम न कर सके। फाख्ता बन कर वह सीढ़ी को बिना छुए ही अपने कमरे में उड़ गया।

वहाँ आ कर उसने देखा कि एक स्त्री एक बच्चे को झुला रही थी। वह उसको पहचान गया। वह तो उसकी पत्नी थी।

उसको देख कर और उसने जो कुछ भी उसके लिये सहा था उसको सोच कर उसका दिल पिघल गया और उसको उसके ऊपर दया आ गयी। वह अचानक आदमी बन गया।

राजकुमारी ने जब उसको देखा तो वह उठ खड़ी हुई और डर के मारे उसके दिल की धड़कन बढ़ गयी क्योंकि वह तो उसको जानती नहीं थी कि वह कौन था।

पर जब उसने उसको बताया कि वह कौन था तो खुशी के मारे वह अपनी सारी थकान भूल गयी। अब उसका पति एक बहुत सुन्दर नौजवान था जो फ़र के पेड़ की तरह सीधा था।

वे दोनों वहीं बैठ गये और राजकुमारी ने उसको अपनी यात्रा का सारा हाल बताया। उसकी कहानी सुन कर वह रो पड़ा। और तब उसने राजकुमारी को अपनी कहानी सुनायी।

उसने बताया — “मैं एक राजा का बेटा हूँ। एक बार मेरे पिता कुछ ड्रैगनों से लड़ रहे थे क्योंकि वे हमारे देश में बहुत अशान्ति फैला रहे थे।

उस लड़ाई में मैंने सबसे छोटे ड्रैगन को मार दिया। उसकी माँ एक जादूगरनी[18] थी सो उसने मेरे ऊपर जादू कर दिया और मुझे एक सूअर में बदल दिया।

यह वही जादूगरनी थी जो तुमको मेरे पैर में बाँधने के लिये धागा दे गयी थी ताकि तीन दिन की बजाय मैं बहुत दिनों तक उसी शक्ल में रहूँ। इस तरह मैं तीन साल और सूअर के रूप में रहने पर मजबूर किया गया।

पर अब तो हम दोनों ने एक दूसरे के लिये कितना कुछ सहा है और फिर एक दूसरे को पा भी लिया है सो अब हमें पुरानी बातों को भूल जाना चाहिये।”

अगले दिन राजकुमारी और राजकुमार अपने देश के लिये वापस चल दिये। उसके देश में उन दोनों को देख कर बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। तीन दिन और तीन रात तक दावत चलती रही।

उसके बाद वे दोनों राजकुमारी के पिता से मिलने के लिये उसके देश गये। राजकुमारी का पिता तो अपनी बेटी को फिर से देख कर खुशी के मारे बिल्कुल पागल सा ही हो गया।

---

[18] Translated for the word “Witch”

और जब उसने अपने पिता को अपनी कहानी बतायी तो राजा बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि वह जीव जो सूअर के रूप में तुमसे शादी करना चाहता था वह सूअर के रूप में पैदा ही नहीं हुआ था। देखो तुमने मेरी बात मान कर कितनी अक्लमन्दी का काम किया।"

और क्योंकि उस राजा के कोई बेटा नहीं था उसने अपने सबसे छोटे दामाद को अपने देश का राजा बना दिया। फिर बहुत सालों तक उन्होंने वहाँ राज किया और अगर वे अभी मरे नहीं हैं तो वे अभी भी वहाँ जरूर ही राज कर रहे होंगे।

3 राजा क्रिन[19]

"राजा सूअर" जैसी लोक कथाओं के संग्रह में सूअर की यह तीसरी लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक राजा था जो एक सूअर के बच्चे को अपने बेटे की तरह मानता था। उसका नाम भी उसने राजा क्रिन रखा हुआ था।

राजा क्रिन महल में सब जगह घूमता रहता था और अक्सर ठीक से ही रहता था जैसे वह किसी शाही परिवार में जन्मा हो। हॉ कभी कभी उससे कुछ गड़बड़ हो जाती थी।

एक बार ऐसे ही एक मौके पर उसके पिता यानी राजा ने उसकी पीठ सहलाते हुए उससे कहा — "क्या बात है बेटा, तुम आज कल गड़बड़ क्यों कर रहे हो?"

राजा क्रिन बोला — "ओयिंक ओयिंक। मुझे एक पत्नी चाहिये। अेयिंक ओयिंक। मुझे बेकर[20] की बेटी चाहिये।"

---

[19] King Krin – a folktale from Colline del Po, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

[20] Almost all Western people eat their bread baked in oven. The person who makes such bread is called baker, although he bakes many other things too, such as biscuits, cookies, cake, buns etc etc…

राजा ने अपने बेक करने वाले को बुलाया। उस बेकर के तीन बेटियाँ थीं। राजा ने उससे पूछा — "क्या तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी मेरे सूअर बेटे से शादी करने के लिये तैयार है?"

बेकर तो यह सुन कर बड़े पशोपेश में पड़ गया। एक तरफ तो वह बहुत खुश था कि उसकी बेटी की शादी एक राजा के बेटे से हो रही थी पर दूसरी तरफ बहुत दुखी था कि उसकी बेटी की शादी एक सूअर से हो रही थी। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे और क्या करे।

वह राजा को मना भी नहीं कर सकता था सो उस समय तो उसने राजा से कहा — "राजा साहब मैं अपनी बेटी से पूछ लूँ।" और अपने घर चला आया।

पर जब उसने यह सब अपनी सबसे बड़ी बेटी को बताया तो उसने यह तय कर लिया कि वह उस सूअर से शादी कर लेगी।

बेकर की बेटी से उसकी शादी हो रही थी यह सुन कर तो राजा किन के रोंगटे खड़े हो गये। वह बहुत खुश हो गया। अपनी शादी वाली रात को वह सारे शहर में जा कर बहुत खुश खुश चक्कर काट कर आया और अपने शरीर में कीचड़ भी खूब अच्छी तरह लपेट कर आया।

लौट कर वह अपनी पत्नी के कमरे में आया जहाँ उसकी पत्नी उसका इन्तजार कर रही थी। अपनी पत्नी को सहलाने के इरादे से राजा क्रिन ने अपने शरीर को अपनी पत्नी की स्कर्ट[21] से मला।

इससे उसकी पत्नी की सारी स्कर्ट कीचड़ से लथपथ हो गयी। यह देख कर उसकी पत्नी का मन खराब हो गया। उसने राजा क्रिन को पलट कर सहलाने की बजाय पैर से मारा और बोली — "ओ गन्दे सूअर, चले जाओ यहाँ से। तुमने तो मेरी सारी स्कर्ट ही खराब कर दी।"

राजा क्रिन बोला — "तुमने मेरा अपमान किया है तुमको इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।" यह कह कर बेचारा राजा क्रिन वहाँ से चला गया।

उस रात बेकर की बेटी अपने बिस्तर में मरी पायी गयी। यह खबर सुन कर राजा बहुत दुखी हुआ। पर वह क्या करता।

फिर कुछ दिन बीत गये। अब उसका बेटा फिर से गड़बड़ करने लगा था। पूछने पर उसने फिर वही कहा — "ओयिंक, ओयिंक, मुझे एक पत्नी चाहिये। मुझे बेकर की दूसरी बेटी चाहिये।"

[21] Skirt is a dress worn with blouse under waist and normally is of knee length but can be of different lengths, even upto heel also. See its picture above.

राजा दुखी मन से बोला — "पर उसकी एक बेटी तो मर चुकी है वह तुमको अपनी दूसरी बेटी क्यों देगा।"

"मुझे नहीं मालूम पर मुझे तो वही चाहिये।"

राजा ने फिर अपने बेकर को बुलाया और उससे पूछा कि क्या वह अपनी दूसरी बेटी की शादी उसके बेटे से करना पसन्द करेगा? बेकर बेचारा क्या जवाब देता। वह तो अभी तक अपनी पहली बेटी के दुख से ही नहीं उभर पाया था।

उसने राजा को फिर वही जवाब दिया — "मैं अपनी बेटी से पूछ लूँ सरकार।" पर जब उसने अपनी दूसरी बेटी से पूछा तो आश्चर्य की बात कि वह भी उससे शादी करने के लिये राजी हो गयी।

शादी वाले दिन राजा क्रिन ने अपनी दूसरी पत्नी के साथ भी वैसा ही किया जैसा उसने अपनी पहली शादी वाले दिन अपनी पहली पत्नी के साथ किया था।

उस रात को वह सारे शहर में जा कर खुश खुश चक्कर काट कर आया और अपने शरीर में कीचड़ भी खूब अच्छी तरह लपेट कर आया।

जब वह कीचड़ में सना अपनी पत्नी के पास आया और उसकी स्कर्ट से अपना शरीर मला तो उसने भी वही कहा — "उफ़, ओ गन्दे सूअर। चले जाओ यहाँ से। तुमने तो मेरी सारी स्कर्ट ही खराब कर दी।"

यह सुन कर राजा क्रिन ने उससे भी यही कहा — "तुमने मेरा अपमान किया है तुमको इसका फल भुगतना पड़ेगा।" और अगले दिन बेकर की दूसरी बेटी भी अपने बिस्तर में मरी पायी गयी।

राजा यह सब देख कर बहुत दुखी हुआ पर कर कुछ नहीं सका। वह बेकर से बहुत शरमिन्दा था।

फिर कुछ समय निकल गया। राजा क्रिन ने फिर गड़बड़ शुरू की तो उसके पिता राजा ने उससे पूछा — "अब तुम्हें क्या चाहिये राजा क्रिन?"

"मुझे एक पत्नी चाहिये और वह भी बेकर की तीसरी बेटी।"

राजा कुछ गुस्से से बोला — "क्या तुम्हारे अन्दर अभी भी इतनी हिम्मत है कि तुम उस बेकर की तीसरी बेटी को अपनी पत्नी बनाने के लिये माँगो?"

"ओयिंक ओयिंक, मैं जरूर माँगूँगा। मुझे वह चाहिये।"

सो बेकर की तीसरी सबसे छोटी वाली बेटी को बुलवाया गया और उससे पूछा गया कि क्या वह राजा के सूअर बेटे से शादी करने के लिये तैयार थी। आश्चर्य कि बेकर की वह बेटी भी खुशी से उस सूअर से शादी करने के लिये तैयार हो गयी।

शादी के दिन फिर राजा क्रिन फिर पहले की तरह से सारे शहर का चक्कर काट कर आया और कीचड़ में लिपट कर अपनी पत्नी के कमरे में घुसा। पहले की तरह से ही उसने उसको सहलाने के लिये अपना शरीर अपनी पत्नी की स्कर्ट से मला।

पर इस लड़की ने उसको दुतकारा नहीं, वह उससे गुस्सा भी नहीं हुई बल्कि बदले में उसकी कीचड़ को अपने रूमाल से पोंछा और बोली — "मेरे सुन्दर क्रिन, मैं तुमको बहुत प्यार करती हूँ।" राजा क्रिन तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया।

अगली सुबह जब सब लोग यह सोच रहे थे कि उनको फिर से एक लाश देखने को मिलेगी पर वहाँ तो कुछ और ही निकला। बेकर की तीसरी बेटी तो बहुत खुश खुश बाहर आयी।

यह देख कर तो सभी लोग बहुत खुश हो गये और बेकर तो बहुत ही खुश हो गया क्योंकि सबसे ज़्यादा दुखी तो वही था जिसने इस शादी की वजह से अपनी दो बेटियों खो दी थीं। अब कम से कम उसकी एक बेटी तो ज़िन्दा थी और वह भी राज घराने की बहू के रूप में।

राज्य भर में खूब खुशियाँ मनायी गयीं। राजा ने भी अपने बेटे की शादी की खुशी में खूब बड़ी दावत दी।

बेकर की लड़की को राजा क्रिन के बारे में कुछ शक था सो अगली रात उसको उत्सुकता हुई कि वह राजा क्रिन को देखे। सो उस समय जब वह सो रहा था तो उसने एक मोमबत्ती जलायी और उसको देखने चली।

वहाँ जा कर उसने देखा तो वहाँ तो राजा क्रिन की बजाय एक बहुत ही सुन्दर नौजवान लेटा हुआ था। पर जब वह अपने हाथ में मोमबत्ती ले कर उसको देख रही थी तो उसकी मोमबत्ती के मोम की

एक बूँद पिघल कर उस नौजवान की बाँह पर गिर पड़ी। इससे वह नौजवान चौंक कर उठ पड़ा और बहुत गुस्सा हुआ।

वह बोला — "तुमने मेरा जादू तोड़ दिया इसलिये अब तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगी।

तुम अब मुझे तभी देख पाओगी जब तुम मुझे ढूँढते ढूँढते सात बोतल आँसू बहाओगी, सात लोहे के जूते तोड़ोगी, सात लोहे की मैन्टिल्स[22] और सात लोहे के टोप तोड़ोगी।" यह कह कर वह वहाँ से गायब हो गया।

यह सब देख कर वह लड़की बहुत दुखी हो गयी और इतनी दुखी हुई कि उसके पास उसको ढूँढने के सिवा और कोई रास्ता नहीं बचा।

वह एक लोहार के पास गयी और उसने उससे सात जोड़ी लोहे के जूते, सात लोहे के मैन्टिल्स और सात लोहे के टोप बनवाये और उनको ले कर अपने पति को ढूँढने चल दी।

वह दिन भर रोती रही और चलती रही जब तक रात नहीं हो गयी। जब रात हुई तो वह एक पहाड़ पर थी। रात को ठहरने के लिये उसने वहाँ कोई जगह ढूँढने की कोशिश की तो उसको एक मकान मिल गया। उसने उस मकान का दरवाजा खटखटाया तो एक बुढ़िया ने उसका दरवाजा खोला।

[22] A mantle is a type of loose garment usually worn over indoor clothing to serve the same purpose as an overcoat. Technically, the term describes a long, loose cape-like cloak worn from the 12th to the 16th century by both sexes. See its picture above.

एक लड़की को सामने खड़ा देख कर बोली — "ओ बेचारी लड़की, अफसोस बेटी मैं तुमको यहाँ शरण नहीं दे सकती क्योंकि मेरा बेटा हवा है। वह जब शाम को आता है तो वह घर की सारी चीज़ें उलट पलट कर देता है। जो भी उसके रास्ते में आता है वह उन सबको मिटा देता है।"

वह लड़की उससे प्रार्थना करने लगी कि वह किसी तरह से रात भर के लिये उसको वहाँ रुकने दे सुबह होते ही वह वहाँ से चली जायेगी पर इस समय वह कहाँ जायेगी। सो वह बुढ़िया उसके ऊपर दया कर के उसको घर के अन्दर ले गयी।

थोड़ी देर बाद उस बुढ़िया का बेटा हवा आ गया और आते ही बोला — "आदमी, आदमी, मुझे आदमी की बू आ रही है। कहाँ है आदमी?" पर उसकी माँ ने उसको खाना खिला कर शान्त किया।

सुबह को हवा की माँ बहुत तड़के ही उठी और लड़की को उठाया और बोली — "इससे पहले कि मेरा बेटा जागे तुम यहाँ से चली जाओ और यह चेस्टनट[23] साथ लेती जाओ। यह मेरी तरफ से तुमको एक भेंट है। जब भी तुम किसी मुश्किल में पड़ जाओ तो इसको तोड़ लेना।"

[23] Chestnut is a kind of nut like walnut, groundnut (peanut), pistachio etc nuts. People eat this nut dry roasted on fire like the ear of corn (Bhuttaa), or in a hot pan on fire, or in an oven. See its picture above.

लड़की ने वह चेस्टनट लिया, हवा की माँ को धन्यवाद दिया और अपने सफर पर चल दी। अगली रात होते होते वह एक दूसरे पहाड़ पर आ गयी। वहाँ भी उसको एक मकान मिल गया। वह उस मकान तक गयी और उसका दरवाजा खटखटाया।

वहाँ भी एक बुढ़िया ने ही उस मकान का दरवाजा खोला और बोली — "बेटी, मैं तुमको अपने घर में रख लेती पर मैं बिजली की माँ हूँ। ओह तुम बेचारी। अगर मेरा बेटा बिजली आ गया और उसने तुमको पकड़ लिया तो?"

लड़की ने उससे भी बहुत प्रार्थना की कि वह उसको केवल रात भर के लिये ठहरने की जगह दे दे इस रात में वह अकेली कहाँ जायेगी तो उसको भी उस लड़की पर दया आ गयी और वह भी उसको घर के अन्दर ले गयी।

जब बिजली घर लौटा तो उसने इधर उधर कुछ सूँघा और बोला — "आदमी? यह आदमी की बू कहाँ से आ रही है?" पर काफी ढूँढने पर भी वह उस लड़की को न पा सका। सो अपना खाना खाने के बाद वह सोने चला गया।

बिजली की माँ भी सुबह सवेरे तड़के ही उठी और उस लड़की को जगा कर उससे बोली — "इससे पहले कि मेरा बेटा जागे तुम यहाँ से चली जाओ और मेरी तरफ से यह अखरोट[24] साथ

[24] Walnut – a kind of nut like almond, pistachio, groundnut (peanut) etc. See its picture above

लेती जाओ तुम्हारे काम आयेगा। जब कभी तुम किसी भारी मुसीबत में हो तो इसको तोड़ लेना।”

लड़की ने उससे वह अखरोट ले लिया, उसको धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दी। वह फिर सारा दिन चलती रही और जब रात हुई तो अब वह एक तीसरे पहाड़ पर थी। यहाँ भी उसको एक मकान दिखायी दे गया। यह गरज का मकान था।

मकान देख कर उसने वहाँ भी उस मकान का दरवाजा खटखटाया तो वहाँ भी एक बुढ़िया ने उसका दरवाजा खोला। उसने भी अपने बेटे की वजह से उसको रात को शरण देने से मना कर दिया। पर फिर वह भी इस लड़की के काफी प्रार्थना करने के बाद उसको अन्दर ले आयी और रात भर के लिये उसे शरण दी।

शाम को जब गरज आया तो उसको भी अपने घर में आदमी की बू आयी पर ढूँढने पर भी जब उसको कोई आदमी नहीं दिखायी दिया तो वह भी खाना खा कर सोने चला गया।

सुबह को गरज की माँ भी तड़के ही उठी और उस लड़की को जगा कर बोली — “इससे पहले कि मेरा बेटा उठे तुम यहाँ से चली जाओ और मेरी तरफ से यह हैज़लनट[25] साथ लेती जाओ। जब किसी मुसीबत में फँस जाओ तो इसको तोड़ लेना।”

[25] Hazel nut is a kind of nut like chestnut, walnut, ground nut (peanut) etc. See its picture above.

लड़की ने उस बुढ़िया से वह हैज़लनट लिया, उसे धन्यवाद दिया और फिर अपने सफर पर चल दी। वह मीलों चलती रही और चलते चलते एक शहर में आ गयी।

वहाँ आ कर उसने सुना कि वहाँ की राजकुमारी की शादी एक सुन्दर नौजवान से होने वाली थी जो उसी राजकुमारी के किले में रहता था। इस लड़की को कुछ ऐसा लगा कि यही उसका पति था सो उसको इस शादी को रोकने के लिये कुछ करना था, पर वह क्या करे? वह किले में अन्दर कैसे घुसे?

उसको चैस्टनट की याद आयी तो उसने वह चैस्टनट निकाल कर तोड़ दिया। उसके अन्दर से बहुत सारे हीरे जवाहरात निकल कर नीचे बिखर गये।

उसने वे सब हीरे जवाहरात बटोरे और उनको ले कर राजकुमारी के महल की खिड़की को नीचे बेचने के लिये ले गयी और आवाज लगाने लगी — "हीरे जवाहरात ले लो। बहुत सुन्दर हीरे जवाहरात ले लो।"

राजकुमारी ने अपनी खिड़की से नीचे झाँका तो एक लड़की को हीरे जवाहरात बेचते पाया। उसने उस लड़की को अपने महल में बुला लिया और उससे उन हीरे जवाहरातों की कीमत पूछी।

लड़की बोली — "मैं ये सारे हीरे जवाहरात आपको मुफ्त दे दूँगी अगर आप मुझको अपने महल में ठहरे हुए नौजवान के सोने के कमरे में एक रात गुजारने की इजाज़त दे दें तो।"

यह सुन कर राजकुमारी डर गयी कि शायद यह लड़की उसके होने वाले पति से बात करे और उसको वहाँ से भगाने की कोशिश करे।

पर उसकी दासी ने कहा — "आप यह सब मेरे ऊपर छोड़ दीजिये। हम उस नौजवान को सोने वाली दवा खिला देंगे और वह रात भर सोता ही रहेगा, उठेगा ही नही। तो ऐसी हालत में यह कर ही क्या सकती है?"

सो उन्होंने यही किया। जब वह नौजवान सोने गया तो दासी ने उसको खाने के साथ सोने वाली दवा खिला दी और वह जा कर गहरी नींद सो गया।

दासी रात को उस लड़की को भी उस नौजवान के कमरे में छोड़ आयी। वहाँ जा कर लड़की ने देखा कि वह तो और कोई नहीं उसका अपना पति ही था। उसको देख कर वह बहुत खुश हुई कि उसको उसका खोया हुआ पति मिल गया।

कुछ रात बीतने पर वह उसके पास गयी और उसको जगाने लगी — "उठो देखो, मैं तुम्हारे लिये कितनी दूर चल कर आयी हूँ। मेरे सात लोहे के जूते फट गये हैं। सात लोहे के मैन्टिल्स और सात लोहे के टोप भी टूट गये हैं। मैंने सात बोतल आँसू भी बहाये हैं। इस सबके बाद ही मैंने तुम्हें देखा है। उठो, उठो।"

वह सुबह तक उसको उठाती रही पर राजकुमार तो उस सोने वाली दवा के असर से ऐसा सोया ऐसा सोया कि उसकी तो आँख ही नहीं खुली।

जब लड़की का धीरज छूट गया तो सुबह उसने अखरोट तोड़ दिया। उस अखरोट में से एक के बाद एक सिल्क और कई तरह के कपड़ों के सुन्दर सुन्दर गाउन निकलने लगे। हर नया गाउन[26] उससे पहले वाले गाउन से कहीं ज़्यादा सुन्दर और कीमती होता।

जब दासी सुबह आयी तो वह तो यह तमाशा देख कर हक्का बक्का रह गयी कि उस लड़की के चारों तरफ गाउन ही गाउन बिखरे पड़े हैं। वह तुरन्त भागी भागी राजकुमारी के पास गयी और जा कर उसे सब बताया।

राजकुमारी भी यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और वह भी तुरन्त दौड़ी दौड़ी दासी के पीछे पीछे वहाँ आयी जहाँ उस लड़की ने अपने चारों तरफ इतने सारे गाउन फैला रखे थे।

उन सब गाउन को देख कर उसका मन ललचा गया और उसने उस लड़की से उन सब गाउन की कीमत पूछी। लड़की ने फिर वही शर्त रखी कि अगर वह उसको उस नौजवान के कमरे में एक रात और सोने देगी तो वह वे सारे गाउन उसको मुफ्त दे देगी।

[26] A gown is a long heel-length robe made of expensive cloth and richly decorated or embroidered normally for party purposes – see its picture above.

इस बार भी राजकुमारी ने दासी के कहने पर उस लड़की को उस नौजवान के कमरे में सोने भेज दिया। और इस बार भी उन्होंने उस नौजवान को बेहोशी की दवा खिला कर सुला दिया।

पर इस बार उस लड़की को देर से उसके कमरे में ले जाया गया और जल्दी ही निकाल लाया गया सो उसकी यह दूसरी रात भी बेकार गयी और वह उसको न उठा सकी।

अब उस लड़की के पास केवल एक ही गिरी बची थी – हैज़लनट। कोई और चारा न देख कर उसने उस गिरी को भी तोड़ दिया। उस गिरी में से बहुत सारे घोड़े गाड़ियाँ निकल पड़े।

राजकुमारी ने उनको लेने के लिये जब कीमत पूछी तो उस लड़की ने उनकी भी वही कीमत माँगी कि वह उसको अगर उस नौजवान के कमरे में एक रात सोने दे तो वह उन सबको उसको मुफ्त ही दे देगी। राजकुमारी फिर राजी हो गयी।

राजा दो रात से कुछ अजीब सा महसूस कर रहा था सो उसको लगा कि उसके खाने में कुछ था जिसकी वजह से उसको ऐसा महसूस हो रहा था सो उस दिन भी राजकुमार को जब खाने के बाद वह दवा दी गयी तो राजकुमार ने उसको खाने का बहाना तो किया पर उनकी निगाह बचते ही फेंक दिया और जा कर सो गया।

रात को जब उस लड़की ने उससे फिर से बात की तो वह तुरन्त ही उठ गया। उसने देखा कि वहाँ तो उसकी पत्नी बैठी थी। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गया।

उन घोड़ों और गाड़ियों के साथ उन दोनों को वहाँ से भागने में कोई परेशानी नहीं हुई। वे लोग अपने घर पहुँच गये और घर में खूब खुशियाँ मनायी गयीं।

4 राजकुमार सूअर[27]

सूअर राजा जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी फ्रांस की एक लेखिका की लिखी हुई कहानी है जो इससे पहले दी गयी इटली देश की कहानी को काफी बढ़ा चढ़ा कर लिखी गयी है। इसे 1892 में प्रकाशित किया गया था। तो लो पढ़ो यह कहानी अब हिन्दी में।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जो बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था। रानी अब बूढ़ी होती जा रही थी सो उसने बच्चे की आशा तो छोड़ ही दी थी।

पर इस बात से वह बहुत दुखी रहती थी। उसको रातों को नींद नहीं आती थी। वह हमेशा ही आह भरती रहती और सब देवताओं और परियों से रोज पार्थना करती कि वे उसकी इच्छा पूरी करें।

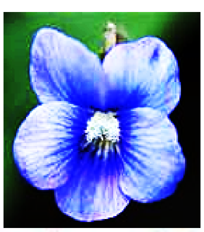

एक दिन जब वह वायलेट और गुलाब के फूल चुनने के बाद एक जंगल में घूम रही थी तो उसने कुछ स्ट्रौबैरी भी तोड़ लीं। वे इतनी सुन्दर थीं कि उसने उनको वहीं तुरन्त ही खा लिया।

[27] Prince Marcassin – a fairy tale written by a French writer Madame d'Aulnoy in 1892 based on the Italian fairy tale "The King Pig", given before in this book, extended greatly. Marcassin is a French word for pig. Taken from the Web Site : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=36&tale=894

जैसे ही उसने उनको खाया कि उसको कुछ नींद सी आने लगी। वह एक पेड़ के नीचे लेट गयी और सो गयी। उसी समय उसको सपना आया कि उसके सिर के ऊपर तीन परियाँ उड़ रही हैं और वह भी उन तीन परियों के साथ ही उड़ रही है।

उनमें से एक परी ने उसकी तरफ दया से देखा ओर बोली "देखो यह एक बहुत दुखी रानी है अगर हम इसको एक बच्चा दे देंगे तो हम इसके लिये एक बहुत बड़ा काम करेंगे।"

दूसरी परी बोली "हाँ हाँ दे दो। तुम सबसे बड़ी हो।"

सो सबसे बड़ी परी बोली "मै इसको एक ऐसा बच्चा देती हूँ जो बहुत सुन्दर हो, सबका बहुत प्यारा हो और दुनियाँ में सब उसको बहुत प्यार करें।" इस तरह उनमें से एक परी ने उसको एक सुन्दर सा बेटा दिया।

दूसरी परी बोली "मैं इसको यह वर देती हूँ कि इसका यह बेटा जो भी काम करे इसको उसमें खुशी मिले। वह अपने हर काम में सफल हो, समझदार हो, ताकतवर हो और न्यायपूर्ण हो।"

पर जब तीसरी परी के वर देने का समय आया तो वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ी। उसने अपने होठों ही होठों में कुछ कहा जो रानी सुन नहीं सकी।

यही उसका सपना था। कुछ देर बाद ही उसकी आँख खुल गयी। जागने पर उसको न तो हवा में ही कुछ दिखायी दिया और न ही जंगल में। वह सोचने लगी कि पता नहीं मेरा यह सपना सच भी

होगा या नहीं। मैं देवताओं और परियों को बहुत धन्यवाद दूँगी अगर मेरे एक बेटा हो जाये।

वह बहुत खुश थी। इस खुशी में उसने कुछ और फूल चुने और महल वापस लौट आयी। जब रानी घर लौटी तो राजा ने देखा कि रानी आज बहुत खुश है तो उसने उससे पूछा कि आज वह इतनी खुश क्यों है।

उसने राजा से कहा कि यह उसके जानने की बात नहीं है पर जब राजा ने उसको यह बताने के लिये काफी ज़ोर दिया तो उसने उससे कहा "यह तो बस एक सपना था। आप तो उसको केवल मेरी बेवकूफी ही कहेंगे।"

फिर रानी ने राजा को बताया कि वह जंगल में सो गयी थी। वहाँ उसने तीन परियाँ हवा में उड़ती देखीं। उनमें से दो परियों ने क्या कहा यह तो उसने उसको बता दिया पर उसने कहा कि तीसरी परी बहुत ज़ोर से हँस पड़ी थी और उसने क्या कहा यह वह नहीं सुन सकी।

राजा उसका सपना सुन कर बोला "यह सपना जितना तुम्हारे लिये अच्छा है उतना ही मेरे लिये भी अच्छा है। पर यह हँसने वाली परी ने मुझे कुछ परेशान कर दिया है क्योंकि बहुत सारी परियाँ शरारत करती रहती हैं और उनका हँसना हमेशा ही अच्छा नहीं होता।"

रानी बोली “मेरे लिये तो उसका हँसना कुछ ज़्यादा मायने नहीं रखता। मेरे लिये न तो वह अच्छा ही है और न ही वह बुरा है। मेरे दिमाग में तो बस एक ही बात है कि मेरे एक बेटा हो जाये। और मैं तो यह सोच कर ही जाने क्या क्या सोचती रहती हूँ कि मेरे एक बेटा हो जायेगा।

इसके अलावा उसको क्या हो सकता है। क्योंकि अगर मेरे सपने में ज़रा सी भी सच्चाई है तो उसको तो उन परियों के अनुसार बहुत सारी अच्छी अच्छी चीज़ें मिलेंगी। बस भगवान मेरी यह इच्छा पूरी करे।”

यह कह कर वह रो पड़ी। राजा ने उसको तसल्ली दी कि वह रानी को बहुत प्यार करता था और शायद उसकी इसी इच्छा ने उसके इस सपने को जन्म दिया था।

कुछ समय बाद रानी को लगा कि उसको बच्चे की आशा हो गयी है। सारे राज्य में यह बात फैला दी गयी कि सब लोग रानी के बच्चे के लिये प्रार्थनाऐं करें। सारी वेदियों से बलि का धुँआ उड़ने लगा। दूसरे राजाओं से राजा के लिये बधाई के सन्देश आने लगे।

जब रानी बच्चे को जन्म देखने वाली थी तो राजा के सब सम्बन्धी, दरबारी और बहुत सारे लोग राजा के दरबार में मौजूद थे। बच्चे के लिये बहुत अच्छे कपड़े और बहुत अच्छी आया सभी कुछ बहुत अच्छे का इन्तजाम था।

पर जब रानी ने बच्चे को जन्म दिया तो सब लोगों की खुशी दुख में बदल गयी क्योंकि उन्होंने सुना कि रानी ने एक राजकुमार के बदले एक जंगली सूअर को जन्म दिया है।

सबके मुँह से एक चीख निकल गयी जिससे रानी डर गयी। उसने पूछा कि क्या बात थी, लोग क्यों चिल्लाये पर किसी को उसको यह बात बताने की हिम्मत नहीं हुई कि उसने एक जंगली सूअर को जन्म दिया है कि कहीं ऐसा न हो कि रानी दुख से मर जाये।

इसलिये उसको यही बताया गया कि वह खुशी मनाये कि उसने एक सुन्दर राजकुमार को जन्म दिया है।

पर राजा यह देख कर बहुत परेशान था। उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वह उस सूअर को एक थैले में रख कर समुद्र में फेंक दें ताकि ऐसी बदकिस्मत घटना की कोई याद भी बाकी न रह जाये।

पर फिर उसको दया आ गयी। उसने दोबारा सोचा कि इस काम को करने से पहले रानी से सलाह ले लेनी चाहिये। सो उसने उसको पालने के लिये लोगों को दे दिया और उस समय का इन्तजार करने लगा जब रानी इस धक्के को सहने के लायक हो जाये और उसके मरने का डर न रहे।

रानी रोज अपने बेटे के बारे में पूछती तो वे कहते कि राजकुमार उसके कमरे में लाने के लिये अभी बहुत ही कमजोर और नाज़ुक हैं। जब वह थोड़े से ठीक और तन्दुरुस्त हो जायेंगे तब उनको रानी के पास तुरन्त ही ले आया जायेगा। यह सुन कर वह चुप हो जाती।

उधर राजकुमार सूअर की भूख बहुत थी जैसी कि किसी जंगली सूअर की होती है। राजा को उसको पालने के लिये छह आयाऐं रखनी पड़ीं। इनमें से अंग्रेजी फैशन के अनुसार तीन आयाऐं सूखी[28] थीं। वे आयाऐं उसको हमेशा स्पेन की शराब पिलातीं और दूसरे बहुत अच्छे पेय पिलातीं। इससे उसको बहुत जल्दी ही बढ़िया शराब की पहचान हो गयी।

उधर रानी का अब धीरज छूटता जा रहा था। उसने राजा से कहा कि अगर उसका बेटा उसके कमरे तक नहीं आ सकता तो कम से कम वह तो अब उसको देखने के लिये उसके कमरे तक जाने के लिये ठीक थी। अब वह और ज़्यादा अपने बेटे को देखे बिना नहीं रह सकती थी सो वह उसको देखना चाहती थी।

राजा ने एक लम्बी साँस भरते हुए राजकुमार को रानी के पास लाने का हुक्म दे दिया। उसको बहुत बढ़िया ब्रोकेड[29] के कपड़े में

[28] Translated for the words "Dry Nurses". Dry nurse is she who looks after a baby but does not breastfeed him or her.

[29] Brocade is a kind of very expensive and rich cloth woven in gold and silver thread.

लपेट कर लाया गया। रानी ने उसको अपनी बाँहों में लिया और उसके सिर पर से जाली हटायी।

उफ कितना भयानक दृश्य था। उस समय तो ऐसा लग रहा था जैसे बस यही उसकी ज़िन्दगी का आखिरी पल था। उसने राजा की तरफ बहुत ही दुखी नज़रों से देखा पर उसका एक शब्द भी बोलने का साहस नहीं हुआ।

यह देख कर राजा बोला — "प्रिये तुम दुखी न हो। हम अपनी इस बदकिस्मती के लिये तुमको बिल्कुल भी जिम्मेदार नहीं ठहराते। निश्चित रूप से यह उनमें से किसी नीच परी की नीच चाल है। अगर तुम मुझसे राजी हो तो फिर मैं अपना पहला प्लान शुरू करूँ और इसको पानी में डुबो दूँ?"

रानी एक आह भर कर बोली — "प्रिय इतने बेरहम भी न बनो। मैं इस बदकिस्मत सूअर की माँ हूँ। यह मेरा बच्चा है और मैं इसे प्यार करती हूँ। मैं तुमसे इसकी ज़िन्दगी की भीख माँगती हूँ इसे कोई नुकसान मत पहुँचाओ।

इस बेचारे ने तो पहले ही जंगली सूअर के रूप में जन्म ले कर बहुत सहा है जबकि इसको एक आदमी होना चाहिये था। अब इसको और तंग मत करो।"

इतना कह कर वह रो पड़ी। राजा उसके आँसू देख कर बहुत दुखी हुआ और उसका तर्क सुन कर उसने निश्चय किया कि वह वही करेगा जो उसकी रानी ने उससे कहा था।

उस सूअर को पालने पोसने के लिये जो आयाएं रखी गयी थीं वे अब उसकी और भी ज़्यादा अच्छी तरीके से देखभाल करने लगीं।

क्योंकि अब तक वे उसको एक गन्दे जानवर की तरह से देखती थीं जिसको कि कभी भी मछलियों का चारा बना कर फेंका जा सकता था पर अब वह बिल्कुल राजकुमार की तरह पलने लगा।

उस सूअर में एक खासियत थी कि वह इतना बदसूरत होने के बावजूद बहुत अक्लमन्द था। उसकी आयाओं ने उसको अपना पंजा उनके हाथों में देना सिखाया जो उसको सलाम करने के लिये आते थे। उन्होंने उसके हाथों में हीरे के ब्रेसलैट पहनाये।

इस सबके साथ वह और भी जो कुछ करता था उस सबमें एक शान रहती थी।

रानी उसको बहुत प्यार करती थी। वह अक्सर उसको अपनी गोद में लिये रहती। वह उसको अपने दिल में बहुत सुन्दर लगता पर वह यह बात किसी से कह नहीं सकती थी कि कहीं ऐसा न हो कि लोग उसको पागल कहने लगें। पर यह बात उसने अपनी दोस्तों से जरूर कही कि वह उसको बहुत ही अच्छा लगता था।

वह उसको बहुत सारी गाँठ लगे गुलाबी रिबन से सजा कर रखती। उसके कान भी छिदवाये गये। उसके गले में रस्सी भी

बाँधी गयी ताकि वे उसको उसके पीछे वाले पैरों पर चलना सिखा सकें।

उन्होंने उसको जूते भी पहनाये। उसके घुटनों पर रेशमी मोजे भी पहनाये ताकि उसकी टाँगें लम्बी लगें। जब वह चिल्लाता तो उसको पीटा जाता। उसके लिये वे सब तरीके इस्तेमाल किये जाते जिससे उसकी जंगली सूअर जैसी आदतें कुछ कम हो सकें।

एक दिन रानी उसको गोद में लिये बाहर टहल रही थी तो इत्तफाक से वह उसी पेड़ के नीचे से गुजरी जहाँ वह सो गयी थी और जहाँ उसने अपना सपना देखा था।

उसे तुरन्त ही उस सपने की याद आ गयी। सो वह बोली "देखो परियों, यह है वह राजकुमार, इतना सुन्दर, इतना अच्छा और इतना खुश जो मेरे होने वाला था।

ओ बेकार के सपने, ओ मुझे मारने वाले सपने, ओ परियों मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो तुमने मेरा मजाक बनाया?"

जब वह यह सब बड़बड़ा रही थी तभी उसने देखा कि एक ओक का पेड़[30] जमीन में से निकल रहा था। उसमें से एक बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने एक स्त्री निकली।

उसने रानी की तरफ प्यार से देखा और बोली "रानी तुम इस सूअर को जन्म दे कर दुखी न हो। मैं तुमको विश्वास दिलाती हूँ कि एक दिन ऐसा आयेगा जब यह तुमको बहुत सुन्दर दिखायी देगा।"

---

[30] Oak tree is a large shady tree.

रानी ने उस स्त्री को ध्यान से देखा तो उसने उसे पहचान लिया कि वह तो उन तीन परियों में से एक थी जो उस दिन हवा में उड़ रही थीं जब वह वहाँ सो रही थी। और जिन्होंने उसके लिये एक बेटे की इच्छा की थी।

रानी बोली — "मुझे तुम्हारा बिल्कुल भी भरोसा नहीं है। यह मेरा बेटा कितना भी अक्लमन्द क्यों न हो जाये पर उसे उसकी इस शक्ल से कौन प्यार करेगा।"

परी फिर बोली — "तुम ऐसे बच्चे को जन्म देने पर दुखी न हो रानी। मैं तुमको एक बार फिर विश्वास दिलाती हूँ कि एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जब यह तुमको बहुत सुन्दर दिखायी देगा।"

यह कह कर तुरन्त ही वह उसी ओक के पेड़ में गायब हो गयी और वह ओक का पेड़ भी तुरन्त ही धरती में चला गया। अब वह जगह इतनी साफ पड़ी थी कि ऐसा लगता ही नहीं था कि वहाँ कभी कोई पेड़ निकला था।

इस नयी घटना से तो रानी का आश्चर्य और भी ज़्यादा बढ़ गया और उसको यह आशा बँध गयी कि अब वे परियाँ उसके शाही जानवर बेटे सूअर की खास तरीके से देखभाल करेंगी।

तुरन्त ही वह इस घटना के बारे में राजा को बताने के लिये घर की तरफ लौट पड़ी। पर राजा ने यह सुन कर सोचा कि उसकी रानी ने यह कहानी अपने बेटे को दूसरों की नफरत से बचाने के लिये गढ़ी है।

रानी भी जान गयी कि राजा उसकी बातें कैसे सुन रहा था सो वह बोली — "मुझे मालूम है कि तुम मेरी बातें कैसे सुन रहे हो। मुझे लग रहा है कि जो कुछ भी मैं तुमसे कह रही हूँ तुम उनका विश्वास ही नहीं कर रहे हो। पर ये बातें जो मैंने तुमसे कही हैं बिल्कुल सही हैं।"

राजा बोला — "प्रिये तुम नहीं जानतीं कि इन परियों का मजाक सहना कितना मुश्किल काम है। वह हमारे बच्चे को जंगली सूअर की बजाय कोई और जानवर क्यों नहीं बना सकती थीं। मुझे तो उसके बारे में सोच सोच कर ही दुख होता रहता है।"

यह सुन कर रानी वहाँ से और ज़्यादा दुखी हो कर चली गयी। वह सोचती रही कि उसने तो यह सब राजा को इसलिये बताया था कि परियों का यह कहना शायद राजा का दुख कुछ कम कर सके पर वह तो उनकी बात सुन ही नहीं रहा था।

यह सोच कर वह चुप हो गयी और उसने अपने बेटे के बारे में उससे फिर बात न करने का निश्चय कर लिया। उसने सोचा कि अब तो भगवान ही उसके पति को तसल्ली देगा।

X X X X X X X

अब उस राजकुमार सूअर ने बोलना शुरू कर दिया था। वह भी दूसरे बच्चों की तरह तुतलाता था पर इस बात से रानी का प्यार

उसके लिये कम नहीं हो गया था क्योंकि रानी को तो यही शक था कि वह पता नहीं बोलेगा भी या नहीं।

वह बहुत लम्बा हो गया था और अब अपने पिछले पैरों पर खड़े हो कर चलता था। वह अपने शरीर को ढकने के लिये लम्बे कपड़े पहनता था और अपने सिर को और अपनी थूथनी[31] के कुछ हिस्से को ढकने के लिये काली मखमल का अंग्रेजी टोप पहनता था।

उसके दाँत वाकई में बहुत भयानक थे और उसके बाल भी बहुत ही डरावने ढंग से खड़े रहते थे। वह बहुत ही घमंडी दिखायी देता था और वह जहाँ भी होता था वहाँ ऐसा लगता था जैसे बस वही वहाँ का राजा हो।

वह अपना खाना सोने के कटोरे में खाता था जिसमें उसके लिये खास खाना तैयार किया जाता था। फिर उसको खाने के लिये उसको तौर तरीके सिखाये जाते थे। उसका दिमाग वाकई बहुत तेज़ था और वह बहुत साहसी भी था।

राजा उसके इन गुणों को बहुत अच्छी तरह जान गया था सो उसने उसकी और ज़्यादा अच्छी तरह से देखभाल करनी शुरू कर दी। अब वह उसको जो कुछ सिखाना चाहता था उसको उसने उसको सिखाने की भी अपनी पूरी कोशिश करनी शुरू कर दी।

---

[31] Translated for the word “Snout”

सूअर सुन्दर नाच नहीं नाच सकता था पर वह दूसरे नाच नाच लेता था। संगीत के वाद्यों में उसको गिटार और बाँसुरी अच्छे लगते थे जिनको वह अच्छा बजाता भी था।

वह घोड़े की सवारी बड़ी शान से और बहुत अच्छी करता था। कोई दिन ऐसा नहीं जाता था जिस दिन वह शिकार खेलने न जाता हो। वह भयानक से भयानक जानवरों पर अपने भयानक दाँतों से खूब वार करता। उसके गुरूओं ने उसको विज्ञान की भी बहुत अच्छी शिक्षा दी थी।

पर बहुत जल्दी ही उसको अपना सूअर का चेहरा उसकी अपनी हँसी उड़ाता नजर आता सो वह लोगों के बहुत बड़े बड़े समूहों में जाने से कतराता था।

X X X X X X X

उसकी ज़िन्दगी बहुत अच्छी बीत रही थी कि एक दिन जब वह अपनी माँ के पास बैठा हुआ था तो उसने एक स्त्री को आते देखा। वह स्त्री बहुत सुन्दर थी और उसके पीछे पीछे तीन लड़कियाँ आ रही थीं। वे लड़कियाँ भी बहुत सुन्दर थीं।

वह स्त्री आ कर रानी माँ के पैरों पर गिर पड़ी और उसने उनसे उनके राज्य में जगह माँगी। उस स्त्री का पति मर गया था जिससे

वह बहुत ही गरीब और दुखी हो गयी थी। उसको पूरी आशा थी रानी के राज्य में उसको शरण मिल जायेगी।

उसके इस तरह से अपने पैरों में पड़ जाने से रानी का दिल भर आया। उसने उन सबको गले लगा लिया और अपने राज्य में शरण दे दी। उन तीनों लड़कियों में से सबसे बड़ी लड़की का नाम था इसमीन, दूसरी का नाम था ज़ैलोनीड और तीसरी सबसे छोटी का नाम था मारथीसी[32]।

रानी ने उस स्त्री से वायदा किया कि वह उसकी उन तीनों बेटियों की बहुत अच्छी तरह से देखभाल करेगी और उसको उन लडकियों की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

रानी माँ ने उस स्त्री को भी कहा कि उसको भी कहीं और जाने की जरूरत नहीं है वह खुद भी वहीं रह सकती है और उसको किसी बात की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। उसको भी वह उसी इज़्ज़त से रखेगी जैसे वह उसकी बेटियों को रखेगी।

उन लड़कियों की माँ तो रानी से बहुत प्रभावित हो गयी और उसने उसके हाथ कई बार चूम लिये। इस शरण पाने से अब उसको बहुत शान्ति मिल गयी थी।

[32] Ismene was the name of the eldest girl of the woman, Zelonide was the name of the second girl of the woman and Marthesie was the name of the third and the youngest girl of the woman

इसमीन की सुन्दरता की चर्चा सारे दरबार में फैलने लगी। दरबार में एक नौजवान नाइट[33] था जिसका नाम था कौरीडौन[34]।

कौरीडौन भी अपने तरीके से बहुत मशहूर था। उन दोनों को आपस में प्यार हो गया। वह नाइट बहुत ही अच्छे स्वभाव का था और सब उसको बहुत पसन्द करते थे।

रानी ने देखा कि इसमीन और कौरीडौन दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते हैं। इस बीच राजकुमार सूअर भी इसमीन को चाहने लगा था पर उसकी इसमीन से कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई।

उसने अपने आपको शीशे में देखा और गुस्से में चिल्लाया — "ओह सूअर ओह सूअर। क्या तुम्हारे इस चेहरे के साथ इसमीन तुम्हारे बारे में कुछ भी सोचेगी? तुम्हें तो अपने प्रेम को छिपाना ही होगा।"

पर वह जितना उससे बचने की कोशिश करता वह उसके दिमाग पर उतनी ही और चढ़ती जाती। इस पशोपेश में वह बहुत दुखी रहने गया और इतना कमजोर हो गया कि उसकी हड्डियाँ निकल आयीं।

मगर उसकी परेशानी और बढ़ गयी जब उसने देखा कि कौरीडौन इसमीन से खुले आम प्यार कर रहा था। इसमीन भी

---

[33] Knight – a Knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.
[34] Coridon – name of the knight

उसको बहुत प्यार करती थी। सो जल्दी ही राजा और रानी उन दोनों की शादी की तैयारी करने लगे।

यह सुन कर राजकुमार सूअर के प्यार ने और ज़ोर मारा। उसको इसमीन को खुश करना ज़्यादा आसान लगा क्योंकि अब इसमीन को ज़्यादा चिन्ता नहीं थी क्योंकि अब उसकी शादी कौरीडौन से होने ही वाली थी।

अब राजकुमार सूअर को यह भी समझ में आ गया था कि अब अगर वह चुप रहा तो यह उसके लिये बहुत ही खतरनाक साबित हो सकता है। सो एक दिन उसने इसमीन से अपनी बात कहने का मौका ढूँढ ही लिया।

एक दिन इसमीन एक पेड़ के नीचे बैठी हुई अपने प्रेमी का लिखा हुआ एक गीत गा रही थी जो उसने उसी के लिये लिखा था कि राजकुमार सूअर वहाँ पहुँच गया।

वह उसके पास बैठता हुआ बोला — "क्या यह सच है जैसा कि मैंने सुना है कि तुम कौरीडौन से शादी कर रही हो?"

उसने जवाब दिया कि रानी ने उसको उसका कहा मानने के लिये कहा है सो वह आशा करती है कि उसकी शादी कौरीडौन से हो जानी चाहिये।

राजकुमार सूअर ने कहा — "इसमीन तुम इतनी छोटी हो कि मुझे नहीं लगता कि उनका मतलब तुम्हारी शादी उससे कर देने का है। अगर मुझे पहले पता होता तो मैं तुमको राजा के एकलौते बेटे

से शादी करने के लिये कहता जो तुमको बहुत प्यार करता है और तुमको बहुत खुश रखेगा।"

यह सुन कर तो इसमीन पीली पड़ गयी। उसने यह पहले से ही देख लिया था कि राजकुमार सूअर उससे बहुत ही नम्रता से बात करता था जितना कि वह जंगल से सीख कर आया था। वह उसको अपने टोप में लगे फूल भी देता था।

उसको देख कर वह डर गयी कि कहीं ऐसा न हो कि यह सूअर कहीं वही राजकुमार सूअर हो जिसके बारे में वह बात कर रहा हो।

वह बोली — "जनाब मैं बहुत खुश हूँ कि मुझे राजा के बेटे की भावनाओं के बारे में कुछ भी पता नहीं है। यह इसलिये भी हो सकता है कि मेरे परिवार ने जो मुझसे भी बहुत ज़्यादा अच्छी तरह सोचता है मुझे उससे शादी करने के लिये कहा है जिसको मैं प्यार करती हूँ। पर वैसे मैं आपको बता दूँ कि मेरा दिल कौरीडौन का है और वह किसी दूसरे का हो ही नहीं सकता।"

राजकुमार सूअर बोला — "क्या तुम एक ताज पहने सिर को जो तुम्हारे कदमों में अपनी सारी दौलत रख देगा उस कौरीडौन के लिये छोड़ दोगी?"

इसमीन बोली — "ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं उसके लिये न छोड़ सकूँ। अच्छा होगा कि आप मुझे मेरे हाल पर छोड़ दें।"

राजकुमार सूअर चिल्लाया — "ओ बेरहम। तुम उस राजकुमार को अच्छी तरह जानती हो जिसके बारे में मैं तुमसे बात कर रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि उसका चेहरा तुमको अच्छा नहीं लगता।

इसके अलावा तुमको रानी सूअर कहलाने में भी अच्छा नहीं लगेगा और तुम उस नाइट की बहुत वफादार भी हो पर ज़रा हम दोनों के बीच के फर्क के बारे में भी तो सोचो।

मैं ऐडोनिस[35] तो नहीं हूँ पर मैं एक अच्छा लगने वाला जंगली सूअर जरूर हूँ। सबसे ऊँची ताकत तो सबसे ऊँची ताकत ही होती है सो इसमीन एक बार फिर सोचो। तुम मुझे नाउम्मीद न करो।"

जब वह यह सब कह रहा था तो उसकी आँखों से आग निकल रही थी और उसको लम्बे दाँत आपस में कटकटा रहे थे। उनकी आवाज से तो इसमीन बेचारी काँप ही गयी।

राजकुमार सूअर तो इतना कह कर वहाँ से चला गया पर उसके जाने के बाद इसमीन वहीं बैठी बैठी बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। कि तभी कौरडौन वहाँ आ गया।

अभी तक उन्होंने केवल खुशी के पल ही साथ साथ बिताये थे। ऐसी परेशानी का समय उनकी ज़िन्दगी में अभी तक आया ही नहीं था। वे तो बस यही आशा लिये बैठे थे कि जल्दी ही उनकी शादी हो जायेगी।

[35] Adonis – Adonis is a Greek mythological figure. He is ever youthful vegetation god. In 600 BC the Cult of Dying Adonis was fully developed.

ज़रा सोचो कि अपनी प्रेमिका को इस तरह रोते देख कर कौरीडौन का क्या हाल हुआ होगा। उसने इसमीन से पूछा कि वह इतना क्यों रो रही थी। उसने उसको जब सारा हाल बताया तो वह खुद भी दुख के सागर में डूब गया।

वह बोला — "मैं तुम्हारी खुशी की कीमत पर अपनी खुशी हासिल नहीं कर सकता इसमीन। तुमको ताज मिल रहा है तुमको उसे स्वीकार कर लेना चाहिये।"

वह चिल्ला कर बोली "क्या कहा तुमने? मुझे उसे स्वीकार कर लेना चाहिये? मैं तुमको भूल जाऊँ और उस राक्षस[36] से शादी कर लूँ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम हमारे प्यार के लिये ऐसी सलाह दे रहे हो?"

कौरीडौन बेचारा इस बात का कोई जवाब नहीं दे सका पर वह भी उससे अपने दिल का हाल छिपा नहीं सका उसकी ऑखों से भी ऑसू टपकने लगे।

इसमीन भी उसके दिल की हालत समझ गयी सो उसने उससे सैंकड़ों बार कहा कि अगर उसको दुनियाँ के सारे राजा भी मिल जायें तो भी वह अपना इरादा नहीं बदलेगी।

कौरडौन ने भी उससे सैंकड़ों बार कहा कि वह उसको दुख से मरने के लिये छोड़ दे और वह खुद ताज स्वीकार कर ले पर वह राजी नहीं हुई।

[36] Translated for the word "Monster"

जब इधर यह सब चल रहा था राजकुमार सूअर अपनी माँ के पास बैठा कह रहा था कि उसके प्रेम का इलाज केवल इसमीन ही थी पर इसमीन के कौरडौन के लिये प्रेम ने उसका मुँह बन्द कर रखा था।

हालाँकि अपनी इन भावनाओं से वह बेकार ही काफी समय तक लड़ता रहा पर बाद में उसको लगा कि अब वह उससे यह सब कहे बिना नहीं रह सकता सो उसकी शादी की शाम को वह उसके पास गया और जा कर उससे कह ही दिया कि या तो वह उससे शादी कर ले नहीं तो वह मर जायेगा।

रानी के तो आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही जब उसको पता चला कि उसका सूअर बेटा प्रेम में पड़ा हुआ था। रानी ने दुखी हो कर उससे पूछा "तुमको कौन पसन्द करेगा बेटा और फिर तुम उसके साथ किस तरह के बच्चों की आशा रखते हो?"

राजकुमार सूअर बोला — "इसमीन बहुत सुन्दर है माँ और उसके बच्चे तो बदसूरत हो ही नहीं हो सकते। और अगर वे मेरी शक्ल के भी हुए तो भी मैं उनको उस रूप में देखना ज़्यादा पसन्द करूँगा बजाय इसमीन को दूसरे की बाहों में देखने के।"

रानी फिर बोली — "क्या तुमको अपने राजकुमार होने का भी कुछ अन्दाज है जो तुम उस नीचे परिवार की लड़की से शादी करना चाहते हो?"

राजकुमार सूअर फिर बोला — "तो फिर कौन सी राजकुमारी मेरे लिये है जो सुन्दर भी हो और वह मुझ जैसे सूअर से शादी भी करे?"

रानी बोली — "बेटे, तुम गलती पर हो। राजकुमारियाँ तो अपना पति चुनने के लिये आजाद होती हैं। हम तुमको बहुत सुन्दर बतायेंगे और जब तुम्हारी शादी हो जायेगी तो वह लड़की तो फिर हमारे पास ही रहेगी सो वह फिर मजबूरन हमारे पास ही रहेगी। वह कहाँ जायेगी।"

राजकुमार सूअर बोला — "मैं ऐसी चाल के लिये राजी नहीं हूँ माँ। मैं अपनी पत्नी को दुखी देख कर तो खुद ही बहुत दुखी हो जाऊँगा।"

यह सुन कर रानी ज़ोर से चिल्लायी — "पर तुम यह कैसे सोच सकते हो कि जिसे तुम प्यार करते हो वह तुम्हारे साथ कुछ ऐसा वैसा नहीं करेगी?

उसका प्रेमी उसके प्रेम के लायक है और अगर उसके प्रेमी और राजा में कोई अन्तर है भी तो वह भी उतना ही बड़ा है जितना कि एक सूअर और एक बहुत सुन्दर आदमी में होता है।"

सूअर ने उसकी दलीलों को सुनते हुए कहा — "पर इससे भी बुरी बात तो मेरे साथ यह भी है कि आप भी मेरी बदकिस्मती का ही साथ दे रही हैं। आपने मुझे सूअर क्यों पैदा किया? क्या यह मेरे साथ अन्याय नहीं हुआ कि आपने मुझे ऐसा पैदा किया?"

रानी बोली — “मैं तुमको नाउम्मीद नहीं कर रही हूँ बेटे मैं तो बस तुम्हें यह बताना चाह रही हूँ कि अगर तुमने किसी ऐसी लड़की से शादी की जो तुमको प्यार नहीं करती तो तुम खुद भी दुखी रहोगे और उसको भी दुखी रखोगे।

काश तुम यह समझ सकते कि ऐसी जबरदस्ती की शादियों का क्या नतीजा होता है तो तुम ऐसी बात ही नहीं करते। क्या तुम्हारे लिये यह ज़्यादा अच्छा नहीं होगा कि तुम शान्ति से अकेले ही रहो?”

“इसके लिये तो मुझे बहुत कोशिश करनी पड़ेगी माँ। इसमीन मेरे दिल को छू गयी है माँ। वह बहुत कोमल है और मुझे भी कोमल चीज़ों को छूना बहुत अच्छा लगता है। इसके अलावा उसको ताज की भी इच्छा रखनी चाहिये जो उसकी दूसरी इच्छाओं को पूरा करेगा।

पर अगर मेरी किस्मत में किसी का प्यार पाना नहीं लिखा है तो कम से कम मैं एक ऐसी पत्नी तो रख ही सकता हूँ जिसको मैं प्यार करता होऊँ।”

रानी ने देखा कि उसके बेटे का दिमाग तो इसमीन में इतना बसा हुआ था कि उसने फिर उसका दिमाग वहाँ से हटाने का विचार छोड़ दिया। उसने सोचा कि वह अपने बेटे की इच्छा जरूर पूरी करेगी सो उसने इसमीन की माँ को बुला भेजा।

उसको इसमीन की माँ का दिमाग पता था। वह एक बहुत ही ऊँची इच्छाऐं रखने वाली स्त्री थी क्योंकि वह तो अपनी बेटी को ताज से किसी नीची चीज़ के लिये भी बलि चढ़ाने के लिये तैयार थी ताज तो उसके लिये बहुत बड़ी चीज़ थी।

जैसे ही रानी ने उससे यह कहा कि उसकी इच्छा है कि वह अपनी बेटी इसमीन की शादी उसके बेटे सूअर से कर दे तो वह तो उसके पैरों पर गिर पड़ी और बोली "आप जब चाहें।"

रानी बोली — "पर वह तो किसी और से प्यार करती है क्योंकि हमने ही तो उसको कौरीडौन का ख्याल रखने के लिये कहा था ताकि हम उससे उसकी शादी कर सकें।"

इसमीन की बूढ़ी माँ बोली — "हम उसको बोलेंगे कि आगे से वह उसको उस तरीके से न देखे।"

रानी बोली — "दिल हमेशा तर्क नहीं मानता। अगर एक बार वह सचमुच में ही किसी से लग जाये उसको वहाँ से खींचना बहुत मुश्किल होता है।"

माँ बोली — "अगर उसके दिल में मेरे दिल की इच्छाओं के अलावा कोई और इच्छा होगी भी तो मैं उसके दिल को बड़ी बेरहमी से चीर कर रख दूँगी।"

रानी ने जब उसके इतने पक्के इरादे देखे तो उसको विश्वास हो गया कि वह उसके ऊपर उसकी बेटी को अपने बेटे के साथ शादी करने के काम को बिना किसी शक के लाद सकती है।

और वह सचमुच में ही इसमीन के कमरे की तरफ चल दी जहाँ वह बेचारी लड़की यह जान कर कि रानी ने उसकी माँ को बुलवा भेजा था अपनी माँ के लौटने का इन्तजार कर रही थी।

और इस बात को अच्छी तरह से सोचा जा सकता है कि उस बेचारी को कैसा लगा होगा जब उसकी माँ ने उसको अपनी सख्त आवाज में यह बताया होगा कि रानी ने उसको अपनी बहू बनाने का फैसला कर लिया है सो अब उसको कौरीडौन से बात नहीं करनी चाहिये।

और अगर उसने उसका हुक्म नहीं माना तो उसको उसका गला घोट कर मार दिया जायेगा। तो इसके बाद तो इसमीन की हिम्मत ही नहीं पड़ी कि वह इस धमकी का कोई जवाब दे सके बस वह तो बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी।

बहुत जल्दी ही यह खबर सारे राज्य में फैल गयी कि इसमीन की शादी राजा के बेटे जंगली सूअर से हो रही थी। रानी ने राजा को भी इस काम के लिये मना लिया था।

इस मौके पर उसने इसमीन को बहुत सारे कीमती जवाहरात भेजे और कहा कि जब भी वह राजमहल आये तो उनको पहन कर आये।

अब कौरीडौन को इसमीन से मिलने की भी मनाही थी पर फिर भी किसी तरह से उसने इसमीन से मिलने का रास्ता ढूँढ ही लिया।

जब वह इसमीन के अपने कमरे में पहुँचा तो इसमीन एक काउच पर लेटी रो रही थी।

वह उसके पास घुटनों के बल बैठ गया और उसका हाथ अपने हाथ में ले कर बोला — "मुझे बहुत अफसोस है इसमीन कि तुमको मेरे दुख में रोना पड़ रहा है।"

इसमीन बोली — "वे मेरे दुख भी तो हैं। कौरीडौन, क्या तुमको मालूम है कि मुझे क्या सजा मिली है? जो कुछ भी सजा देने का उन्होंने निश्चय किया है उससे बचने का इलाज तो मेरे पास केवल मौत ही है, बस।

मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि किसी और की होने से पहले मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

कौरीडौन बोला — "नहीं तुमको मरने की जरूरत नहीं है। तुम ज़िन्दा रहो तुम रानी बनोगी। और यह भी हो सकता है कि बाद में तुम इस राजकुमार के साथ रहने की आदी हो जाओ।"

"नहीं कौरीडौन ऐसा कभी नहीं होगा। मैं तो ऐसे भयानक पति के साथ रहने की सोच भी नहीं सकती। उसके ताज से मेरा दुख कम नहीं होगा।"

कौरीडौन बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करें इसमीन, पर तुम्हारे ऐसे इरादे से तो केवल मेरा ही भला होगा। मैं तो तुमको खोने वाला ही हूँ पर तुम कोई ऐसा कदम मत उठाओ जिससे मेरा दुख और बढ़ जाये।"

इसमीन बोली — “अगर तुम मर गये तो मैं ज़िन्दा नहीं बचूँगी कौरीडौन। और फिर मुझे कम से कम इस बात की तसल्ली तो रहेगी कि मौत हम दोनों को पास ले आयेगी।”

जब वे लोग इस तरह की बातें कर रहे थे तो अचानक राजकुमार सूअर वहाँ आ गया। रानी ने उसको बता दिया था कि उसने उसके लिये इसमीन की माँ से बात कर ली थी।

उसको सुन कर वह इतना खुश हुआ कि अपनी खुशी इसमीन को बताने के लिये वह इसमीन के कमरे में आ पहुँचा। पर कौरीडौन को वहाँ देख कर उसका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया।

उसके लिये उसके दिल में बहुत जलन थी और इसी वजह से एक जंगली सूअर की तरह से बरताव करते हुए उसने कौरीडौन को हुक्म दिया कि वह उसके दरबार से निकल जाये और वहाँ फिर कभी न आये।

यह सुन कर इसमीन का प्रेमी वहाँ से उठ कर जाने लगा तो इसमीन उसको रोकते हुए चिल्लायी — “इसका क्या मतलब है ओ बेरहम राजकुमार।

तुम क्या सोचते हो कि दरबार से निकाल कर तुम इसको मेरे दिल में से भी निकाल सकते हो जैसे तुम इसको मेरे पास से भगा रहे हो? नहीं, तुम उसे मेरे दिल से नहीं निकाल सकते वह तो मेरी रग रग में समाया हुआ है।

तुम केवल मुझे ही दुख नहीं दे रहे राजकुमार बल्कि अपने आपको भी दुख दे रहे हो। यही वह आदमी है जिसे मैं प्यार करती हूँ। तुम्हारे लिये तो मुझे केवल डर लगता है।"

राजकुमार सूअर बोला — "पर मैं केवल तुम्हें प्यार करता हूँ। मुझे तुम्हारी सारी नफरत मंजूर है फिर भी मैं तुमको प्यार करता हूँ। नहीं तो तुमको तो और दुख मिलता।"

कौरीडौन इसमीन पर पड़े इस नये दुख से और भी ज़्यादा नाउम्मीद हो गया कि तभी इसमीन की माँ वहाँ आ गयी सो वह उसी समय वहाँ से उठ कर चला गया।

इसमीन की माँ ने राजकुमार सूअर को विश्वास दिलाया कि वह चिन्ता न करे इसमीन कौरडौन को बिल्कुल भूल जायेगी। और अब कोई वजह नहीं थी जिसके लिये इतनी सुन्दर शादी में देर की जाये।

राजकुमार सूअर अभी भी इस शादी में बहुत इच्छुक था सो वह बोला कि वह रानी से इस बारे में बात करेगा। राजा ने शादी का सारा इन्तजाम रानी के ऊपर छोड़ दिया था।

असल में राजा इन सब बातों में बिल्कुल भी उलझना नहीं चाहता था क्योंकि उसको यह शादी कुछ बहुत ज़्यादा अच्छी नहीं लग रही थी बल्कि एक मजाक सा लग रही थी क्योंकि शाही खानदान में एक सूअर पैदा हुआ था।

इसके अलावा रानी जिस अन्धविश्वास से अपने बेटे को देखती थी उससे भी उसको बहुत दुख होता था।

राजकुमार सूअर को डर था कि कहीं राजा अपने उस हुक्म के ऊपर पछताये नहीं जो उसने उसकी इच्छाओं को पनपने के लिये दिया था। इसलिये उसने शादी की तैयारियाँ जल्दी जल्दी करनी शुरू कर दीं।

उसने अपने लिये ब्रीचेज़[37] बनवाये जिसमें घुटने पर बहुत सारे रिबन लगे हुए थे। एक बढ़िया किस्म की खुशबू का इन्तजाम किया क्योंकि उसके शरीर में से एक तरह की बू निकलती रहती थी जिसे लोग सहन नही कर पाते थे।

उसके मैन्टिल[38] में बहुत सारे जवाहरात जड़े गये। उसके सिर के लिये एक विग बनायी गयी जो एक बच्चे के बालों जैसी की थी। उसके टोप में बहुत सारे पंख लगे थे।

इस समय शायद वह एक ऐसा असाधारण जानवर लग रहा था जैसा पहले कभी नहीं देखा गया। और केवल वही उसको बिना हँसे

---

[37] Breeches are an article of clothing covering the body from the waist down, with separate coverings for each leg, usually stopping just below the knee, though in some cases reaching to the ankles. The breeches were normally closed and fastened about the leg, along its open seams at varied lengths, and to the knee, by either buttons or by a draw-string, or by one or more straps and buckle or brooches. Formerly a standard item of Westernmen's clothing, they had fallen out of use by the mid-19th century in favor of trousers. See its picture above.

[38] Translated for the word "Mantle". A mantle is a type of loose garment usually worn over indoor clothing to serve the same purpose as an overcoat. Technically, the term describes a long, loose cape-like cloak worn from the 12th to the 16th century by both sexes, although by the 19th century, it was used to describe any loose-fitting, shaped outer garment similar to a cape. See its picture above.

देख सकी जिसको उससे शादी करनी थी। वह क्या करती उसको तो उसे देख कर हँसी भी नहीं आ रही थी।

उन लोगों ने राजकुमार को बेकार ही इतनी शान से उसको सजाया क्योंकि इसमीन तो अपनी उस घड़ी को ही कोसती रही जिसमें वह पैदा हुई थी।

जब वह शादी के लिये मन्दिर जा रही थी तब कौरीडौन ने उसको रास्ते से गुजरते हुए देखा तो उसे लगा कि कोई बेचारा सुन्दर सा बलि का जानवर चला जा रहा है।

राजकुमार ने खुशी में भर कर उससे कहा कि वह अपने चेहरे से अपनी उदासी दूर कर दे क्योंकि अब वह उसको दुनियाँ की सब रानियों से सबसे ज़्यादा खुश करने वाला है।

वह बोला — “मैं मानता हूँ कि मैं दुनियाँ का सबसे सुन्दर आदमी नहीं हूँ पर साथ में यह भी कहा जाता है कि हर आदमी किसी न किसी जानवर के समान होता है। मेरे अन्दर एक जंगली सूअर का सबसे ज़्यादा हिस्सा है इसलिये मैं वैसा हूँ।

पर केवल उसकी वजह से तुम मुझे किसी आदमी से कम अच्छा आदमी मत समझो क्योंकि मेरा दिल बहुत कोमल है और तुम्हारे प्यार से भरा है।”

इसमीन ने बिना कुछ जवाब दिये उसकी तरफ देखा और अपने कन्धे उचका दिये ताकि वह यह भाँप सके कि वह उससे कितनी डरी हुई थी।

इसमीन की माँ उसके पीछे बैठी बैठी हजारों तरीके से उसको धमकियाँ देती जा रही थी — "ओ नीच लड़की, क्या तू अपने साथ साथ हमको भी बरबाद करना चाहती है? क्या तुझे इस बात का बिल्कुल भी डर नहीं है कि इस सबसे राजकुमार का दिल प्यार की बजाय गुस्से से भी भर सकता है? और अगर ऐसा हो गया तो फिर क्या होगा।"

पर इसमीन को तो अपनी परेशानियों से ही फुरसत नहीं थी सो वह अपनी माँ के कहे पर ध्यान ही नहीं दे रही थी।

उधर राजकुमार सूअर ने उसका हाथ अपने हाथ में ले रखा था और खुशी से उछल कूद कर रहा था और उसके कानों में प्यार से बहुत कुछ कहता जा रहा था।

आखिरकार शादी की रस्म खत्म हुई। जब आये हुए मेहमान तीन बार चिल्ला चुके — "राजकुमार सूअर अमर रहे। राजकुमार सूअर अमर रहे। राजकुमार सूअर अमर रहे।" तब दुलहा अपनी दुलहिन को महल में ले आया जहाँ उनकी दावत के लिये बहुत ही शानदार तैयारी की गयी थी।

राजा और रानी अपनी अपनी जगह बैठे। दुलहिन जंगली सूअर के सामने बैठी। वह तो जैसे उसको आँखों से ही खा जाना चाहता था इतनी सुन्दर लग रही थी वह।

पर वह तो अपने दुख में इतनी डूबी हुई थी कि उसने न तो वह सब कुछ देखा जो उसके आस पास हो रहा था और न ही वह तेज़ संगीत सुना जो वहाँ बज रहा था।

रानी ने उसकी पोशाक पकड़ी और उसके कान में फुसफुसाया — "अगर तुम हम सबको खुश रखना चाहती हो मेरे बच्चे तो तुम अपने दिमाग से यह दुख का साया दूर कर दो जो अभी भी तुम्हारे दिमाग पर पड़ा हुआ है। तुम तो यहाँ ऐसे बैठी हो जैसे यह तुम्हारी शादी न हो कर तुम्हारा जनाज़ा हो।"

इसमीन बोली — "भगवान करे यह मेरी ज़िन्दगी का आखिरी दिन हो। रानी जी, आपने ही मुझे कौरीडौन को दिल देने के लिये कहा था सो वह मेरी पसन्द नहीं था बल्कि आपका हुक्म था। पर रानी माँ आपने तो अपना दिमाग बदल लिया पर अफसोस कि मैं अपना दिल नहीं बदल सकी।"

रानी बोली — "ऐसा मत कहो इसमीन। इससे मुझे बड़ी शरमिन्दगी महसूस होती है और मैं अपनी नजर में छोटी पड़ जाती हूँ। तुम उस इज़्ज़त को देखो जो मेरे बेटे ने तुमको दी है और उसके लिये तुमको उसका कृतज्ञ होना चाहिये।"

इसमीन ने इस बात का उसको कोई जवाब नहीं दिया बस उसके सीने पर सिर रख दिया क्योंकि वह फिर से दुखी हो गयी थी।

राजकुमार सूअर भी उसके अपने आपको पकड़ने के ढंग को देख कर बहुत दुखी था। उसको लग रहा था कि उसने उससे शादी क्यों की। वह इस शादी को वहीं खत्म कर देना चाहता था पर उसका दिल नहीं माना और उसने वैसा नहीं किया।

नाच के समय इसमीन की बहिनें अपनी पूरी शानो शौकत के साथ वहाँ आयीं। वे तो उसके रानी बनने की खुशी में और उसके रानी बनने से उनका अपना जो ओहदा बढ़ गया था उसकी खुशी में इतनी खोयी हुई थीं कि उनको उसके दुख का अन्दाज ही नहीं हो रहा था।

दुलहिन राजकुमार सूअर के साथ नाची। राजकुमार सूअर का चेहरा बहुत डरावना हो रहा था और उससे भी ज़्यादा डरावना चेहरा था उसकी दुलहिन का। वहाँ बैठे सारे लोग इतने दुखी थे कि वहाँ कोई भी खुश नहीं दिखायी दे रहा था।

नाच ज़्यादा देर तक नहीं चला। नाच के बाद राजकुमारी को लोग उसके कमरे में ले गये और कपड़े उतारने की रस्म के बाद राजकुमारी सोने चली गयी।

राजकुमार सूअर एक बहुत ही बेसब्र प्रेमी की तरह से तेज़ी से अपने बिस्तर की तरफ बढ़ा। उसको आते देख कर इसमीन बोली — "ज़रा रुको। मैं एक चिट्ठी लिखना चाहती हूँ।"

यह कह कर वह अपने अन्दर वाले कमरे में चली गयी और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। राजकुमार सूअर बाहर से ही

ज़ोर से बोला — "ज़रा जल्दी लिखना।" फिर भी उसको चिट्ठी लिखना शुरू करने में ही एक घंटा लग गया।

पर जैसे ही वह अपने अन्दर वाले कमरे में घुसी तो इसमीन ने क्या देखा कि वहाँ तो दुखी कौरीडौन बैठा था। उसने अपनी एक दासी को रिश्वत दे कर इसमीन के इस अन्दर वाले कमरे की सीढ़ियों का छिपा हुआ दरवाजा खुलवा लिया था और उससे वह अन्दर आ गया था। उसके हाथ में एक कटार[39] थी।

वह बोला — "तुम डरो नहीं। जो कुछ तुमने मेरे साथ किया मैं तुमसे उसका कोई बदला लेने नहीं आया हूँ। तुमने मुझसे पहले कहा था कि तुम्हारा दिल कभी नहीं बदलेगा फिर भी तुमने मुझे छोड़ दिया। पर इसके लिये मैं तुम्हारी बजाय भगवान को ज़्यादा दोष देता हूँ।

पर न तो भगवान और न ही तुम मेरा यह दुख कम कर सकते हो। तुमको खोने के बाद मेरे पास अब मौत के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा है।"

उसने अपने ये शब्द पूरे करते न करते वह कटार अपने सीने में भौंक ली। इसमीन को तो उसकी इस बात का जवाब देने का भी मौका नहीं मिला।

[39] Translated for the word "Dagger" – dagger is small knife-like or sword-like weapon. Ssee its picture above.

वह दुखी हो कर बोली — "ओ कौरीडौन तुम मर गये तो फिर अब मेरे लिये इस दुनियाँ में बचा ही क्या है जिसकी मैं चिन्ता करूँ।"

ऐसा कह कर वह कटार जिसमें अभी भी कौरीडौन का खून लगा हुआ था उसने अपने सीने में भौंक ली।

राजकुमार सूअर बाहर उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था। उसको पता ही नहीं था कि वह बाहर आने में इतनी देर क्यों लगा रही थी। उसको उसने जितनी ज़ोर से पुकार सकता था पुकारा पर उसको कोई जवाब ही नहीं मिला।

यह देख कर वह बहुत गुस्सा हो गया। वह उठा और अपना गाउन पहन कर उसके अन्दर वाले कमरे के दरवाजे की तरफ बढ़ा और उसको जबरदस्ती खोलने लगा। पहले वह घुसा तो उसने कौरीडौन और इसमीन को उस बुरी हालत में पड़े देखा।

यह देख कर वह तो दुख और गुस्से से मर ही गया। प्यार और नफरत की मिली जुली भावनाओं ने उसको पागल कर दिया था।

वह इसमीन को बहुत प्यार करता था पर उसको यह भी पता था कि उसने अपने आपको इसलिये खत्म कर लिया था ताकि वह यह शादी तोड़ सके।

वहाँ के शाही नौकर लोग यह बताने के लिये राजा और रानी के पास दौड़े गये कि राजकुमार के कमरे में क्या हुआ था।

वह सब सुन कर सारा महल दुख के सागर में डूब गया क्योंकि इसमीन सबको बहुत प्यारी थी और कौरीडौन की भी दरबार में बहुत इज़्ज़त थी।

राजा तो उठ ही नहीं पाया। वह रानी की तरह से राजकुमार सूअर के कमरे में भी नहीं जा पाया सो उसने रानी को ही उसको धीरज बँधाने का काम सौंपा।

रानी राजकुमार सूअर को उसके बिस्तर तक ले गयी। जब वह कुछ सँभला तो रानी ने उसको समझाने की कोशिश की कि वह कम से कम एक लड़की से तो आजाद हुआ जो उसको प्यार नहीं करती थी।

उस लड़की का दिल तो किसी दूसरे के प्यार में पागल था। उसको राजकुमार से प्यार करने के लिये मनाना बिल्कुल नामुमकिन था इसलिये उसके लिये एक तरीके से यह अच्छा ही हुआ कि वह चली गयी।

राजकुमार सूअर रोते हुए बोला — "इससे क्या फर्क पड़ता है माँ। मुझे तो वह अपने लिये चाहिये थी चाहे वह मेरे साथ बेवफा बन कर ही क्यों न रहती।

मुझे नहीं मालूम कि वह मुझे धोखा देती या नहीं पर हाँ वह मुझसे डरी डरी जरूर रहती थी। उसकी मौत मेरी वजह से हुई है माँ। काश मैंने उससे इस शक्ल से बात ही न की होती।"

रानी ने जब देखा कि राजकुमार बहुत दुखी है तो वह उसको उन लोगों के साथ वहाँ छोड़ कर बाहर आ गयी जो उसको बहुत खुश रखते थे। फिर वह अपने कमरे में चली गयी।

X X X X X X X

जब वह अपने बिस्तर में लेटी हुई थी तो उसने उस दिन से ले कर जबसे उसने अपने सपने में तीन परियाँ देखीं थी और तब तक जब तक उसने परी को दूसरी बार देखा था अपनी सारी पुरानी घटनाऐं याद करने की कोशिश की।

वह सोचने लगी कि मैंने उन परियों का क्या बिगाड़ा था जो उन्होंने मुझे उन्होंने इतना कठोर दुख दिया। मैं तो एक सुन्दर से बेटे की इच्छा कर रही थी और उन्होंने उसको एक जंगली सूअर बना दिया। यह तो वाकई एक राक्षस[40] जैसा है।

बेचारी इसमीन ने इसके साथ रहने के बजाय खुद को मार लेना ज़्यादा ठीक समझा। जिस दिन से यह बदकिस्मत राजकुमार पैदा हुआ है राजा का एक दिन भी खुशी खुशी नहीं निकला। और जहाँ तक मेरा सवाल है मैं भी जब जब इसको देखती हूँ तब तब दुखी हो जाती हूँ।

जब वह इस तरह से अपने आप से बातें कर रही थी तो उसने अपने कमरे में बहुत सारी रोशनी देखी। उसके बिस्तर के पास एक

[40] Translated for the word “Monster”

परी खड़ी थी। उसने उस परी को पहचान लिया। यह वही परी थी जो पेड़ के तने में से निकली थी।

वह परी बोली — "रानी तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करतीं कि यह सूअर तुम्हारे लिये बहुत आनन्द ले कर आयेगा। क्या तुमको मेरी वफादारी पर भरोसा नहीं है?"

रानी बोली — "आह। तुम्हारे कहे पर कौन भरोसा कर सकता है। मैंने तो आज तक तुम्हारे कहे में किसी भी सच्चाई को नहीं देखा। तुमने मुझे बिना बच्चे के ही मेरे हाल पर क्यों नहीं छोड़ दिया बजाय इसके कि तुमने मुझे इसे दिया।"

परी बोली — "हम तीन बहिनें हैं। हम तीनों में दो तो अच्छी हैं पर वह तीसरी वाली जो कुछ भी हम अच्छा करते हैं उसमें हमेशा ही कुछ न कुछ गड़बड़ कर देती है।

जब तुम सोयी हुई थीं तो तुमने हमारी उस बहिन को सपने में देखा था। अगर हम न होते तो तुम्हारी मुश्किलें और बहुत दिन तक चलतीं हालाँकि वे मुश्किलें भी एक न एक दिन खत्म हो जातीं पर फिर भी वे बहुत दिनों तक चलतीं।"

रानी बोली — "अब या तो मैं मरूँगी और या वह सूअर।"

परी बोली — "यह तो मैं तुम्हें नहीं बता सकती पर हाँ मुझे केवल तुमको कुछ तसल्ली देने की इजाज़त जरूर है।"

और यह कह कर वह परी फिर गायब हो गयी। कमरे में उसकी भीनी भीनी खुशबू उड़ती रही और रानी को भी यह आशा बँधी कि आगे शायद कुछ अच्छे दिन आयें।

इसमीन की मौत के बाद से राजकुमार सूअर बहुत दुखी रहने लगा। उसने अपने आपको अपने कमरे में बन्द कर लिया और अपने दुख बहुत सारे कागजों पर लिख लिये। बल्कि उसकी यह भी इच्छा हुई कि उसकी कविता उसकी पत्नी की कब्र के पत्थर पर खोद दी जायें।

हर आदमी उसकी याद्दाश्त की दाद देता था कि उसको उन सभी की अच्छी तरह याद थी जो उसको नफरत करते थे। पर धीरे धीरे उसने फिर स्त्रियों की सोहबत में आना शुरू कर दिया था।

अबकी बार वह ज़ैलोनीड[41] की सुन्दरता से बहुत प्रभावित था। वह अपनी बहिन की तरह से ही बहुत सुन्दर थी बल्कि उसकी शक्ल भी अपनी बहिन की शक्ल से काफी मिलती जुलती थी।

राजकुमार सूअर को उसकी शक्ल का उसकी बहिन की शक्ल से मिलना अच्छा लग रहा था। उसको लगा कि अगर कोई इसमीन की कमी पूरी कर सकता था तो वह केवल ज़ैलोनीड ही थी। क्योंकि वह उससे बहुत ही दया का बरताव करती थी।

पर राजकुमार सूअर के दिमाग में तो यह कभी आया ही नहीं कि वह उससे शादी करना चाहता है। पर अब तो उसने इसका

---

[41] Zelonide – name of Ismene's younger sister

पक्का इरादा कर लिया था कि वह अब शादी करेगा तो केवल ज़ैलोनीड से।

सो एक दिन जब रानी अपने कमरे में अकेली बैठी थी तो वह उसके कमरे में जा पहुँचा।

वहाँ पहुँच कर उसने रानी से कहा — "माँ मुझे आपसे कुछ चाहिये। पर आप मुझे उसके लिये मना नहीं करना क्योंकि मुझे तो शादी करनी ही है।

आप मेरे हाथ पर अपना हाथ रखें। इस बार मैं ज़ैलोनीड से शादी करना चाहता हूँ। आप राजा से बात कर लें ताकि यह सब जल्दी से हो सके।"

"ओह मेरे बेटे, तुम्हारा इरादा क्या है? क्या तुम इसमीन की नाउम्मीदी और उसकी मौत को इतनी जल्दी भूल गये? तुम यह सोच भी कैसे सकते हो कि उसकी बहिन तुमको ज़्यादा प्यार करेगी? क्या अब तुम ज़्यादा प्यार करने लायक हो गये हो? या फिर कम सूअर हो गये हो?

ज़रा ठंडे दिमाग से सोचो मेरे बेटे तुम अपने आपको रोज रोज नये नये लोगों को क्यों दिखाते फिरते हो? जैसा तुम्हें भगवान ने बनाया है इस तरीके से तो तुमको अब आराम करना चाहिये।"

राजकुमार सूअर बोला — "वह तो आप ठीक कहती हैं माँ पर हर एक को एक साथी की जरूरत होती है। उल्लू मेंढक साँप

सबको कोई न कोई साथी चाहिये। क्या मैं इन सब जानवरों से भी छोटा हूँ?

मैं उन सब जानवरों से छोटा हूँ तो नहीं पर आप मुझको छोटा बनाने पर जरूर तुली हुई हैं। यकीनन एक जंगली सूअर इन सब जानवरों से बड़ा है जिनके नाम मैंने अभी अभी लिये हैं।"

रानी बोली — "केवल मेरा भगवान जानता है कि मैं तुमको कितना प्यार करती हूँ। और वही मेरा दुख भी जानता है जब मैं तुम्हारी तरफ देखती हूँ। जब मैंने तुमसे यह सब कहा तो मैंने यह सब तुमको नीचा दिखाने के लिये नहीं कहा मेरे बेटे।

जब भी तुम शादी करो तो मेरी हमेशा यही इच्छा रहेगी कि वह तुमको उससे भी ज़्यादा प्यार करे जितना मैं तुमको करती हूँ पर बेटे एक पत्नी की और एक माँ की भावनाओं में बहुत फर्क होता है।"

राजकुमार सूअर बोला — "मैंने अपना इरादा बना लिया है माँ कि मैं शादी करूँगा। और मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप राजा से और ज़ैलोनीड की माँ से इस बारे में बात कर लें ताकि हमारी शादी जल्दी से जल्दी हो सके।"

रानी ने उससे वायदा किया कि वह उन दोनों से बात करेगी पर जब रानी ने अपने बेटे के बारे में राजा से बात की तो राजा ने कहा कि उसका मामला कमजोर था और ऐसी बेमेल शादी से आगे और भी कई उलझनें खड़ी हो सकती थीं।

हालाँकि रानी का भी यही सोचना था पर क्योंकि उसने अपने बेटे से वायदा किया था इसलिये राजा से उसको बात तो करनी ही थी फिर वह चाहे जो कुछ कहता।

राजा भी पिछले हादसे से इतना दुखी था कि उसने यह सब मामला अबकी बार रानी पर ही छोड़ दिया कि वह जो चाहे करे। वह इस मामले में अब काई दखलन्दाजी नहीं करना चाहता था।

उसने रानी से यह भी साफ साफ कह दिया कि इस बार अगर कुछ गड़बड़ होती है तो उसके लिये वह खुद ही जिम्मेदार होगी।

रानी जब अपने कमरे की तरफ जा रही थी तो उसको राजकुमार सूअर उसके लिये इन्तजार करता मिल गया। वह रानी का बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था।

रानी ने उससे कहा कि वह अपना प्यार ज़ैलोनीड को जता सकता था। राजा ने उसको इस बात के लिये हॉ कर दी थी बशर्ते कि रानी भी हॉ कर दे। राजा अब खुद किसी भी बुरी घटना की जिम्मेदारी लेना नहीं चाहता था और रानी की तरफ से हॉ थी।

राजकुमार सूअर बोला — "आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें। एक आप ही तो हैं जो मेरे बारे में बुरा सोचती हैं और दूसरे सारे लोग तो मेरी तारीफ ही करते हैं और मेरे हजारों गुणों का बखान करते हैं।"

रानी बोली — "दरबारियों का तो काम ही यह है कि वे राजकुमारों की तारीफ करें। और राजकुमारों के साथ इसी ढंग से

बरताव किया जाता है। इस तरह के वातावरण में कोई अपनी बुराइयों के बारे में कैसे जान सकता है।

काश ऐसा होता कि कुछ दोस्त लोग ऐसे होते जो आदमी के साथ ज़्यादा जुड़े होते बजाय उसकी किस्मत के साथ जुड़ने के।"

राजकुमार सूअर बोला — "पता नहीं अगर वे कोई बुरा सच सुनने पर खुश होते या नहीं। क्योंकि कोई भी कड़वे सच को सुनना नहीं चाहता चाहे वह कैसी भी ज़िन्दगी क्यों न गुजार रहा हो।

उदाहरण के लिये आप हमेशा ही इस बात पर क्यों ज़ोर देती हैं कि एक जंगली सूअर और मुझमें कोई फर्क नहीं है। मैं लोगों के दिलों में डर पैदा करता हूँ इसलिये मुझे कहीं जा कर छिप जाना चाहिये।

क्या मेरा उन लोगों के लिये कोई कर्तव्य नहीं बनता जो मुझे खुशी देते हैं, या जो मेरे लिये खुश करने वाले झूठे सच बोलते हैं या फिर वे मेरे उन कड़वे सचों को छिपाते हैं जिनको आप हमेशा बखानती रहती हैं।"

रानी कुछ चिल्ला कर बोली — "ओ शानो शौकत में पैदा हुए बच्चे, हम तो तुमको हर उस जगह देखते हैं जिधर हमारी नजर जाती हैं। हाँ मेरे बेटे तुम सुन्दर हो। तुम उन लोगों की तरफ अपने कर्तव्य का पालन जरूर करो जो तुम्हारे साथ ऐसा करते हैं।"

राजकुमार सूअर बोला — "मुझे अपनी बदकिस्मती अच्छी तरह मालूम है बल्कि मैं उसे दूसरे लोगों से ज़्यादा अच्छी तरह जानता हूँ

पर मैं क्या करूँ मैं अपनी शक्ल में ज़रा सी बढ़ोत्तरी नहीं कर सकता।

न मैं अपने आपको और ज़्यादा सीधा कर सकता हूँ और न ही मैं अपने सूअर के सिर को किसी आदमी के सुन्दर लहराते हुए बालों वाले सिर में बदल सकता हूँ।

मै तो बस ऐसा कोई भी काम कर सकता हूँ जिसमें गुस्सा हो, बेसब्री हो, लालच हो। असल में हर वह बुराई जिसे ठीक न किया जा सके। पर जहाँ तक मेरा अपना सवाल है आपको पता होना चाहिये कि मैं केवल दया के लायक हूँ इलजाम लगाने के लायक नहीं।"

रानी को लगा कि वह कुछ गुस्सा सा होता जा रहा था और फिर उसका इरादा शादी करने का भी था तो उसने उसको ज़ैलोनीड से मिलने की इजाज़त दे दी और कहा कि वह उससे दोस्ती कर ले।

राजकुमार सूअर भी अपनी माँ से इस बातचीत को खत्म करना चाहता था सो उसने उसे वहीं रोका और वहाँ से जल्दी से चल दिया और ज़ैलोनीड के कमरे में जा पहुँचा।

ज़ैलोनीड अपने अन्दर के कमरे में ही थी। वहाँ पहुँच कर उसने उसको चूमा और बोला — "छोटी बहिन, मैं तुम्हारे लिये एक ऐसी खबर ले कर आया हूँ जिसे सुन कर तुम बहुत खुश होगी। मेरी बहुत इच्छा ही कि तुमको शादी कर लेनी चाहिये।"

वह बोली — "मेरे मालिक अगर मैं आपकी सलाह से शादी करूँगी तो मैं जरूर ही सन्तुष्ट रहूँगी।"

राजकुमार सूअर बोला — "दुलहा अपने राज्य का एक बहुत बड़ा राजकुमार है पर वह सुन्दर नहीं है।"

ज़ैलोनीड बोली — "इससे क्या फर्क पड़ता है। मेरी माँ इतनी बेरहम है कि मैं अपने हालात बड़ी खुशी से बदलने के लिये तैयार हूँ।"

राजकुमार सूअर बोला — "मैं जिसके बारे में बात कर रहा हूँ वह मेरे जैसा है।"

ज़ैलोनीड ने अब उसके चेहरे की तरफ नजर गड़ा कर देखा।

यह देख कर राजकुमार सूअर ने उसकी तरफ आश्चर्यचकित हो कर देखा और बोला — "तुमने जवाब नहीं दिया छोटी बहिन। तुम खुशी की वजह से चुप हो या दुख की वजह से?"

ज़ैलोनीड बोली — "असल में मुझे कुछ याद नहीं पड़ता कि मैंने ऐसा कोई चेहरा दरबार में देखा हो इसलिये मैं सोच रही थी कि वह कौन हो सकता है।"

राजकुमार सूअर बोला — "क्या तुम अभी भी अन्दाजा नहीं लगा सकीं कि इसका मतलब मुझ से है? हाँ मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ ज़ैलोनीड। मैं आज यहाँ इसी लिये आया हूँ कि मैं तुमसे अपना दिल और ताज दोनों बाँट लूँ।"

ज़ैलोनीड परेशानी से चिल्लायी — "हे भगवान यह मैं क्या सुन रही हूँ?"

राजकुमार सूअर बोला — "ऐसा तुमने क्या सुन लिया ज़ैलोनीड? तुमने वही तो सुना जो तुमको बहुत सुख दे। क्या तुमने कभी भी रानी बनने की आशा की थी? तुम अपने आपको खुशकिस्मत समझो कि मेरी नजर तुम पर पड़ी। मेरे प्रेम की कद्र करो और इसमीन की बेवकूफियों पर ध्यान न दो।"

ज़ैलोनीड बोली — "तुम डरो नहीं मैं उसकी तरह मरूँगी नहीं। पर मेरे मालिक दुनियाँ में मुझसे ज़्यादा अच्छी और भी लड़कियाँ हैं तुम उनमें से किसी एक को क्यों नहीं चुन लेते जो इस तरह की इच्छाऐं रखती हैं।

मेरी इच्छा तो केवल एक शान्त ज़िन्दगी बिताने की है सो अपने लिये अपना दुलहा मैं अपने आप चुन लूँगी।"

"तुमको मैं जबरदस्ती राजगद्दी पर बिठाना नहीं चाहता पर मेरे अन्दर की भावना मुझे मजबूर कर रही है कि मैं तुमसे शादी करूँ।"

यह सब सुन कर ज़ैलोनीड केवल रो पड़ी।

राजकुमार उसको वहाँ दुखी छोड़ कर उसकी माँ के पास गया ताकि वह उसको अपना इरादा बता सके ताकि वह उसको इस शादी के लिये आसानी से राजी कर सके।

वहाँ पहुँच कर उसने उसकी माँ को अपनी और ज़ैलोनीड के बीच हुई बातचीत के बारे में बताया और साथ में उसको यह भी

बताया कि वह ऐसी शादी करने के लिये राजी नहीं थी जो उसको रानी बना देती।

ज़ैलोनीड की माँ जानती थी कि इसका मतलब क्या था और वह उससे कितना फायदा उठा सकती थी।

जब इसमीन ने अपने आपको मारा तो वह बहुत दुखी थी और वह इसलिये दुखी नहीं थी कि वह उसको प्यार करती थी बल्कि वह केवल इसलिये दुखी थी कि वह उसके मरने से अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पा रही थी।

राजकुमार के इस शादी के इस प्रस्ताव पर तो वह बहुत ही खुश हो गयी कि वह अब फिर से शाही घराने से जुड़ जायेगी।

वह राजकुमार सूअर के पैरों पर गिर पड़ी। उसने उसको गले लगाया और इस इज़्ज़त देने के लिये हजारों बार धन्यवाद दिया कि वह उसके इस इज़्ज़त देखने से बहुत ज़्यादा प्रभावित थी।

उसने राजकुमार को विश्वास दिलाया कि ज़ैलोनीड उसका हुक्म जरूर मानेगी और अगर उसने नहीं माना तो वह उसकी आँखों में कटार भौंक देगी।

राजकुमार सूअर बोला — "पर यह मैं आपको बता दूँ कि मैं इसमें कोई मारामारी नहीं चाहता। उससे मुझे बहुत दुख होगा। पर अगर वह दिल से मुझे चाहे तो मैं ज़िन्दगी भर उसका इन्तजार करने के लिये तैयार हूँ।

सारी सुन्दर लड़कियाँ मुझे बदसूरत समझती हैं फिर भी मैंने सोच लिया है कि मैं किसी सुन्दर लड़की से ही शादी करूँगा।"

वह नीच स्त्री बोली — "आप ठीक कहते हैं मालिक। आपको अपने तरीके से ही काम करना चाहिये। अगर दूसरे लोग आपकी बात से खुश नहीं होते हैं तो यह उनकी गलती है। इसका मतलब यह है कि वे खुद ही नहीं जानते कि इसमें उनका क्या फायदा है।"

उसने राजकुमार सूअर को इतना ज़्यादा बढ़ावा दिया कि उसने ज़ैलोनीड की माँ से कह ही दिया कि फिर वह यह मामला तय ही समझे और वह ज़ैलोनीड के किसी रोने धोने को नहीं सुनेगा।

घर पहुँच कर उसने कुछ बहुत ही कीमती सामान इकट्ठा किया और उसको ज़ैलोनीड के पास भेंट के तौर पर भिजवा दिया।

जब ज़ैलोनीड के पास जवाहरातों से भरी सोने की टोकरी आयी तो उसकी माँ वहीं उसी के पास थी इसलिये वह उस भेंट को मना ही नहीं कर सकी। पर वह उस सबके प्रति उदासीन ही रही सिवाय एक कटार के जिसकी मूँठ हीरों से जड़ी थी।

उसने उसको कई बार उठाया देखा और फिर अपनी कमर में खोंस लिया और बोली — "अगर मैं गलत नहीं हूँ तो यह वही कटार है जिससे मेरी बहिन ने अपनी जान ले ली थी।"

जो लोग वह सामान ले कर आये थे उनमें से एक ने कहा – "पता नहीं मैम। पर अगर आपको ऐसा लगता है तो आपको तो इसे देखना भी नहीं चाहिये।"

वह बोली — "पर मेरे ख्याल से मुझे उसकी हिम्मत की दाद देनी चाहिये। वह खुशकिस्मत थी कि वह ऐसा कर सकी।"

तभी मारथीसी रो कर बोली — "ओह मेरी बहिन। हम लोगों के दिमाग में ये कैसे कैसे जानलेवा विचार आ रहे हैं। क्या तुम भी मरना चाहती हो?"

"नहीं बहिन नहीं। वह पवित्र वेदी इस तरह के आदमी के लिये मरने के लिये नहीं है पर मैं भगवान को अपना गवाह जरूर बनाऊँगी।"

इसके आगे वह कुछ नहीं कह सकी क्योंकि आँसुओं से उसका गला रुँध गया था।

राजकुमार सूअर को जब यह बताया गया कि ज़ैलोनीड ने उसकी भेटों को कैसे लिया तो वह बहुत नाराज हुआ।

एक बार तो वह शादी तोड़ने के लिये तैयार हो गया और उसका मुँह भी न देखने का निश्चय किया पर या तो प्यार की वजह से या फिर घमंड की वजह से वह ऐसा न कर सका बल्कि उसने उससे जल्दी से जल्दी शादी करने का फैसला कर लिया।

राजा और रानी दोनों ने राजकुमार सूअर को दावत की पूरी आजादी दे दी थी सो उसने भी बड़े शानदार तरीके से उसका इन्तजाम किया था। फिर भी उसकी इस तैयारी में जंगली सूअर की झलक जरूर थी जो बहुत ही असाधारण थी।

शादी की रस्म एक बहुत बड़े जंगल में पूरी हुई जहाँ मेजों पर सारे भयानक और जंगली जानवरों को खाने के लिये बुलाया गया था ताकि वे भी इस शादी की दावत का आनन्द ले सकें।

ज़ैलोनीड अपनी माँ और बहिन के साथ वहाँ आयी तो उसने राजा रानी और उनके जंगली सूअर बेटे को एक बहुत ही अँधेरे पत्तों की छाया में बैठा पाया। यहीं दुलहा और दुलहिन ने अपने प्यार की कसमें खायीं।

राजकुमार सूअर को अपना वायदा निभाने में कोई खास तकलीफ नहीं हुई। पर जहाँ तक ज़ैलोनीड का सवाल था उसके चेहरे से यह साफ दिखायी दे रहा था कि वह इस शादी से बिल्कुल खुश नहीं थी। वह अपने दिल की हालत को केवल कुछ हद तक ही छिपाने में कामयाब रही।

राजकुमार सूअर को जो उसके चेहरे पर खुशी देखना चाहता था लगा कि शायद उसको कोई चीज़ मजबूर कर रही थी जिससे वह खुश दिखायी देने की कोशिश कर रही थी नहीं तो वह खुश नहीं थी। यह सोच कर वह कुछ नाखुश सा हो गया।

जब नाच शुरू होने वाला था तो उसने एक लम्बी सी पोशाक पहन कर एक ज्योतिषी का रूप रख लिया। केवल दो स्त्रियाँ वहाँ और थीं जो इस तरीके का भेष बदल कर आयी थीं।

राजकुमार सूअर की इच्छा हुई कि काश सब स्त्रियाँ एक जैसी भेष बदले होतीं तो उनको अलग अलग करना मुश्किल होता। और

यह काम आसान नहीं था क्योंकि फिर वे सारी स्त्रियाँ उस सूअर की तरह हो जातीं ताकि वह आसानी से उनमें छिप जाता।

उन दोनों में से एक स्त्री ज़ैलोनीड की भरोसे की थी। राजकुमार सूअर को भी इस बात का पता था। बस ज़रा आनन्द लेने के लिये ही उसने इस भेष बदलने का प्लान बनाया था।

एक छोटा सा नाच नाचने के बाद राजकुमार सूअर थक गया और अपनी नयी दुलहिन के पास गया और उसको इशारे से एक भेष बदले ज्योतिषी की तरफ इशारा किया।

ज़ैलोनीड ने सोचा कि वह ज्योतिषी उसकी दोस्त है क्योंकि वह उसी के पास खड़ी थी और राजकुमार सूअर की तरफ इशारा कर रही थी।

वह अपनी उस दोस्त से बोली — "अफसोस मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ। भगवान ने मेरे ऊपर गुस्सा कर के उसे राक्षस के रूप में मेरा पति बना कर भेज दिया है। पर अगर तुम मुझे प्यार करती हो तो हम उससे आज रात को छुटकारा पा सकते हैं।"

राजकुमार सूअर उसकी बात से समझ गया कि वह किसी चाल की बात कर रही थी जो उसी से सम्बन्धित थी। सो वह भी ज़ैलोनीड के कान में फुसफुसाया — "मैं तो तुम्हारी ही सेवा में हूँ।"

ज़ैलोनीड बोली — "देखो मेरे पास यह कटार है जो उसने मुझे भेजी थी। तुम इसको मेरे कमरे में छिपा देना और उसको मारने में मेरी सहायता करना।"

राजकुमार सूअर कुछ नहीं बोला कि कहीं ऐसा न हो कि वह उसकी भाषा पहचान जाये क्योंकि वह तो बहुत ही असाधारण भाषा बोलता था। सो उसने उससे कटार ले ली और वहाँ से कुछ पल के लिये चला गया।

उसके बाद वह वहाँ बिना मुखौटा लगाये आ गया और ज़ैलोनीड को शादी की बधाई दी जिसको उसने भी खुशी से स्वीकार कर लिया क्योंकि उसको अपने पति को मारने का प्लान सफल होता नजर आ रहा था।

पर राजकुमार सूअर उससे कहीं ज़्यादा चिन्तित था। वह अपने मन में सोच रहा था कि क्या इतनी सुन्दर लड़की इतनी नीच हो सकती है कि वह मुझे मारने का प्लान बना सकती है। मैंने उसका क्या बिगाड़ा है जो वह मुझे मारना चाहती है।

यह ठीक है कि मैं सुन्दर नहीं हूँ, मैं जंगली ढंग से खाता पीता हूँ, मेरे अन्दर कुछ खराबियाँ भी हैं पर यह सब किसमें नहीं होता। मेरा चेहरा एक जंगली जानवर का ही सही फिर भी मैं एक आदमी हूँ। कितने जंगली जानवरों के पास आदमी का चेहरा होता है।

क्या यह ज़ैलोनीड जो इतनी सुन्दर है मादा चीता या शेरनी जैसी नहीं है। ओह लोग उसकी शक्ल देख कर ही उस पर कितना विश्वास करते हैं।

जब वह यह सब बुड़बुड़ा रहा था तभी ज़ैलोनीड ने उससे पूछा — “क्या बात है राजकुमार सूअर? कहीं तुम मुझे यह ओहदा देने पर पछता तो नहीं रहे हो?”

राजकुमार सूअर बोला — “नहीं मैं इतनी जल्दी नहीं बदलता। मैं तो इस नाच के खत्म होने के बारे में सोच रहा था। असल में मुझे नींद आ रही है।”

राजकुमारी को यह सुन कर खुशी हुई कि राजकुमार सूअर को नींद आ रही थी क्योंकि उसकी इस हालत में उसको अपना काम करने में आसानी रहेगी।

नाच खत्म हुआ। राजकुमार सूअर और उसकी पत्नी शाही गाड़ी में बैठ कर अपने महल गये। सारा महल छोटे सूअरों की शक्ल के लैम्पों से जगमगा रहा था। उन लोगों को अपने कमरे तक जाने के लिये कई रस्मों को निभाना पड़ा।

राजकुमारी को पक्का यकीन था कि उसके प्लान का किसी को पता नहीं था सो वह अपने तकिये के नीचे से एक रेशमी रस्सी ले कर अपने सोने वाले कमरे में गयी।

इस तरह से वह इसमीन की मौत का बदला लेना चाहती थी और साथ में अपने साथ जबरदस्ती शादी करने का बदला भी। जिसको कि वह किसी भी हाल में किसी को बताना नहीं चाहती थी।

उधर राजकुमार सूअर अपने कमरे में जा कर अपने बिस्तर पर लेट गया और सोने का बहाना करने लगा। वह इतनी ज़ोर ज़ोर से खर्राटे भरने लगा कि उस कमरे में रखी सारी मेज कुरसियाँ हिलने लगीं।

उसको सोते देख कर ज़ैलोनीड बोली — "ओ बदसूरत सूअर आखिर तुम सो ही गये। अब तुम्हारे इस पागल प्यार का बदला लेने का समय आ गया है। तुम अँधेरी रात में मरोगे।"

कह कर वह बहुत धीरे से उठी और अपनी दोस्त को पुकारती हुई कमरे में चारों तरफ घूमी पर वह तो वहाँ थी नहीं क्योंकि ज़ैलोनीड के प्लान का उसको तो कुछ पता ही नहीं था।

वह धीमे से चिल्लायी — "उफ यह बेवफा दोस्त।"

फिर उसने अपनी रेशमी रस्सी निकाली और उसको राजकुमार सूअर की गरदन के चारों तरफ लपेटा और उसको खींचने ही वाली थी कि राजकुमार सूअर ने अपने दोनों दाँत उसकी गरदन में कई बार घुसा दिये जिससे वह वहीं की वहीं तभी की तभी मर गयी।

इस घटना ने सारे महल में शोर मचा दिया। महल का हर आदमी राजकुमार सूअर के कमरे की तरफ दौड़ पड़ा और सबने मरती हुई ज़ैलोनीड का भयानक दृश्य देखा।

वे लोग उसकी सहायता कर सकते थे पर राजकुमार सूअर गुस्से से भरा ज़ैलोनीड और उन लोगों के बीच खड़ा था सो वे कुछ नहीं कर सके।

वे रानी को बुला कर लाये। जब रानी वहाँ आयी तो राजकुमार सूअर ने उसे बताया कि अपने खुश होने के बावजूद उसने उस नाखुश राजकुमारी के साथ ऐसा भयानक काम क्यों किया।

रानी उस लड़की के लिये दुखी हुए बिना न रह सकी। वह बोली — "बेटा मुझे पहले ही पता था कि इस रिश्ते का यही परिणाम होगा। पर अगर यह घटना तुम्हारे ऊपर से शादी का यह बुखार उतार दे तो अच्छा है। हमारे घरों में शादी के दिन दफन की रस्म नहीं होती।"

राजकुमार सूअर ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह खुद भी बहुत दुखी हो गया था। वह सोने तो चला गया पर सो नहीं सका। वह बस अपनी बदकिस्मती के बारे में ही सोचता रहा।

वह केवल उन्हीं दो सुन्दर लड़कियों की मौत के बारे में सोचता रहा जिनको वह बहुत प्यार करता था और इसी बात ने उसको सोने भी नहीं दिया। वे उसको बहुत परेशान करती रहीं।

उसने एक नौजवान लौर्ड जिसे वह बहुत प्यार करता था से कहा — "मैं कितना नाखुश बदकिस्मत हूँ। मुझे अपनी ज़िन्दगी में कभी कोई खुशी नहीं मिली। और जहाँ तक मेरे राज गद्दी पाने का सवाल है तो उसके लिये भी सब यही कहते हैं कि "ओह इतना सुन्दर राज्य एक राक्षस[42] के हाथों में?

[42] Translated for the word "Monster"

और अगर मैं किसी गरीब लड़की से शादी कर लेता हूँ तो बजाय उसको खुश करने के वह या तो खुद मर जाती है या फिर मुझे मारने की कोशिश करती है।

अगर मैं अपने माता पिता के पास नहीं जाता तो वे भी मुझसे नफरत करते हैं और मुझे गुस्से से देखते हैं। मैं तो इस सबसे बहुत परेशान हो गया हूँ मैं क्या करूँ।

मैं तो अब यह राज्य छोड़ना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि मुझे तो बस अब जंगल चले जाना चाहिये और वहीं अपने जैसे ताकतवर जानवर के लायक ज़िन्दगी बितानी चाहिये। अब मुझे और आनन्द नहीं मनाना है।

जंगल के दूसरे जानवर भी मुझसे बात नहीं करेंगे क्योंकि मैं तो उनसे भी ज़्यादा बदसूरत हूँ। फिर भी उन पर राज करना आसान है क्योंकि मैं यह काम कर सकता हूँ। मैं यहाँ इस राज्य में रहने की बजाय वहाँ ज़्यादा खुश रहूँगा क्योंकि मैं शायद उन्हीं पर राज करने के लिये बना हूँ।

वहाँ मेरी ऐसी किसी लड़की से शादी करने की इच्छा भी नहीं होगी जो या तो खुद अपने आपको कटार मार ले या फिर मुझे गला घोट कर मारने की कोशिश करे।

चलो हम दोनों जंगल भाग चलते हैं। हम वह ताज छोड़ देते हैं जिसको लोग समझते हैं कि हम उसको पहनने के काबिल नहीं है।

उसके दोस्त ने पहले तो उसको इस इरादे से डिगाना चाहा पर फिर उसने महसूस किया कि वह खुद लगातार होने वाली इन बदकिस्मत घटनाओं की भावना से इतना ज़्यादा दबा हुआ है कि उसकी उसको उस इरादे से डिगाने की हिम्मत ही नहीं पड़ी।

सो एक रात जब राजा के लोग ठीक से पहरा नहीं दे रहे थे तो राजकुमार सूअर छिप कर महल से जंगल की तरफ भाग गया और वहाँ उसने अपनी जंगली सूअर की ज़िन्दगी जीनी शुरू कर दी।

राजा और रानी को भी अपने बेटे के इस फैसले से बहुत दुख हुआ और वे सोचते रहे कि उनके बेटे के साथ ऐसा क्या हुआ जो उसने ऐसा इरादा बना लिया।

उन्होंने उसको ढूँढने के लिये शाही शिकारी जंगल भेजे पर उनके साथ मुश्किल यह थी कि वे उसे पहचानते कैसे।

काफी खतरा उठाने के बाद दो तीन भयानक सूअर पकड़ कर लाये भी गये पर उन्होंने दरबार में आ कर इतना हल्ला गुल्ला मचाया कि फिर उन लोगों ने ऐसा करना छोड़ दिया क्योंकि इस तरह राजकुमार सूअर को पकड़ने में बहुत खतरा था।

राजा ने फिर एक हुक्म जारी कर दिया कि राजकुमार को पकड़ने के लिये उसके राज्य में अब कोई सूअर न मारा जाये क्योंकि इससे राजकुमार के मारे जाने का खतरा था।

राजकुमार ने अपने दोस्त से वायदा किया कि वह अपने जंगल जाने के बाद उसको कभी कभी चिट्ठी लिखेगा। इसी लिये वह अपने

साथ अपने लिखने का सामान भी ले गया था और इसी लिये शहर के दरवाजे पर उस नौजवान लौर्ड के नाम कभी कभी कुछ अजीब तरीके से लिखी गयी चिट्ठियाँ भी पायी गयीं।

यह देख कर रानी को बहुत तसल्ली थी कि कम से कम उसका बेटा ज़िन्दा था।

X X X X X X X X

इसमीन और ज़ैलोनीड की माँ को अपनी दोनों बेटियों के मर जाने का बहुत दुख था। क्योंकि उनके मर जाने से तो उसके सारे सुनहरे सपने ही चूर चूर हो गये थे। फिर भी उसको उनको अपनी इच्छाओं को पूरी करने के लिये अपनी दो बेटियों की बलि चढ़ा देने पर बहुत पछतावा हुआ।

उसको इस बात का भी बहुत दुख था कि यह सब उसके उनको धमकाने की वजह से हुआ क्योंकि उसकी धमकी की वजह से ही वे उस सूअर से शादी करने को राजी हो गयी थीं और फिर वे मारी भी गयीं। रानी भी अब अपनी तीसरी बेटी को उस तरह से नहीं रखती थी जैसे वह उसको पहले रखती थी।

इसलिये अब उसने मारथीसी के साथ गाँव में रहने का निश्चय किया। उसकी दोनों बेटियों के मरने के बाद अब यही उसकी अकेली बेटी रह गयी थी।

उसकी यह बेटी अपनी दोनों बहिनों से भी ज़्यादा सुन्दर थी और बहुत ज़्यादा सलीके वाली थी। उसको कोई ऐसे ही बिना देखे नहीं छोड़ सकता था।

एक दिन मारथीसी अपने घर के पास ही अपनी दो दासियों के साथ जंगल में घूम रही थी कि उसने अपने से करीब करीब बीस कदम की दूरी पर एक बहुत बड़ा सूअर देखा।

उस सूअर को देखते ही उसकी दोनों दासियाँ तो उसको छोड़ कर वहाँ से भाग लीं पर मारथीसी डर के मारे वहीं जमी की जमी खड़ी रह गयी। वह तो हिल भी नहीं सकी।

वह सूअर राजकुमार सूअर था वह मारथीसी को पहचान गया। उसने देखा कि वह तो काँप रही थी और डर के मारे अधमरी सी हो रही थी।

वह उसको और ज़्यादा डराना नहीं चाहता था सो वह वहीं रुक गया और बोला — "मारथीसी डरो नहीं। मैं तुमको इतना प्यार करता हूँ कि मैं तुमको कोई तकलीफ देने की सोच भी नहीं सकता। तुमको तो मालूम हे कि तुम्हारी बहिनों ने मुझे कितनी तकलीफें दी हैं। मेरे प्यार का बदला उन्होंने किस तरीके से चुकाया है।

हालाँकि मैं यह भी मानता हूँ कि मुझे उनकी नफरत मिलनी ही चाहिये थी क्योंकि यह सब मेरी वजह से ही हुआ क्योंकि मैंने ही अपनी जिद में उनको उनकी इच्छा के बिना अपने से शादी करने पर मजबूर किया।

जबसे मैं इस जंगल में रहने आया हूँ तबसे मुझे लग रहा है कि मन की आजादी से बड़ी कोई भी चीज़ नहीं है। मैं देखता हूँ कि यहाँ सभी जानवर बड़ी खुशी से रह रहे हैं क्योंकि उनको कोई रोकने टोकने वाला नहीं है।

पहले मुझे इन नियमों का पता नहीं था पर अब मैं उन्हें जान गया हूँ। अब मैं अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा बजाय किसी से जबरदस्ती शादी करने के।

अब अगर देवता मुझसे खुश होंगे जो मुझसे अभी बहुत नाराज हैं तो वे खुश हो कर तुम्हारे दिल में मेरे लिये प्यार पैदा कर ही देंगे।

मैं तुम्हारे सामने यह स्वीकार करता हूँ कि मैं तुम्हारे साथ अपनी खुशकिस्मती बाँटने के लिये तैयार हूँ। ओह मैं यह क्या कह गया? क्या तुम मुझ जैसे भयानक राक्षस[43] के साथ मेरी गुफा में आओगी?"

राजकुमार सूअर जब यह सब कह रहा था मारथीसी ने उससे कुछ बात करने की हिम्मत बटोर ली थी। वह बोली — "क्या मेरे मालिक? क्या यह मुमकिन है कि मैं आपकी वह हालत देखूँ जिस बुरी हालत में आप पैदा हुए हैं। रानी माँ का कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब वह आपके दुख में न रोती हों।"

---

[43] Translated for the word "Monster"

राजकुमार सूअर ने उसकी बात बीच में ही काटी और बोला — "तुम मेरी इस हालत की तो बात ही मत करो। उसके बारे में सोचना आसान नहीं है पर वह तो हो चुका है इसलिये उसके बारे में तो अब बात भी करना बेकार है।

तुम यह भी मत सोचो मारथीसी कि कोई भी शानदार राज्य हमको हमेशा के लिये खुशी देगा। खुशियाँ और भी जगह हैं और मैं फिर कहता हूँ कि तुम मुझे उनको दे सकती हो अगर तुम मेरे साथ इस जंगली ज़िन्दगी जीने के लिये तैयार हो तो।"

मारथीसी बोली — "क्यों? क्या आप अब अपने महल में वापस नहीं आयेंगे जहाँ लोग अब भी आपको प्यार करते हैं?"

राजकुमार सूअर बोला — "क्या कहा तुमने? लोग मुझे प्यार करते हैं? नहीं नहीं, जिन राजकुमारों का अपमान हो चुका हो उनको कोई प्यार नहीं करता।

जैसे जो लोग ऊँचे ओहदे पर न होने की वजह से किसी के लिये कुछ नहीं कर सकते और लोग उनसे कोई फायदा न पाने की वजह से उनकी पूछ नहीं करते उसी तरह से जब कुछ भी बुरा होता है तो वे राजकुमार ही उस काम के लिये जिम्मेदार ठहराये जाते हैं।

और फिर लोग उनको प्यार करना तो दूर उनको और ज़्यादा नफरत की निगाह से देखते हैं।

पर मैं तुमसे यह सब क्यों कह रहा हूँ? अगर मेरा कोई पड़ोसी भालू या शेर यहाँ से गुजर रहा हो और वह मुझे तुमसे इस तरीके से बात करते देख ले तो मैं तो बरबाद ही हो जाऊँगा।

सो तुम बिना कुछ और सोचे अपना मन बना लो कि तुम अपनी ज़िन्दगी के बाकी के दिन इस बदकिस्मत राक्षस के छोटे से घर में गुजार दोगी। जब तुम इस घर में आ जाओगी तो यह बदकिस्मत राक्षस भी बदकिस्मत नहीं रहेगा।"

मारथीसी बोली — "राजकुमार सूअर, अभी तक तो मेरे पास ऐसी कोई वजह नहीं है जिससे मैं आपको प्यार कर सकूँ। क्योंकि अगर आप नहीं होते तो मेरी दो बहिनें मेरे पास होतीं जो मुझे बहुत प्यारी थीं। इस अजीब रास्ते को चुनने के लिये मुझे थोड़ा समय दें।"

"तुम मुझसे यह समय शायद इसलिये माँग रही हो ताकि तुम मुझे धोखा दे सको।"

मारथीसी बोली — "नहीं, मैं ऐसा करने के लायक ही नहीं हूँ। और आप यह भी विश्वास रखें कि कोई दूसरा यह नहीं जान पायेगा कि मैंने आपको देखा भी है।"

"क्या तुम वापस आओगी?"

"यकीनन।"

"ठीक है पर क्या तुम्हारी माँ तुम्हें यहाँ आने देगी? तुम्हारी दासियों ने तुम्हारी माँ से अब तक यह कह ही दिया होगा कि तुम

किसी भयानक सूअर से मिली हो और फिर वह तुमको किसी भी खतरे में पड़ने नहीं देगी। सो मारथीसा आओ तुम अभी मेरे साथ आ जाओ।"

मारथीसी ने पूछा — "लेकिन आप मुझे ले कर कहाँ जायेंगे?"

"एक गहरी पानी की गुफा में[44] जहाँ क्रिस्टल से भी साफ पानी की नाला बहता है और जिसके किनारे हरी हरी घास और छोटे छोटे पौधों से ढके हुए हैं। जहाँ से बहुत सारी गूँज वापस आती है। हम लोग वहीं रहेंगे मारथीसा। आओ न।"

मारथीसी बोली — "और या फिर यह कहें कि वहाँ आपका कोई बहुत अच्छा दोस्त मुझे खा लेगा। वे आपसे मिलने आयेंगे और मुझे वहाँ देखेंगे तो बस वे तो मुझे खा ही लेंगे।

इसके अलावा मेरी प्यारी माँ बेचारी यह सोच कर मुझे चारों तरफ ढूँढती फिरेगी कि मैं कहीं खो गयी हूँ। और क्योंकि यह जंगल तो मेरे घर के बहुत पास है तो मुझे तो यहाँ कोई भी ढूँढ लेगा।"

"तो फिर जहाँ तुम चाहो वहाँ चल सकते हैं। एक गरीब जंगली सूअर तो बहुत जल्दी ही इस सबकी तैयारी कर लेगा।"

[44] Translated for the word "Grotto". Grotto is a cavelike structure in which water flows. See the picture of a famous grotto above, the Blue Grotto, of Italy.

मारथीसी बोली — "इसमें तो कोई शक नहीं है कि आप तो अपनी तैयारी कर लेंगे पर मुझे तो अपनी तैयारी करने में देर लगेगी। मुझे तो हर मौसम के लिये कपड़े, जवाहरात, रिबन आदि चाहिये।"

"तुमको सजने के लिये बहुत सारी छोटी छोटी चीज़ें चाहिये। पर अगर कोई अक्लमन्द और ठीक से सोचने वाला हो तो क्या वह इन सब छोटी छोटी चीज़ों से अपने आपको थोड़ा और ऊपर नहीं उठा सकता?

तुम मेरी बात का विश्वास करो मारथीसी, ये सब चीज़ें तुम्हारी सुन्दरता को बढ़ायेंगी नहीं बल्कि तुम्हारी सुन्दरता को और कम कर देंगी। तुम अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिये इन सब चीज़ों का सहारा मत लो बल्कि नालों के ताजा साफ पानी को इस्तेमाल करो।

तुम अपने इन रेशमी घुँघराले सुन्दर रंग वाले बालों को ही जो किसी मकड़े के उन जालों के धागों से भी ज़्यादा बारीक हैं जिनमें कोई भी कीड़ा पकड़ा जा सकता है अपनी सजावट बना लो।

तुम्हारे दाँत मोती जैसे सफेद हैं और तरतीबवार लगे हुए हैं। तुम उनकी चमक से ही सन्तुष्ट रहो और वे सब छोटी छोटी चीज़ें उन लोगों के लिये छोड़ दो जो तुम्हारे जितनी सुन्दर नहीं हैं।"

मारथीसी बोली — "मैं आपके मुँह से अपनी सुन्दरता की बड़ाई सुन कर बहुत खुश हुई पर आप मुझे कभी इस बात के लिये नहीं

बहका पायेंगे कि मैं अपने आपको छिपकलियों और घोंघों के साथ एक गुफा में बन्द कर लूँ।

क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आप मेरे साथ अपने पिता के पास अपने घर लौट चलें? मुझे पूरा विश्वास है कि वह मेरी और आपकी शादी के लिये जरूर ही राजी हो जायेंगे और इससे मुझे भी बहुत खुशी होगी।

और अगर आप मुझे प्यार करते हैं तो क्या आप मुझे खुश नहीं देखना चाहेंगे और कहीं अच्छी जगह रखना नहीं चाहेंगे?"

राजकुमार सूअर बोला — "ओ सुन्दरी मैं तो तुमको बहुत प्यार करता हूँ पर तुम मुझे प्यार नहीं करतीं। मुझे मालूम है कि तुम मुझको अपना पति केवल अपनी ऊँची ऊँची इच्छाओं को पूरा करने की वजह से ही स्वीकार करोगी और मैं तुम्हारी उन भावनाओं की शायद कद्र नहीं कर पाऊँगा।"

मारथीसी बोली — "हमारे रहने सहने के बारे में आपका यह सोचना बहुत ही स्वाभाविक है पर फिर भी मेरे मालिक राजकुमार सूअर जी, मैं कम से कम आपकी और अपनी दोस्ती की कद्र करूँगी। आप इस बात को सोच कर रखियेगा मैं कुछ दिनों में यहाँ वापस आती हूँ।"

मारथीसी से इस बातचीत के बाद राजकुमार सूअर चला गया और जा कर अपनी अँधेरी गुफा में बैठ गया। वहाँ बैठा बैठा वह

मारथीसी ने जो कुछ भी उससे कहा था उस पर बहुत देर तक विचार करता रहा।

उसके खराब सितारों ने उसके दिल में उन लोगों के लिये भी इतनी ज़्यादा नफरत पैदा कर दी थी जो उसको बहुत प्यार करते थे क्योंकि उनका कोई भी शब्द अब उसको खुश नहीं करता था। पर आज मारथीसी के दया भरे शब्दों ने उसको काफी समझदार बना दिया था।

मारथीसी से अपना प्यार जताने के लिये वह कोई जरिया ढूँढ रहा था कि उसके दिमाग में आया कि वह उसके लिये कुछ खाना बनाये। इससे शायद वह खुश हो जाये।

सो उसके लिये उसने कई हिरन और मेमने[45] मारे और उनको अपनी गुफा में ला कर रख दिया। फिर वह मारथीसा के आने का इन्तजार करने लगा जब अपने वायदे के मुताबिक वह वहाँ आयेगी।

उधर मारथीसी यह नहीं सोच पा रही थी कि वह इस बारे में कैसे तय करे कि वह राजकुमार सूअर के साथ उसकी गुफा में रहे या नहीं।

अगर राजकुमार सूअर उतना ही सुन्दर होता जितना कि वह बदसूरत था, अगर वे दोनों एक दूसरे को उतना ही प्यार करते

[45] Translated for the words “Roe-Bucks” and “Lambs”.

जितना कि ऐस्ट्रिया और सैलेडौन[46] आपस में एक दूसरे को करते थे तो वह उसके साथ अपनी सारी ज़िन्दगी अकेले में गुजार सकती थी पर उसके लिये राजकुमार सूअर को सैलेडौन तो होना था न।

उसने अभी तक अपनी शादी की बात किसी से पक्की नहीं की थी क्योंकि कोई उसको अभी तक अच्छा ही नहीं लगा था। वह राजकुमार सूअर के साथ भी अपनी मरजी से रहने के लिये राजी थी अगर वह जंगल छोड़ देता तो।

सो एक दिन वह चोरी छिपे अपने घर से निकली और राजकुमार सूअर से मिलने चल दी।

उसने उसको जहाँ वह मिलने के लिये कह कर गयी थी वहीं बैठा पाया। ऐसा इसलिये था क्योंकि राजकुमार सूअर वहाँ दिन में कई बार आता था ताकि वह मारथीसी के आने के समय को चूक न जाये।

सो जैसे ही उसने मारथीसी को देखा वह सिर झुका कर उसके पैरों की तरफ इसलिये दौड़ा ताकि वह उसको यह बता सके कि भयानक से भयानक जानवर भी जब चाहें तो बहुत ही नम्रता से एक दूसरे से मिल सकते हैं।

[46] Astrea and Celadon are the famous characters of a 17th century major French work by Honore d'Urfe about a shepherd who is madly in love with Astrea.

वहाँ से वे दोनों एक अकेली जगह चले गये। राजकुमार सूअर ने उसकी तरफ प्रेम से भरी अपनी लाल लाल आँखों से देखते हुए उससे कहा — “बोलो क्या कहती हो?”

मारथीसी बोली — “आपकी इच्छा पूरी हो सकती है अगर आप घर वापस लौट चलें। पर एक बात मैं आपको बता दूँ कि मैं अपनी सारी ज़िन्दगी समाज से दूर रह कर नहीं बिता सकती।”

राजकुमार सूअर ने एक आह भरी और कहा — “क्योंकि तुम मुझको प्यार नहीं करतीं न इसलिये। तुम ठीक कहती हो मैं प्यार करने लायक ही नहीं हूँ पर जो दया और मेहरबानी तुमने मेरे ऊपर दिखायी है मैं उससे बहुत नाखुश हूँ।”

“आपको क्या पता कि इस तरह की दोस्ती में जिस तरह की आपकी और मेरी दोस्ती होगी उसमें इस तरह की भावनाऐं नहीं होतीं। आप मेरा विश्वास करें और अगर आप अपने पिता के पास चलने के लिये राजी हों तो राजकुमार सूअर जी, मैं इस बात का आपको अच्छा सबूत दे सकती हूँ।”

“अच्छा अभी तो तुम मेरी पानी वाली गुफा में चलो और फिर देख कर बताओ कि तुम अपने लिये मुझसे क्या छोड़ने को कह रही हो।”

इस बात पर मारथीसी उसके साथ जाने से यह सोच कर थोड़ी सी हिचकिचायी कि कहीं राजकुमार सूअर उसको बिना उसकी इच्छा के अपने घर में ही न रख ले।

पर राजकुमार सूअर ने भी यह जान लिया कि वह क्या सोच रही थी सो वह बोला — "तुम डरो नहीं मैं अपनी ख़ुशी हासिल करने के लिये तुम्हारे ऊपर किसी ताकत का इस्तेमाल नहीं करूँगा।"

मारथीसी उसका विश्वास कर के उसके साथ चल दी। राजकुमार सूअर उसको गुफा के दूसरे छोर तक ले गया जहाँ उसने उसके लिये सारे जानवर मार कर रखे थे।

उन जानवरों को देख कर मारथीसी की तबियत घबड़ा गयी। पहले तो उसने उधर से अपनी आँखें फेर लीं और फिर बाहर जाने को तैयार हुई कि राजकुमार सूअर ने अपनी मालिक की सी आवाज में कहा — "ओ मारथीसी मैं तुम्हारे साथ इतना उदासीन भी नहीं हूँ कि मैं तुमको इस तरह से छोड़ कर जाने दूँ।

मैं भगवान को गवाह मान कर कहता हूँ कि तुम हमेशा ही मेरे दिल पर राज करोगी। कुछ मुश्किलें ऐसी हैं जिनकी वजह से मैं अपने पिता के पास वापस नहीं जा सकता पर मेहरबानी कर के तुम मेरा प्यार और विश्वास स्वीकार करो।

यह बहता हुआ नाला, ये सदाबहार बेलें, ये चट्टानें, ये जंगल और जो कुछ और भी यहाँ है वे सब हमारी कसमों के गवाह रहेंगे।"

हालाँकि मारथीसी इस सबके लिये कोई खास इच्छुक नहीं थी पर वह तो अब इस गुफा में कैद हो चुकी थी। उसको बाहर जाने का कोई रास्ता दिखायी नहीं दे रहा था।

वह उसके साथ यहाँ आयी ही क्यों थी? क्या उसको पहले ही अन्दाज नहीं लग जाना चाहिये था कि यहाँ उसके साथ क्या होगा? वह रोने लगी और उसने राजकुमार सूअर से प्रार्थना की — "मैं आपके वायदों का विश्वास कैसे कर लूँ आपने तो अपना पहला वायदा ही तोड़ दिया।"

जंगली सूअर ने अपनी जंगली सूअर की मुस्कान के साथ कहा — "मेरे अन्दर आदमी के साथ साथ कुछ तो जानवर का स्वभाव भी मिला हुआ होना चाहिये न। यह वायदा तोड़ना जिसके लिये तुम मुझे इलजाम दे रही हो यह तो एक चाल थी मेरा अपना काम कराने की।

अगर मैं सच कहूँ तो यह मुझमें आदमी का ऐहसास दिलाती है। पर असल में जानवरों में एक दूसरे के लिये आदमियों से ज़्यादा इज़्ज़त होती है।"

मारथीसी बोली — "अफसोस आपके अन्दर तो आदमी और जानवर दोनों ही सबसे ज़्यादा बुरे किस्म के हैं – आदमी का दिल भी और जंगली जानवर का चेहरा भी।

अच्छा होता अगर आपके पास एक ही चीज़ बुरी होती, या तो आदमी का दिल और या फिर जंगली जानवर का चेहरा। पर अब

तो सोचने के बाद ही मैं यह निश्चय करूँगी कि आप जैसा चाहते हैं मैं वैसा करूँ या नहीं।”

“पर ओ सुन्दर मारथीसी क्या तुम मेरे साथ मेरी पत्नी बने बिना ही रहना पसन्द करोगी? नहीं तो तुम यह समझ लो कि मैं तुमको यहाँ से बाहर नहीं जाने दूँगा।”

यह सुन कर मारथीसी तो और बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी और उससे प्रार्थना करने लगी कि वह उसको वहाँ से जाने दे पर राजकुमार सूअर पर इसका कोई असर नहीं पड़ रहा था।

काफी हील हुज्जत के बाद उसको राजकुमार सूअर को अपना पति मानने के लिये राजी होना ही पड़ा। उसने उसको यह भी विश्वास दिलाया कि वह उसको उसी तरह से प्यार करेगी जैसे कि वह कोई बहुत सुन्दर राजकुमार हो।

राजकुमार सूअर उसके इन तरीकों से बहुत खुश हो गया और बदले में उसने भी उसको विश्वास दिलाया कि वह उसको कभी भी नाखुश नहीं करेगा जैसा कि वह सोचती थी।

फिर उसने उससे पूछा कि क्या वह उसके मारे हुए जानवरों में से कुछ खाना चाहेगी। उसने कहा — “नहीं ये मुझे अच्छे नहीं लगते। अगर आप मुझे कोई फल ला दें तो मैं वह खा सकती हूँ।”

सो वह उसके लिये फल लाने के लिये गुफा के बाहर चल दिया। बाहर जाते समय वह गुफा का दरवाजा बन्द करता गया। वह दरवाजा उसने इतनी अच्छी तरीके से बन्द किया था कि

मारथीसी कितनी भी कोशिश करती वह उसको खोल कर बाहर नहीं जा सकती थी।

पर मारथीसी ने भी यह सोच लिया था कि अगर वह वहाँ से बच कर भाग भी सकती तो वह वहाँ से भागती नहीं।

राजकुमार सूअर ने मौसमी, सन्तरों, मीठे नीबुओं और दूसरे फलों से तीन साही[47] भरे, उनको गोदा और उनको गुफा तक सुरक्षित रूप से ले गया। वहाँ ले जा कर उसने उनको मारथीसी को दिया और उससे उनको खाने के लिये कहा।

उसने कहा — "लो मारथीसी यह तुम्हारी शादी की दावत है। यह और दावतों जैसी तो नहीं है जैसी कि तुम्हारी दोनों बहिनों की शादी में दी गयी थी। पर मैं सोचता हूँ कि जितनी कम शानदार दावत होगी उसको खाने में उतना ही ज़्यादा मजा आयेगा।"

वह बोली — "भगवान करे ऐसा ही हो।"

फिर उसने थोड़ा सा पानी हाथ में लेते हुए उसको उस जंगली सूअर के अच्छे स्वास्थ्य के लिये पिया।[48] यह देख कर वह जंगली सूअर तो बहुत ही खुश हो गया।

---

[47] Translated for the word "Hedgehog". Ssee its picture above.

[48] This action is called "Toast". A toast is a ritual in which a drink is taken as an expression of honor or goodwill. It is vey common in Western countries. They take their glasses while drinking wine or liquor, knock or merely raise it towards someone or something and then drink is called a toast as well, the message being one of goodwill towards the person or thing indicated. People normally say "Cheers" to each other while doing this.

खाना जल्दी ही खत्म हो गया। खाना खत्म होने पर मारथीसी ने वहाँ से वह सारी घास, छोटे पौदे और फूल बटोरे जो वह राजकुमार सूअर उसके लिये ले कर आया था और उसका एक अच्छा इतना सख्त बिस्तर बनाया जिस पर वह और राजकुमार दोनों लेट सकें।

वह इस बारे में बहुत सावधान थी कि राजकुमार को ऊँचा तकिया चाहिये था या नीचा और वह किस तरफ सोना पसन्द करेगा आदि आदि। राजकुमार सूअर उसके ये तौर तरीके देख कर बहुत खुश था। इसके लिये उसने उसको बहुत बार धन्यवाद दिया।

वह बार बार यही कहता रहा कि इसके बदले में वह किसी बड़े से बड़े आदमी से भी अपनी किस्मत बदलने को किसी हालत में भी तैयार नहीं था।

उसने साथ में यह भी कहा "आखिर मुझे वह मिल ही गया जिसकी मुझे तलाश थी। वह भी मुझको प्यार करती है जिसको मैं प्यार करता हूँ।"

वह उससे बहुत सारी अच्छी अच्छी बातें कहता रहा। इस पर वह बिल्कुल भी आश्चर्यचकित नहीं थी क्योंकि वह बातें बहुत अच्छी करता था। पर वह खुश थी कि जिस अकेलेपन में वह रहता था उस माहौल में रहने की वजह से उसके अन्दर कोई कमी भी नहीं थी।

दोनों सो गये। पर मारथीसी की आँख बीच में ही खुल गयी। उसको जागने पर कुछ ऐसा लगा कि जब उसने अपना बिस्तर बनाया था तबसे वह अब ज़्यादा मुलायम था।

उसने राजकुमार सूअर के सिर को बहुत ही धीरे से छुआ तो उसको लगा कि वहाँ तो सूअर के सिर की बजाय एक आदमी का सिर था। उस सिर के बाल भी लम्बे थे उस शरीर की बाँहें और हाथ भी थे।

यह देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ पर उसको बहुत नींद आ रही थी सो वह फिर से सो गयी। और जब दिन निकला तो उसने देखा कि उसका पति तो वही एक जंगली सूअर था।

उनका दूसरा दिन भी ऐसे ही निकल गया जैसा कि पहला दिन निकला था। जो कुछ मारथीसी ने रात में महसूस किया उस बारे में उसने अपने पति को कुछ नहीं बताया।

अगले दिन फिर रात हुई और सोने का समय आया। जब राजकुमार सूअर सो गया तो उसने फिर उसका सिर छू कर देखा तो उसने फिर से वही बदलाव महसूस किया जो उसने पिछली रात को किया था।

अब तो वह बहुत परेशान हो गयी। वह तो सारी रात सो ही नहीं सकी। उसको बहुत उत्सुकता हो गयी कि यह सब क्या हो रहा था।

राजकुमार सूअर ने जब अपनी पत्नी को चिन्तित देखा तो वह बोला — "मेरी प्यारी मारथीसी, लगता है तुम मुझे प्यार नहीं करतीं। मैं भी कितना बदकिस्मत हूँ कि तुम जिसका चेहरा भी देखना नहीं चाहतीं। इससे तो अच्छा है कि मैं मर जाता हूँ और फिर इसका इलजाम तुम्हारे ऊपर ही आयेगा।"

मारथीसी चिल्लायी — "ओ नीच, इसकी बजाय तुम यह कहो न कि तुम ही मेरी मौत की वजह बनोगे। जो कुछ भी तुम मेरे साथ गलत कर रहे हो मैं उसे अब और नहीं सह सकती।"

"पर मैं क्या गलत कर रहा हूँ? क्या मैं बेरहम और नीच हूँ? तुम कहना क्या चाहती हो? तुम मुझसे कोई शिकायत नहीं कर सकतीं। मैंने तुम्हारे साथ कुछ बुरा नहीं किया।"

"तुमको क्या लगता है कि क्या मैं इस बात से अनजान हूँ कि तुम हर रात एक आदमी में बदल जाते हो?"

"मेरे जैसे जंगली सूअर आसान नहीं होते। भगवान के लिये हम दोनों के बारे में कोई ऐसा ऐसा वैसा विचार मत बनाओ जिससे हम दोनों के बीच में कोई अनदेखी दीवार खड़ी हो जाये। मैं तो खुद ही देवताओं से जलता हूँ पर मुझे लगता है कि तुमने जरूर सोते में ही ऐसा महसूस किया होगा।"

मारथीसी यह सुन कर बहुत शरमिन्दा हुई कि उसने ऐसी नामुमकिन सी बात सोची वरना ऐसा कैसे हो सकता था कि कोई रात को आदमी बन जाये और दिन में सूअर।

उसने कहा कि वह उस पर पूरा पूरा विश्वास करती है और अब वह आगे से उससे ऐसी बात कभी नहीं करेगी।

हालाँकि वह फिर भी यही सोचती थी कि वह यह सब जागती हालत में देख रही थी, यानी जब वह उसका सिर बाँहें और हाथ छू रही थी, फिर भी हो सकता है कि वह यह सब सोते में ही महसूस कर रही हो। क्योंकि ऐसा होना तो नामुमकिन सा लगता है।

उसने सोच लिया कि अब वह उससे इस मामले पर फिर कभी बात ही नहीं करेगी। और फिर सचमुच में ही उसने अपने दिमाग में आये सारे विचार निकाल दिये।

इस तरह मारथीसी को वहाँ उस गुफा में बिना किसी खुशी के रहते रहते छह महीने बीत गये। वह उस गुफा के बाहर भी नहीं गयी कि कहीं ऐसा न हो कि बाहर उसको अपनी माँ मिल जाये या फिर उसके अपने घर का कोई नौकर मिल जाये।

उधर जबसे मारथीसी की माँ की बेटी खोयी थी उसका तो रोना ही बन्द नहीं हुआ था। वह तो बस मारथीसी को ही याद करती रहती थी। उसकी आवाज उसके कानों में पड़ती रहती और फिर उसको तसल्ली देना मुश्किल हो जाता।

पर राजकुमार सूअर ने मारथीसी को कड़ी चेतावनी दे रखी थी कि वह उससे जितना प्यार करती थी उतना ही डरे भी।

अब क्योंकि वह स्वभाव से ही बहुत नम्र थी सो वह राजकुमार सूअर से बहुत ही नम्रता का बरताव करती थी। राजकुमार सूअर भी

उसको बहुत प्यार करता था। पर जब उसको यह पता चला कि सूअर की जाति को बचाया जा रहा था तब तो उसके दुख की कोई सीमा ही नहीं रही।

एक रात जब वह जाग रही थी और रो रही थी तो उसने किसी को बड़ी नीची आवाज में बात करते हुए सुना। नीची आवाज में बोलने के बावजूद वह सब सुन सकी जो वे बात कर रहे थे।

यह तो उसका भला राजकुमार सूअर था जो किसी से कम बेरहम होने की प्रार्थना कर रहा था और उसको वह करने की इजाज़त माँग रहा था जिसके लिये वह उससे बहुत दिनों से कह रहा था। पर उसका जवाब उसे मिल रहा था "नहीं नहीं यह मैं तुम्हें नहीं दे सकती।"

अब तो मारथीसी की परेशानी और भी बढ़ गयी।

वह बोली — "क्या मैं इस गुफा के अन्दर आ सकती हूँ? मेरे पति ने मुझे वह भेद नहीं बताया है।"

अब उसको दोबारा नींद नहीं आ रही थी। उसकी उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी कि यह सब हो क्या रहा है। बातचीत ख़त्म हो गयी थी।

जो आदमी उसके पति से बोल रहा था वह गुफा के बाहर चला गया था और उसके जाने के कुछ देर बाद ही राजकुमार सूअर सूअर की तरह खर्राटे मार रहा था।

वह तुरन्त ही उस गुफा के दरवाजे का पत्थर हटाने के लिये उठी कि अगर वह पत्थर हटा सके तो वह उस आदमी को देख सकेगी कि वह कौन था पर वह तो उसको हिला भी नहीं सकी।

वह अँधेरे में ही धीरे से वापस आ गयी। वापस आते समय उसने अपने पैरों के नीचे कुछ महसूस किया। उसने उसे उठाया तो देखा कि वह तो एक जंगली सूअर की खाल थी। उसने उसको छिपा दिया और फिर इस मामले के नतीजे का इन्तजार करने लगी।

अगले दिन राजकुमार सूअर सुबह होने से पहले ही उठ गया। मारथीसी ने देखा कि वह अपने चारों तरफ काँपते हाथों से कुछ ढूँढ रहा था। जब वह ढूँढ रहा था तो उसके शरीर पर लगी मिट्टी टूट गयी। उसने देखा कि वह तो बहुत सुन्दर था जो उसकी कल्पना से भी बाहर था।

वह चिल्लायी — "मेरी खुशी के लिये अब मुझसे कुछ और मत छिपाओ राजकुमार सूअर। मुझे सब मालूम पड़ गया है। मैं उसको अपने दिल में महसूस कर सकती हूँ। मेरे प्यारे राजकुमार यह तो बताओ कि तुम किस खुशकिस्मती से इतने सुन्दर राजकुमार बन गये?"

पहले तो वह राजकुमार सूअर मारथीसी की इस खोज पर आश्चर्य में भर गया फिर सँभल कर बोला — "प्रिय मारथीसी अब मैं तुमको सब कुछ समझा सकता हूँ। पर मैं पहले यह स्वीकार कर

लूँ कि मेरा यह रूप बदल केवल तुम्हारी वजह से ही मुमकिन हुआ है। मैं तुम्हारा बहुत बहुत बहुत ऋणी हूँ।"

और तब उसने उसको अपनी कहानी बतायी — "एक दिन मेरी माँ एक पेड़ के नीचे सो रही थी कि तीन परियाँ उसके सिर के ऊपर से गुजरीं।

उनमें से जो सबसे बड़ी परी थी उसने उसको एक बेटा होने का और उसे सुन्दर और बातें करने में चतुर होने का वरदान दिया। दूसरी ने इस वरदान को और आगे बढ़ाया। उसने कहा कि मुझमें सब गुण होंगे।

पर उनमें जो सबसे छोटी थी वह बहुत ज़ोर से हँसी और बोली — "यहाँ इसको अब कुछ अलग होना चाहिये। वसन्त उतना आनन्ददायक नहीं होता अगर उससे पहले ठंड न आये तो।

इसलिये वह राजकुमार जिसकी तुम इच्छा कर रही हो बहुत सुन्दर होगा पर मेरा वरदान यह है कि पहले वह एक जंगली सूअर के रूप में रहेगा जब तक वह तीन लड़कियों से शादी नहीं कर लेगा और उसकी तीसरी पत्नी को ही उसकी जंगली सूअर की खाल मिलेगी।"

यह कह कर वे तीनों परियाँ गायब हो गयीं। रानी ने वह तो सुना जो पहली दो परियों ने कहा पर वह तीसरी परी जिसने मुझे यह तकलीफ दी वह इतनी ज़ोर से हँस रही थी कि रानी उसकी बात

नहीं सुन सकी। यह सब जो मैंने तुमको अभी बताया मुझे केवल अपनी शादी की रात को ही पता चला।

जब मैं अपने प्रेम में पागल तुमको ढूँढने जा रहा था तो मैं एक नाले पर पानी पीने के लिये रुका जो मेरी गुफा के पास ही बह रहा था।

तो या तो उस नाले का पानी कुछ ज़्यादा साफ था या पता नहीं क्या बात थी कि मैंने उसमें अपनी परछाईं ठीक से देखी ताकि मैं तुमको खुश कर सकूँ।

मुझे उसमें अपनी परछाईं साफ साफ दिखायी दी। मेरी वह परछाईं इतनी गन्दी थी कि मेरी आँखों में आँसू आ गये। मैं इसमें कोई ज़्यादा नहीं कह रहा पर मैं उस समय इतना रोया कि उस नाले में पानी बहुत बढ़ गया। मैंने सोचा कि मैं तो तुमको कभी खुश कर ही नहीं सकता।

यह सोच कर मैंने तुमसे अपनी शादी का विचार छोड़ दिया। मैंने सोचा कि मैं अब किसी तरह से भी खुश नहीं हो सकता। न तो मैं किसी को प्यार कर सकता हूँ और न ही मुझे कोई सामान्य जीव से प्यार कर सकता है।

जब मैं यह सब कह ही रहा था कि मैंने एक स्त्री को बहादुरी से अपनी तरफ आते हुए देखा। इससे मुझे और ज़्यादा आश्चर्य हुआ कि यह मेरी इतनी भयानक शक्ल से क्यों नहीं डर रही है नहीं तो मेरी इस भयानक शक्ल से तो हर कोई डरता है।

वह बोली — "राजकुमार सूअर अब तुम्हारी खुशी बस पास ही है बस तुम मारथीसी से शादी कर लो। वह भी तुमसे उतना ही प्यार करती है जितना कि तुम उससे करते हो। शादी के बाद तुम जल्दी ही अपनी जंगली सूअर की खाल निकाल दोगे।

अपनी शादी की रात से ही तुम उस खाल को उतार दोगे जिससे तुमको इतनी नफरत है पर ध्यान रहे कि तब तक तुमको उसको दिन निकलने से पहले ही पहन लेना होगा।

और हॉ यह बात अपनी पत्नी को मत बताना। इस बात का पक्का ध्यान रहे कि जब तक समय नहीं आ जाता तब तक उसको इसके बारे में कुछ भी पता न चलने पाये।"

वह आगे बोला — "उसी स्त्री ने मुझे मेरी मॉ के बारे में भी वह सब बताया जो मैंने तुमको अभी बताया। मैंने उसको इस अच्छी खबर देखने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और फिर मैं कुछ खुशी और कुछ दुख की भावनाओं के साथ तुमको ढूँढने चल दिया। यह सब मेरे लिये एक नया अनुभव था।

जब मैंने तुम्हारी दोस्ती का सबूत हासिल कर लिया तब तो मेरी खुशी का ठिकाना ही न रहा। मैं इस भेद को तुमसे जल्दी से जल्दी कह देना चाहता था। मुझको उसे रोकना बहुत मुश्किल पड़ रहा था पर फिर भी मैं उसको उस समय नहीं कह सकता था।

वह परी जो इस बात को जानती थी वही रात को आया करती थी और मुझे इस बात के लिये धमकाया करती थी कि अगर मैंने

इस बात को भेद नहीं रखा तो मुझ पर बदकिस्मती का बहुत बड़ा पहाड़ टूट पड़ेगा।

तब एक दिन मैंने उससे कहा "ओह मैम ऐसा लगता है कि तुमने कभी किसी से प्यार नहीं किया नहीं तो तुम मुझसे उससे कोई चीज़ छिपाने को नहीं कहतीं जिसको मैं इतना प्यार करता हूँ खास कर के ऐसी बात जो इतनी खुशी की बात है।"

वह मेरी इस मजबूरी पर हँसी और मुझसे दुखी न होने के लिये कहा क्योंकि बाद में तो सब ठीक ही हो जाने वाला था।"

राजकुमार आगे बोला — "लाओ अब तुम मेरी वह जंगली सूअर वाली खाल मुझे दे दो। मैं उसको फिर से पहन लूँ कहीं ऐसा न हो कि परियाँ फिर से नाराज हो जायें।"

मारथीसी बोली — ओ मेरे राजकुमार अब चाहे कुछ भी हो जाये पर अब मैं तुमसे कभी भी मुँह नहीं मोड़ूंगी। तुम्हारे रूप बदलने की सुन्दर तस्वीर अब हमेशा मेरी आँखों में रहेगी।"

राजकुमार सूअर बोला — "मुझे भी पूरा यकीन है कि अब परियाँ हमें और नहीं सतायेंगी। यह बिस्तर जिसको तुम पौधों और घास का समझती हो यह पंखों और बहुत ही बढ़िया ऊन का बना हुआ बिस्तर है।

वह फल जो मैं तुम्हारे लिये ले कर आया था जब तुम पहली बार इस गुफा में आयी थीं वे फल भी मुझे परियों ने ही दिये थे।"

मारथीसी इन सब अच्छी चीज़ों के लिये परियों को सैंकड़ों बार धन्यवाद देना नहीं भूली।

जब मारथीसी परियों को धन्यवाद दे रही थी तो राजकुमार सूअर अपनी खाल के अन्दर घुसने की कोशिश कर रहा था पर वह इतनी छोटी हो गयी थी कि उसमें तो उसकी एक टाँग भी नहीं घुस पा रही थी। उसने अपने हाथों से अपने दाँतों से उसको इधर उधर खींचने की कोशिश भी की पर सब बेकार।

उसको लगा कि अब वह फिर से बदकिस्मत हो जायेगा और यह सोच कर वह दुखी हो गया। उसको डर था कि वह तीसरी परी फिर से वहाँ आ जायेगी और उसको एक बार फिर जंगली सूअर में बदल देगी।

दुखी हो कर वह बोला — "ओह मारथीसी तुमने मेरी यह खाल क्यों छिपायी? शायद मेरी यही सजा है कि मैं अब इसे फिर से इस्तेमाल नहीं कर सकता। अगर परियाँ नाराज हो गयीं तो मैं उनको शान्त कैसे करूँगा।" यह सुन कर तो मारथीसी भी रो पड़ी।

कितनी अजीब सी बात थी कि वे दोनों इसलिये रो रहे थे कि राजकुमार सूअर अब अपनी खाल इस्तेमाल नहीं कर सकता था।

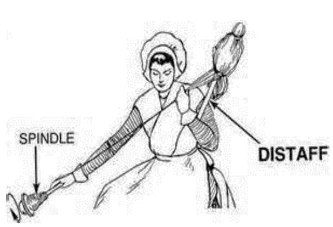

उसी समय वह गुफा हिली और उसकी छत खुल गयी। उन्होंने देखा कि छह अटेरन[49] नीचे गिरीं जिन पर रेशम का धागा लिपटा हुआ था।

[49] Translated for the word "Distaff". See its picture above.

उनमें से तीन अटेरनें सफेद थीं और तीन काली। छहों अटेरनें नीचे उतर कर नाचने लगीं। उनमें से एक आवाज आयी — "अगर राजकुमार सूअर और मारथीसी यह पहचान सकें कि इसमें सफेद और काले का क्या मतलब है तो वे खुशी खुशी रहेंगे।"

राजकुमार ने कुछ सोचा और बोला — "मेरा खयाल है कि तीन सफेद अटेरनों का मतलब है तीन परियाँ जिन्होंने मुझे मेरे जन्म पर भेंटें दीं।"

मारथीसी बोली — "और मुझे लगता है कि तीन काली अटेरनें मेरी दो बहिनें और कौरीडौन हैं।"

उसी समय तीनों सफेद अटेरनें तीन परियाँ बन गयीं और तीन काली अटेरनें मारथीसी की बहिनें इसमीन, ज़ैलोनीड और कौरीडौन बन गये।

दूसरी दुनियाँ से वापसी की इस घटना से कोई भी चीज़ ज़्यादा डरावनी नहीं हो सकती थी। मारथीसी की बहिनों ने कहा — "जितना तुम समझ रही हो अब हम उतनी दूर से भी नहीं आये हैं।

इन परियों ने हमारी खूब अच्छी देखभाल की है जबकि तुम हमारी मौत का मातम मना रही थीं। हम लोग एक किले में ले जाये गये जहाँ तुम्हारे साथ के सिवाय हमें हर तरह का आराम था।"

राजकुमार सूअर चिल्लाया — "क्या। क्या मैंने इसमीन और उसके प्रेमी को मरा हुआ नहीं देखा और ज़ैलोनीड भी क्या मेरे हाथ से नहीं मारी गयी?"

परियाँ बोली — “नहीं। तुम्हारी आँखों पर एक जादू पड़ा हुआ था जिसकी वजह से हम तुमको अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी तरह का धोखा दे सकते थे। ऐसी चीज़ें तो रोज़ ही होती रहती हैं।

यहाँ एक पति सोचता है कि उसकी पत्नी उसके साथ नाच में है पर वह तो अपने बिस्तर में सोयी हुई है। कोई प्रेमी सोचता है कि वह अपनी प्रेमिका के साथ है पर वह तो एक बन्दर की शक्ल में कहीं और है। कोई और सोचता है कि उसने अपने दुश्मन को मार दिया है पर वह तो सुरक्षित रूप से किसी दूसरे देश में रह रहा है।”

राजकुमार सूअर ने कहा — “यह सब सुन कर मेरा तो दिमाग ही घूम गया है। जो कुछ तुम कह रही हो इससे तो ऐसा लगता है कि किसी को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं करना चाहिये।”

परियाँ बोलीं — “नहीं ऐसा भी नहीं है। यह कोई सामान्य नियम नहीं है पर इसको भी नकारा नहीं जा सकता कि बहुत सारी चीज़ों के लिये लोगों को अपना फैसला इसलिये कुछ देर के लिये ताक पर रख देना चाहिये क्योंकि परियों का कहा भी सच हो सकता है।”

राजकुमार सूअर और उसकी पत्नी ने उनको यह सब बताने के लिये और जिनको वे बहुत प्यार करते हैं उनकी ज़िन्दगियों की रक्षा करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

मारथीसी ने उनके पैरों पर गिरते हुए कहा — "पर क्या अब मैं यह उम्मीद रखूँ कि अब आप लोग मेरे पति को यह सूअर की खाल पहनने पर मजबूर नहीं करेंगी?"

परियाँ हँसीं और बोलीं — "नहीं अब तुम यकीन रखो कि अब ऐसा नहीं होगा। अब तुम लोग अपने राज्य जाओ क्योंकि अब तुम्हारा राज्य जाने का समय आ गया है।"

उसी पल वह गुफा एक तम्बू में बदल गयी। वहाँ बहुत सारे नौकर चाकर आ गये जो राजकुमार को राजकुमार की तरह से तैयार करने में लग गये।

उनमें से कुछ दासियाँ भी थीं जो मारथीसी को तैयार करने लगीं। उसको और उसके बालों को सजाने के लिये कोई कसर नहीं छोड़ी गयी थी। उसके बाद उन्होंने परियों का भेजा हुआ बढ़िया खाना खाया।

और इससे ज़्यादा अब उन लोगों के बारे में क्या कहना। दोनों बहुत खुश थे। मारथीसी की इस खुशी के आगे उसने जितना सहा वह तो कुछ भी नहीं था। उसका पति अब एक बहुत ही सुन्दर नौजवान था।

जब उन्होंने खाना खा लिया तो वहाँ बहुत सारी गाड़ियाँ आ गयीं जिनमें बहुत ही बढ़िया किस्म के घोड़े जुते हुए थे। उन गाड़ियों में बैठ कर राजकुमार और मारथीसी महल लौटे।

वे जब दरबार में पहुँचे तो वहाँ उन सबको यह पता ही नहीं चला कि वह शाही सवारी किसकी है और कहाँ से आ रही है। तभी एक नौकर ने यह घोषणा की कि राजकुमार पधार रहे हैं। सारे लोग खुशी में भर कर राजकुमार को लेने के लिये दौड़ पड़े।

सब राजकुमार की सुन्दरता देख कर मोहित से हो रहे थे। उनको जो घटनायें घटी थीं उनकी सच्चाई पर कुछ शक सा हो रहा था क्योंकि वे तो सचमुच में ही बहुत ही असाधारण थीं।

यह खबर राजा और रानी के पास भी गयी तो वे भी खुशी खुशी अपने बेटे से मिलने के लिये वहाँ भागे चले आये। राजकुमार सूअर की शक्ल अपने पिता से इतनी मिलती थी कि ऐसा हो ही नहीं सकता था कि लोग उसको न पहचानें। इसलिये सभी ने उसको राजकुमार की तरह से पहचान लिया।

राज्य में खूब खुशियाँ मनायी गयीं। राज्य में इतनी खुशियाँ पहले कभी नहीं मनायी गयी थीं। कुछ समय बाद राजकुमार के बेटा हुआ तो उसमें सूअर का कोई भी लक्षण नहीं था। वह भी राजकुमार जैसा ही सुन्दर था।

Pig King Like Stories From “The Pig King Like Stories-1”

1. The Pig King
2. The Enchanted Pig
3. King Krin
4. Prince Mercassin

Pig King Like Stories From “The Pig King Like Stories-2”

1. Serpent King
2. The Enchanted Snake
3. Sir Fiorante, The Magician
4. The Snake Prince
5. Snake Chief
6. The Guardian of the Pool
7. The Girl and the Snake
8. The Serpent-Zarevich and His Two Wives
9. The Enchanted Tzarevich
10. Cupid and Psyche
11. The Unseen Bridegroom
12. The Man Who Came Out Only at Night
13. The Frog Prince-1
14. The Frog Prince-2
15. The Enchanted Frog
16. Three Feathers
17. The Mouse With the Long Tail

Pig King Like Stories From “The Pig King Like Stories-3”

1. Beauty and the Beast
2. Zelinda and the Monster
3. A Hut in the Forest
4. The Bear Prince
5. The Brown Bear of Norway
6. East of the Sun and West of the Moon
7. The Black Bull of Norroway
8. The White Wolf
9. The Lame Dog
10. The Daughter of the Skies
11. The Little Green Rabbit
12. The Crab Prince
13. The Hoodie-Crow
14. The Iron Stove
15. The Padlock

Books in “One Story Many Colors” Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Pig King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022